REPORT RESUMES

ED 015 472 48 AL 000 897

INTERMEDIATE HINDI.

BY- NILSSON, USHA S. VERMA, MANINDRA K.
WISCONSIN UNIV., MADISON

REPORT NUMBER BR-5-1288-2 PUB DATE 67
CONTRACT OEC-5-14-050
EDRS PRICE MF-$1.00 HC-$8.20 203P.

DESCRIPTORS- *HINDI, *READING MATERIALS, ORTHOGRAPHIC SYMBOLS, STRUCTURAL ANALYSIS, LITERATURE, NAGARI SCRIPT, DEVANAGARI,

THE 47 READINGS IN THIS TEXT ARE DESIGNED FOR STUDENTS WITH TWO SEMESTERS OF HINDI STUDY AND A KNOWLEDGE OF NAGARI (DEVANAGARI) SCRIPT. AN ATTEMPT WAS MADE TO INCLUDE MATERIAL ON DIFFERENT LEVELS OF PRESENT-DAY HINDI, INCLUDING SUCH SUBJECTS AS FOLKTALES, HUMOR, INDIAN CULTURE, ESSAYS, LETTERS, SPEECHES, TRAVELOGS, AND A FEW FAMOUS SHORT STORIES. THE LESSONS ARE WRITTEN ENTIRELY IN NAGARI SCRIPT AND ARE ARRANGED IN ORDER OF INCREASING DIFFICULTY WITH THE FIRST 12 LESSONS FORMING A BRIDGE BETWEEN READINGS IN ELEMENTARY HINDI AND MORE SOPHISTICATED NARRATIVE PROSE. APPENDED TO THE SELECTIONS ARE SHORT STRUCTURAL NOTES IN ENGLISH WHICH HELP TO EXPLAIN THE MORE DIFFICULT OR UNUSUAL CONSTRUCTIONS. THIS VOLUME AND A GLOSSARY VOLUME ARE ALSO AVAILABLE FOR $7.00 FROM THE COLLEGE PRINTING COMPANY, 453 WEST GILMAN STREET, MADISON, WISCONSIN 53703. (JD)

BR #5-1288

PA 48

OE 5-14-050

INTERMEDIATE HINDI

by

USHA S. NILSSON
Indian Language and Area Center
The University of Wisconsin

ED015472

U.S. DEPARTMENT OF HEALTH, EDUCATION & WELFARE
OFFICE OF EDUCATION

THIS DOCUMENT HAS BEEN REPRODUCED EXACTLY AS RECEIVED FROM THE PERSON OR ORGANIZATION ORIGINATING IT. POINTS OF VIEW OR OPINIONS STATED DO NOT NECESSARILY REPRESENT OFFICIAL OFFICE OF EDUCATION POSITION OR POLICY.

Structural Notes
by
Manindra K. Verma

AL 000 897

INTERMEDIATE HINDI

by

Usha S. Nilsson
Indian Language and Area Center
The University of Wisconsin

Structural Notes
by
Manindra K. Verma

Also available from
COLLEGE PRINTING CO.
453 West Gilman St.
Madison, Wis. 53703
2 vols., 316p. $7.00

with
Ramesh Gaur

The research reported herein was performed pursuant to a contract with the United States Office of Education, Department of Health, Education and Welfare.

1967

Contents

Preface

(१) एक १
(२) दो ३
(३) तीन ५
(४) चार ७
(५) पाँच १०
(६) छ १२
(७) सात १३
(८) आठ १५
(९) नौ १७
(१०) दस १९
(११) ग्यारह २१
(१२) बारह २२
(१३) इंडिया गेट २३
(१४) धोबी और गधा २५
(१५) हवाई क़िले २७
(१६) गौरेया और बन्दर २९
(१७) बाह्मणी और नेवला ३१
(१८) ब्राह्मण और तीन ठग ३४
(१९) समय पर की सूझ ३७
(२०) जातक कथाओं से ३९

(२१) पहला सपना ४२
(२२) दूसरा सपना ४४
(२३) तीसरा सपना ४५
(२४) चौथा सपना ४७
(२५) पाँचवा सपना ४९
(२६) गधा ही : अकबर और बीरबल ५१
(२७) हथेली पर बाल: " " " ५२
(२८) अंधो की फ़ेहरिस्त: " " " ५४
(२९) बीरबल की खिचड़ी: " " " ५७
(३०) दो चीनी यात्री ६१
(३१) राष्ट्रपति भवन ६८
(३२) जामा मस्जिद ७०
(३३) कुतुब मीनार ७५
(३४) जन्तर - मन्तर ७८
(३५) झूठ और झूठ ८१
(३६) सर विलियम जोन्स ने संस्कृत कैसे सीखी ? ८६
(३७) कुछ पत्र : एक ९३
(३८) " " : दो ९४
(३९) " " : तीन ९७
(४०) सच्चा कोष १०२
(४१) शरणागत १०३
(४२) हार की जीत ११६
(४३) प्रायश्चित १२४
(४४) बर्त राम्का : एक शाम १३३

(४५) महात्मा गाँधी के भाषण १३६
(४६) मेरी वसीयत : नेहरु ने कहा १५३
(४७) पूस की रात १६३
Structural Notes i

PREFACE

Intermediate Hindi has been designed for a student who has had two semesters of Hindi study and who knows Nagari script. In this reader an attempt is made to familiarise him with different levels of present day Hindi and for this reason the materials cover a variety of subjects, e.g. folktales, humor, dialogue on Indian architecture and monuments, essays, letters, political speeches, travelogues, glimpses of Indian life and a few famous short stories.

The first twelve lessons have been specially created to serve as a bridge between readings in elementary Hindi and more sophisticated narrative prose. The lessons are also ranged in the order of increasing difficulty, though not at the cost of interest. A student will find that the 'bridge material' reinforces his grammar and also introduces him to more complex structures. Care has been taken to make the transition smooth. A few lessons could be omitted at the discretion of the instructor.

The text provides structural notes and in a companion volume the serial glossary. Experiments showed that the students preferred to have the glossary open side by side with the text. It economises on preparation time by avoiding dictionary thumbing.

I am most grateful to Dr. Nirmala Jain, Dr. Robert Holmes, Professor Richard H. Robinson and Professor Henry C. Hart for their ungrudging help, both in time and advice. My warm appre-

ciation goes to Dr. Manindra K. Verma for his linguistic notes. My thanks are due to the Project Assistants: Mrs. Sheela Verma, Ramesh and Pushpa Gaur, Mrs. Preeti Hajela, and to Mrs. Kalpana Dayal and Mrs. Mary Oliver for preparation of copy, and to Mrs. Norah Adair for generous and effective administrative assistance. I am also indebted to Sri Manmath Nath Gupta, Sri Vrindavan Lal Verma, Sri Sudarshan, Sri Bhagvati Charan Verma and Sri Nirmal Verma for their permission to include their writings. I am particularly grateful to Sri Amrit Rai, Srimati Indira Gandhi and Navjivan Trust for permission to use selections from Premchand, Jawahar Lal Nehru and Mahatma Gandhi. My grateful acknowledgement goes to the United States Office of Education, Department of Health, Education and Welfare for their grant which enabled me to carry out this project. Lastly, I wish to thank my husband Kim G. Nilsson for his constant encouragement.

Usha S. Nilsson
Department of Indian Studies
University of Wisconsin

June, 1967

एक

हम बैलगाडी में बैठ गये[1] ।

बैलगाडी में बैठ कर[2] हम गाँव पहुँचे ।

हमें वह गाँव बहुत पसन्द आया ।

○ ○ ○

मालती नें अपनी बाँसुरी बजाई ।

उसने बाँसुरी पर एक बहुत अच्छी धुन बजाई ।

उसकी धुन सुन कर मैं उसके पास गया ।

○ ○ ○

वह अपने घर गया ।

उसने घर का दरवाज़ा खोला ।

उसने वहाँ बैठ कर गीत गाया ।

उसके साथ हमने भी[3] गीत गाए ।

○ ○ ○

हमारे यहाँ कई विदेशी आए ।

उन विदेशियों ने हमें अपने देश की कहानियाँ सुनाई ।

उनकी कहानियाँ हमें बहुत पसन्द आई ।

○ ○ ○

कल मेरा नौकर नहीं आया ।

मेरा अखबार भी तुम्हारा ही[३] नौकर लाया ।

मैंने अखबार में वह समाचार पढ़ा ।

○ ○ ○

समाचार पढ़ कर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ ।

लेकिन मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ ।

मैं आज तालाब पर गया ।

तालाब में तैरना मुझे अच्छा लगा ।

○ ○ ○

दो

कल हमने नाटक देखा[1] था ।

नाटक की नायिका रेणु थी ।

नायिका की पोशाक बहुत अच्छी थी ।

उससे अच्छी पोशाक मैंने पहले नहीं देखी थी ।

○ ○ ○

वह मेले में गई थी ।

उसने मेले सें एक खिलौना खरीदा था ।

खिलौना रबड़ का था , और उसका बेटा खिलौना पाकर हँसा था ।

○ ○ ○

मेरा परिवार पहले गाँव में था ।

मेरें परिवार में पाँच सदस्य थे , मेरी माँ , मेरे पिता , मेरी पत्नी , और दो बच्चे ।

○ ○ ○

वह संसद का सदस्य था ।

उस समय संसद में तीन सौ सदस्य थे ।

○ ○ ○

मैंनें एक कविता लिखी ।

मालती ने भी एक कविता लिखी थी ।

° ° °

उसने घर में दीपक जलाया था ।

हमने भी दीपावली पर दीपक जलाये थे ।

दीपावली पर हम चित्र भी लाए थे ।

° ° °

माँ ने बैठक में कई चित्र टाँगे थे ।

साधना ने बैठक में नक़शा टाँगा था ।

वह नक़शा मैंने बनाया था ।

° ° °

तालाब में एक बगुला खड़ा था ।

वह अपनी एक टाँग पर खड़ा था ।

उसकी टाँगें बहुत लम्बी नहीं थी ।

° ° °

तीन

तुम कहो[१] तो मैं तुम्हारे साथ विदेश चलूँ[१] ।

आप विदेश जाकर क्या करेंगे ?

मैं वहाँ कुछ पुस्तकें खरीदूँगा ।

तुम चाहो तो मैं तुम्हें अपनी पुस्तकें दे दूँ ।

○ ○ ○

तुम साथ चलो तो नदी के किनारे चलें ।

मैं नदी के किनारे की रेत पर लेटूँगा ।

रेत में लेटने से तुम्हें ठंड लग जाएगी ।

○ ○ ○

आज रात को ठंड पड़े तो मैं कोट पहन लूँ ।

रात होने से पहले ही तुम लौट आओगी ।

उसके लौटने से पहले ही अँधेरा हो जाएगा ।

वह अँधेरे में ही चली आएगी ।

○ ○ ○

कल हमारे यहाँ कुछ अतिथि आएँगे ।

अतिथि तो कल शायद हमारे यहाँ भी आएँ ।

लेकिन मैं तो घर में अकेला रहूँगा ।

अगर अकेले रहोगे तो ऊब जाओगे ।

तुम आजाओ तो मै नहीं ऊबूँगा ।

तो मैं आऊँ[१] ?

○ ○ ○

तुम्हें पुरस्कार मिले तो मैं भी आऊँ ।

पुरस्कार तो आप को भी मिलेगा ।

○ ○ ○

तुम सुनो तो मैं एक लोक कथा सुनाऊँ ।

तुम किस देश की लोक - कथा सुनाओगे ?

○ ○ ○

तुम कोई चुटकला सुनाओ तो मैं बैठूँ ।

नहीं , मैं चुटकुला नहीं सुनाऊँगा ।

तो मैं भी यहाँ नहीं बैठूँगी ।

○ ○ ○

चार

हम बैलगाड़ी में बैठकर गाँव गए थे ।

वहाँ मटर के कई खेत थे ।

मटर के खेतों में चिड़ियाँ चहचहा रही थीं ।

हमें देखकर चहचहाती चिड़ियाँ उड़ गईं ।

○ ○ ○

रेणु नारियल के पेड़ के नीचे बैठ गई ।

हम दोनों ने नारियल का पानी पिया ।

अखिल से वह पानी नहीं पिया गया[१] ।

○ ○ ○

हमारे यहाँ आज एक परदेसी मुसाफिर आया है ।

मुझे परदेसी मुसाफिर अच्छे लगते हैं ।

वह आज रात को हमें कहानियाँ सुनाएगा ।

उन कहानियों में परियों की कहानियाँ भी होंगी ।

मैं बचपन में अपनी माँ से परियों की कहानियाँ सुना करती थी[२] ।

○ ○ ○

दरवाज़ा खोलो तो मैं तुम्हारा घर देखूं।

तुम्हारे घर में तो बड़ा अँधेरा है।

माचिस दो तो मैं दीपक जला दूँ।

मेरे पास माचिस नहीं है।

o o o

उससे सुराही नहीं उठाई गई।

सुराही में पानी भरा हुआ था।

तुम कहो तो पत्र में यह समाचार भी लिख दूँ।

मैं उसे पहले ही पत्र लिख चुका हूँ[३]।

o o o

मुझसे नायिका का अभिनय नहीं किया जाएगा।

तुम कहो तो मालती से नायिका का अभिनय करने को[४] कहूँ।

o o o

उसे आज पुरस्कार में क्या मिला?

शायद कुछ पुस्तकें मिली हैं।

o o o

मुझसे उसकी हालत देखकर चुप नहीं रहा गया।

अच्छा, अब तो चुप रहो।

लड़की से आज गीत नहीं गाया गया ।

मैं भी आज बाँसुरी नहीं बजा पाया[५] ।

सारी रात वही कविताएँ सुनाता रहा[६] ।

o o o

तुम मेले से लाये खिलौने दिखाओ तो मैं तुम्हारी बैठक में चलूँ ।

पहले तुम अपने चित्र और नक्शे दिखाओ ।

o o o

दीवाली पर तुम आओ तो मैं मिठाइयाँ बनाऊँ ।

नहीं , मैं मिठाइयाँ नहीं खाऊँगा ।

o o o

उस दिन परिवार के सभी सदस्य घर में थे ।

घर में कुछ अतिथि भी आए हुए थे ।

राजीव बाँसुरी पर एक मीठी सी धुन बजा रहा था ।

o o o

मैं अकेला तालाब के किनारे पर लेटा हुआ था ।

वहाँ एक मोर नाच रहा था ।

मुझे देखकर मोर उड़ गया ।

मैं भी अपने घर लौट आया ।

पाँच

दौड़ता हुआ घोड़ा[१] गिर पड़ा ।

घोड़े पर बैठी हुई लड़की भी गिर पड़ी ।

पास से जाते हुए राही ने उसे उठा लिया ।

○ ○ ○

लौटता हुआ राही कुएँ पर रुक गया था ।

उसने कुएँ पर रक्खा हुआ पानी पीया ।

○ ○ ○

मैंने खिला हुआ गुलाब तोड़ लिया ।

तुम्हें खिला हुआ गुलाब नहीं तोड़ना चाहिए था ।

○ ○ ○

गोदाम में रखा गेहूँ खराब हो गया ।

सीले हुए गोदाम में तुमने गेहूँ रखा ही क्यों था ।

○ ○ ○

धोए हुए कपड़े अभी सीले थे ।

वह धोए हुए कपड़े पहने हुए था ।

○ ○ ○

खुला हुआ दरवाज़ा बन्द हो गया ।

उसमें रखा हुआ दीपक बुझ गया ।

बुझा हुआ दीपक कौन ले गया ?

○ ○ ○

मुसाफ़िरों से भरा हुआ जहाज़ डूब गया ।

डूबे हुए जहाज़ के सभी मुसाफ़िर बच गए ।

बचे हुए लोगों ने उत्सव मनाया ।

किनारे पर बैठे हुए लोग भी उत्सव में आए थे ।

○ ○ ○

नाचती हुई लड़की हँस रही थी ।

हँसती हुई लड़की मुझे अच्छी लगी थी ।

○ ○ ○

छ

माँ के जाते ही बच्चा रो पड़ा
उसके रोते ही वह लौट आई ।
माँ के आते ही वह हँस पड़ा ।

○ ○ ○

तुम्हारे कहते ही मुझे छुट्टी मिल जाएगी ।
छुट्टी मिलते ही मैं गाँव चला जाऊँगा ।
याद रखो तुम्हारे लौटते ही मैं दावत दूँगा ।
हाँ , मैं लौटते ही तुम्हें दावत दूँगा ।

○ ○ ○

उसके मंच पर आते ही चारों ओर तालियाँ बजने लगीं ।
तालियाँ बजते ही मंच की बत्तियाँ जला दी गईं ।
बत्तियाँ जलते ही सब चुप हो गए ।

○ ○ ○

फूल खिलते ही मुरझा गया ।
फूल के मुरझाते ही उसे माली ने तोड़ लिया ।

सुबह होते ही वहाँ माली आ जाता था ।

* * *

वह तालाब में कूदते ही तैरने लगी ।

उसके कूदते ही दूसरी लड़कियाँ भी कूद पड़ीं ।

उसके किनारे पर पहुँचते ही मैं चली आई ।

* * *

शाम होते ही घरों में दीपक जलने लगे ।

शाम होते ही चिड़ियाँ भी अपने घोंसलों में लौट आईं ।

चिड़ियों के घोंसलों में आते ही उनके बच्चे चहचहा उठे ।

* * *

सात

वह जुए में अपना सब कुछ खो चुका है[1] ।
जुए से पहले उसे शराब बर्बाद कर चुकी थी ।

○ ○ ○

मैं खाना खा चुका हूँ ।
मोहन अगले साल अपनी पढाई खत्म कर चुकेगा ।
मेरे सुबह उठने तक माँ पूजा कर चुकती हैं ।

○ ○ ○

चोर चोरी करके जा चुका था ।
जाँच - पडताल करने के लिए पुलिस आ चुकी थी ।
जाँच - पडताल के बाद चोरों का पता लगने लगा[2] ।

○ ○ ○

वह अधिवेशन के बीच में ही सोने लगा[2] था ।
माधुरी उसे अधिवेशन के बीच में से उठाने लगी ।
इसी बीच सभापति बोलने लगे ।
दूसरे सदस्य सभापति से पहले ही बोल चुके थे ।

आठ

सब लोग मंच पर चुपचाप बैठे हुए थे ।

तभी न जाने क्या हुआ कि सब उठ खड़े हुए ।

ऐसा तो नहीं होना चाहिए था ।

○ ○ ○

कल न जाने क्या होगा ।

होगा क्या , सब लोग नाटक देखने जाएँगे ।

अगर नाटक न हुआ तो ?

○ ○ ○

कुछ लोग अपने ही देश के दुश्मन हो जाते[२] हैं ।

मगर बाद में उनका बड़ा बुरा हाल होता है ।

○ ○ ○

ऐसा न हो कि आप कल आएँ ही नहीं ।

नहीं , अगर मैं कल शहर में हुआ तो ज़रूर आऊँगा ।

हमारे परिवार के लोगों को आपसे मिलकर बड़ी खुशी होगी ।

○ ○ ○

कुछ ऐसा काम करो जिससे तुम्हारा नाम हो ।

मन में उत्साह हो , तो सब कुछ हो सकता है ।

○ ○ ○

नौ

वह एक के बाद एक गीत सुनाता[१] रहा ।

हम लोग खडे - खडे[२] सुनते रहे ।

आप लोग तो आपस में झगड रहे थे ।

○ ○ ○

ऐसा भी होता है कि मैं पढता रहता हूँ और वह सोती रहती है ।

हाँ , वह कल भी सोती रही ।

वह मेरे घर दो घन्टे बैठा रहा । पर मैं सिर दर्द के कारण चारपाई पर पडा रहा । मैं दूसरे दिन भी सोया रहा ।

○ ○ ○

मालती कल तुम्हारी कहानियाँ सुना रही थी ।

लेकिन तुम क्या कर रहे थे ?

मैं क्या करता , तुम्हारी कहानियाँ सुनता रहा ।

○ ○ ○

वर्षा ऐसे ही होती रही तो मैं नहीं आ पाऊँगा ।

वर्षा क्या कल शाम तक होती रहेगी ?

अगर होती रही तो ?

पुराने ज़माने में बात - बात पर लड़ाइयाँ होती रहती थीं ।

लड़ाइयाँ तो आजकल भी होती रहती हैं ।

○ ○ ○

आँखे कमज़ोर होने पर भी वह पढ़ता गया[३] ।

मैरे मना करने पर भी वह बच्चे मिठाई खाते गए ।

वर्षा न होने के कारण पेड़ पौधे धीरे धीरे सूखते गये । कड़ी मेहनत के बाद भी उनके व्यापार में घाटा होता गया ।

उसकी ऊटपटाँग बातें सुनकर मेरा धीरज जाता[४] रहा ।

आप और करते भी क्या , कोई उपाय ही नहीं रह गया था ।

वह मिल गई तो मेरा गुस्सा जाता रहा ।

○ ○ ○

दस

आप खाना खा के उससे बात कर लीजिए ।

वह मेरी बात तो हँसकर[१] टाल जाता है ।

आप ज़ोर देकर पूछेंगे तो ज़रूर बता देगा ।

○ ○ ○

मैं जाकर उसके पास बैठ गया ।

वह अभी सोकर उठा था ।

उसने हाथ ऊपर करके अँगड़ाई ली ।

○ ○ ○

आप हमारे यहाँ आकर भी मुझसे नहीं मिलते हैं ।

तुम्हारे टहल कर लौटने से पहले ही मैं चला आता हूँ ।

कल मैं टहल कर जल्दी लौट आऊँगा ।

○ ○ ○

खिड़की बंद करके परदे गिरा दीजिए ।

मौसम बहुत अच्छा है , बाहर चलकर[२] बैठिए ।

मैं कमरा साफ़ करके ऊपर आऊँगी ।

○ ○ ○

वह आज भी गंदे कपड़े पहन कर[३] आया था ।

उसका धोबी कपड़े लेकर[४] नहीं आया होगा ।

जाकर उससे कह दो कि कल साफ़ कपड़े पहनकर आए ।

○ ○ ○

ग्यारह

मैं आज डाकखाने नहीं जा पाया[१] क्योंकि पानी बरस रहा था ।

अगर कल भी बरसता रहा तो मैं शायद पार्सल न भेज पाऊँ ।

मेरा छोटा बच्चा कडवी दवा नहीं पी पाता है ।

दफ्तर के काम में फँसे रहने के कारण चपरासी घर का काम नहीं कर पाएगा ।

इतना भारी बोझ वह दुबला पतला आदमी नहीं उठा पा रहा था ।

○ ○ ○

नीता के बहुत गिड़गिडाने पर माँ ने उसे सिनेमा जाने दिया[२] ।

पर वह रात को देर से आई क्योंकि उसकी मित्र मालती ने उसे जल्दी नहीं लौटने दिया ।

वह बिना नाश्ता किये नहीं आने देंगे ।

वह कभी नहीं आने देते हैं ।

○ ○ ○

बारह

मेरी बात सुनकर वह क्रोध से फट पड़ा[१] ।

मैंने अपनी सारी चाभियाँ नौकर को दे रखी[२] हैं ।

राधा एकाएक रो उठी[३] ।

उस पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा है ।

उसका सारा सामान चोरी हो गया[४] ।

चोरों ने दरवाज़े का ताला तोड़ डाला[५] था ।

वह अगले हफ्ते बम्बई से लौट आयेगा ।

○ ○ ○

नारायण सड़क पर गिर पड़ा ।

मेरा बटुआ रास्ते में कहीं गिर गया है ।

पहले आप अपने जूतों पर पालिश कर लीजिये[६], ज़रा मेरे भी जूतों पर पालिश कर दीजिये[६] ।

○ ○ ○

तेरह

इंडिया गेट

इंडिया गेट नई दिल्ली में राष्ट्रपति भवन और पुराने क़िले के बीच बना हुआ है। राष्ट्रपति भवन इससे लगभग एक मील पश्चिम में है और पुराना क़िला लगभग एक मील पूर्व में। इसकी आधार - शिला ड्यूक आफ़ कनॉट ने रखी थी। यह आधार शिला १० फ़रवरी , सन् १९२१ को रखी गई थी।

इंडिया गेट की ऊँचाई १३० फ़ीट है। यह गेट हलके गुलाबी रंग के पत्थरों से बना हुआ है। यह गेट शहीदों का स्मारक है। इस स्मारक के पत्थरों पर प्रथम विश्वयुद में शहीद हुए सैनिकों के नाम खुदे हुए हैं। इसके चारों ओर घास के बड़े - बड़े मैदान हैं। दो मैदानों में दो फव्वारे बने हुए हैं। रात को इन फव्वारों में बत्तियाँ जला दी जाती हैं। इसके सामने पूर्व की ओर जॉर्ज पंचम की मूर्ति बनी है। यह मूर्ति सफ़ेद पत्थर की है। इसका मुह पश्चिम में इंडिया गेट और राष्ट्रपति भवन की ओर है।

हल्के गुलाबी रंग के पत्थरों का यह गेट हमें प्रथम विश्वयुद्ध में शहीद हुए सैनिकों की याद दिलाता है। शाम को यहाँ का दृश्य

बहुत ही अच्छा होता है ।

० ० ०

चौदह

१

धोबी और गधा

किसी शहर में एक धोबी रहता था । वह बहुत ग़रीब था । उसके पास बस , एक ही गधा था । वह भी भर पेट घास न मिलने से[1] बहुत कमज़ोर हो गया था । एक दिन धोबी जंगल से जा रहा था , कि तभी उसने एक मरा हुआ बाघ देखा । उसे देख कर वह बहुत खुश हुआ। उसने सोचा , मैं अपने गधे को इस बाघ की खाल उढ़ा दूँगा । और फिर रात को जौ के खेत में छोड़ दूँगा । रखवाले इसे बाघ समझकर खेत से भाग जाएँगे और यह आराम से जौ चरकर अपना पेट भर लेगा ।

उसने ऐसा ही किया । रातभर गधा खेतों में चरता रहता था । सुबह होने से कुछ समय पहले धोबी उसे अपने घर ले आता[2]।

इस तरह कई दिन बीत गए । वह काफ़ी मोटा हो गया । एक दिन वह किसी दूसरे गधे को रेंकते सुनकर जोर से स्वयं भी रेंकने लगा । उसको रेंकता देखकर रखवालों ने तत्काल पहचान लिया कि यह तो गधा है , बाघ नहीं । बाघ की तो इसने सिर्फ़ खाल ओढ़ रखी है । वे लाठियाँ ,

पत्थर और भाले लेकर उस पर टूट पड़े , और उन्होंने उसे मार डाला ।

○ ○ ○

पन्द्रह

२

हवाई किले

एक समय की बात है कि एक शहर में कृपण नामक एक ब्राह्मण रहता था। वह भीख माँग कर अपना पेट भरता था। भीख के सत्तू में से उसके खाने के बाद[1] जो बच रहता, उसे वह एक मटके में रख देता। इस तरह कुछ ही दिन[2] में वह मटका सत्तू से भर गया। उसने वह मटका एक खूँटी पर टाँग दिया। रात को वह अपनी चारपाई मटके के ठीक नीचे बिछाता और एकटक उसे देखता रहता।

एक रात को वह चारपाई पर पड़ा - पड़ा[3] सोचने लगा - जब देश में अकाल पड़ेगा तो मैं इस सत्तू को बेच कर सौ रुपए कमाऊँगा। उन रुपयों से कुछ बकरियाँ खरीदूँगा। कुछ दिन बाद वे बकरियों को जन्म देंगी। इस तरह कुछ दिन में मेरे पास बहुत सी बकरियाँ हो जाएँगी। उन बकरियों को बेच कर गायें, भैंसें और घोड़ियाँ खरीद लूँगा। उनके भी बच्चे होंगे। उन्हें बेचने से बहुत सा सोना मिलेगा। सोने से मैं एक चौमंजिला मकान बनवाऊँगा, उसके बाद कोई - न - कोई

ब्राह्मण अपनी जवान और ख़ूबसूरत बेटी की शादी मेरे साथ कर देगा। मेरी पत्नी एक पुत्र को जन्म देगी। मैं उसका नाम सोमशर्मा रखूँगा। मैं तब आराम से बैठा हुआ पुस्तकें पढ़ा करूँगा। जब कभी वह लड़का अपने घुटनों के बल रेंगता हुआ मेरे पास आएगा तो मैं उसकी माँ को अवाज़ देकर उसे पकड़ लेने को कहूँगा। लेकिन वह अपने काम में जुटी रहने के कारण मेरी बात नहीं सुन पाएगी। इस पर उठ कर मैं उसे यों एक लात मारूँगा। यह सोचते हुए उसने ज़ोर से लात मारी। उसकी लात सत्तू के मटके में लगी और मटका फूट गया। और सारा सत्तू उसके ऊपर आ पड़ा।

* * *

सोलह

३

गौरैया और बंदर

किसी[1] जंगल में एक पेड़ की डाल पर घोंसला बनाकर गौरैया का एक जोड़ा रहता था। एक बार गौरैया का जोड़ा अपने घोंसले में बैठा हुआ था, कि तभी ज़ोर से वर्षा होने लगी। थोड़ी ही देर बाद उन्होंने देखा कि वर्षा में भीगता हुआ एक बन्दर उसी पेड़ के नीचे आ बैठा है। वह ठण्ड से बुरी तरह काँप रहा था। उसकी ऐसी हालत देखकर दयालु गौरैया बोली, "अरे तू तो हाथ पाँव वाला है। दिखता[2] भी बिलकुल आदमियों जैसा ही है। फिर तू अपना घर बनाकर क्यों नहीं रहता? इस समय तेरा अपना घर होता तो तुझे यों न भीगना पड़ता।"

यह सुनते ही बन्दर को बड़ा क्रोध आया और वह चीख़कर बोला "तुझे इससे मतलब? इस गौरैया की हिम्मत तो देखो मुझे उपदेश देने चली है[3]।"

गौरैया ने कहा, "अरे मूर्ख मैं तो तेरी ही भलाई की बात कह रही हूँ।"

बन्दर और भी अधिक क्रोधित होकर बोला ,"तुझे मेरी चिन्ता करने की क्या ज़रूरत है ? मैं अगर तुझसे कुछ पूछता तो तेरा उपदेश देना भी ठीक था । लेकिन तू तो यों ही बकवास किए जा रही है ।" यह कहता हुआ बन्दर पेड़ के ऊपर चढ़ गया और उसने गौरैया के घोंसले का तिनका तिनका बिखेर दिया ।

* * *

सत्रह

४

ब्राह्मणी और नेवला

किसी शहर में एक ब्राह्मण रहता था। एक बार जिस दिन उसकी पत्नी ने एक लड़के को जन्म दिया उसी दिन एक नेवली ने भी एक बच्चे को जन्म दिया। लेकिन वह बच्चे को जन्म देते ही मर गई। उस दयालु ब्राह्मणी ने नेवली के बच्चे को भी अपने पास रख लिया। वह उसके शरीर की मालिश करती, उसे दूध पिलाती और सभी तरह से उसकी देखभाल करती थी। फिर भी वह उस पर विश्वास नहीं कर पाती थी। उसे हमेशा यही डर लगा रहता था, कि अपने पशु स्वभाव के कारण कहीं वह उसके बच्चे को हानि न पहुँचाए।

एक दिन जब वह पानी लाने के लिये तालाब पर जाने लगी तो उसने अपने पति से कहा, "मैं पानी लाने तालाब पर जा रही हूँ। यहीं ठहर कर बच्चे की देख - भाल करते रहियेगा।" और वह चली गई।

उसके जाने के थोड़ी देर बाद ब्राह्मण ने सोचा, नेवले और बच्चे में मित्रता है, वह बच्चे को हानि नहीं पहुँचायेगा। और इस लिए बच्चे

को सोता हुआ छोड़कर वह भी कहीं चला गया ।

इसी बीच जिस वृक्ष की छाया में बच्चा सोया था उसमें कहीं से एक काला साँप आ गया । नेवले ने जब साँप को आते देखा तो वह अपने मालिक के बेटे को बचाने के लिये उस पर टूट पड़ा । कुछ देर दोनों में ज़ोर की लड़ाई होती रही । अन्त में नेवला स्वयं घायल होते हुए भी साँप को मारने में सफल हो गया । मरे हुए साँप के टुकड़े वहीं पड़े छोड़ कर वह अपने साहस की कहानी को सुनाने के लिये ब्राह्मणी से मिलने चल पड़ा । ब्राह्मणी उसे तालाब की ओर से आती मिल गई । उसने जब नेवले के मुँह पर ख़ून लगा देखा तो उसने सोचा कि हो - न - हो इस दुष्ट नेवले ने मेरे बेटे की हत्या कर दी है । यह सोच कर ब्राह्मणी ने क्रोध से पानी का घड़ा नेवले के ऊपर पटक दिया । बेचारा नेवला घड़े की चोट खाकर वहीं मर गया ।

इसके बाद वह रोती कलपती उस वृक्ष के पास पहुँची । वहीं उसने अपने बेटे को आराम से सोते हुए पाया और पास ही मरे हुए साँप के कुछ टुकड़े पड़े देखे । वह तत्काल सब कुछ समझ गई और नेवले के लिये रोने लगी । तभी ब्राह्मण भी लौट आया । जब उसे इस घटना का पता लगा तो वह भी बहुत दुखी हुआ । ब्राह्मणी अपने किया

सोचे - समझे किए हुए काम पर[२] बहुत दुखी हो रही थी। नेवले का मरना उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसका कोई आत्मीय मर गया हो ।

० ० ०

अठारह

५

ब्राह्मण और तीन ठग

एक बार एक ब्राह्मण अपने यजमान के यहाँ से यज्ञ - पशु की भिक्षा लेकर लौट रहा था। रास्ते में बकरा इधर - उधर दौड़ने लगा। इस डर से कि कहीं यह बकरा भाग न जाय ब्राह्मण ने उसे अपने कंधों पर रख लिया और जल्दी - जल्दी अपने घर को चल पड़ा।

जब तीन ठगों ने उसे मोटा - तगड़ा बकरा ले जाते हुए देखा तो उनके मुँह में पानी भर आया। वे उसे हथियाने के उपाय सोचने लगे। अन्त में उन्होंने कुछ फ़ैसला किया और वहाँ से चल दिए।

थोड़ी दूर जाने पर ब्राह्मण को पहला ठग मिला। उसने ब्राह्मण को देखते ही कहा, "हे मूर्ख ब्राह्मण, तू अपने कंधों पर कुत्ते को क्यों लादे लिए जा रहा है? ऐसा करने से तो सभी लोग तुझे मूर्ख समझेंगे और तेरी हँसी उड़ाएँगे।"

इस पर ब्राह्मण ने क्रोध से कहा, "अरे तू अंधा तो नहीं है जो

बकरे को कुत्ता बता रहा है ।" यह सुनकर ठग ने उत्तर दिया ,"महाराज, आप क्रोध न कीजिए । जैसा आपको अच्छा लगे वही कीजिए ।" और यह कह कर एक ओर को चला गया ।

ब्राह्मण जंगल में अभी कुछ ही आगे और पहुँचा था कि उसे दूसरा ठग मिला । ठग ने ठीक उसके सामने खड़े होकर कहा ,"हे ब्राह्मण ! हो सकता है कि यह मरा हुआ बछड़ा आपको बहुत प्यारा हो , लेकिन फिर भी उसे कंधे पर नहीं रखना चाहिए । ऐसा करना शास्त्र के विपरीत है ।"

उसकी बात सुनकर ब्राह्मण को बड़ा गुस्सा आया । उसने ठग को फटकारते हुए कहा ,"अरे क्या तू अन्धा है , जो बकरे को मरा हुआ बछड़ा कह रहा है ? ठग ने कहा ,"महाराज,आप क्रोध न कीजिए । मैंने अज्ञान से ऐसा कहा है । जैसा आपको अच्छा लगे वही कीजिए ।"

जब वह और कुछ आगे पहुँचा तो तीसरा ठग उसके सामने आकर कहने लगा ,"अरे तू यह क्या कर रहा है ? अरे मूर्ख,तू ब्राह्मण होकर गधे को कंधों पर रखे हुए है । क्या तू यह नहीं जानता है कि गधे को छूना भी पाप है ? अरे जल्दी कर । इससे पहले कि कोई व्यक्ति तुझे गधे को ले चलते देखे , तू इसे छोड़ दे ।"

यह सुनकर ब्राह्मण ने सोचा कि हो - न - हो कुछ गड़बड़

ज़रूर है जो एक आदमी इस बकरे को कुत्ता बता रहा था, दूसरा मरा हुआ बछड़ा, और यह इसे गधा बता रहा है। यह विचार आते ही उसने बकरे को छोड़ दिया और अपने घर को चल दिया।

तीनों ठगों ने उस बकरे को पकड़ लिया और फिर उसे मारकर खा गए।

* * *

उन्नीस

समय पर की सूझ

रात का समय था, अँधेरा फैल गया था। एक चोर चोरी करने अपने घर से निकला। वह एक गली में पहुँचा। वहाँ उसने एक बड़ा मकान देखा। उसने सोचा कि यह किसी अमीर का घर है, ज़रूर ही मुझे बहुत धन मिलेगा। चोर चुपके से उस मकान में घुस गया।

वह एक साहूकार का घर था, साहूकार और उसकी पत्नी दोनों सो रहे थे। जब चोर के चलने की आहट हुई तो साहूकार जाग उठा। उसकी पत्नी भी जागी,दोनों बहुत डर गए, घर में नौकर-चाकर कोई नहीं था।

साहूकार चालाक था, उसे एक उपाय सूझ गया। उसने अपनी पत्नी से पूछा,"मैं कल रुपयों की थैली लाया था, उसको तुमने कहाँ रखा ?"

साहूकार की पत्नी भी होशियार थी। वह साहूकार के इस सवाल का मतलब समझ गई। उसने जवाब दिया,"कोठरी के अंदर उस पुरानी आलमारी में है।"

चोर ने उन दोनों की बात सुनी। वह बहुत खुश हुआ। उसने समझा कि इन लोगों ने मुझे नहीं देखा और रुपयों की थैली कहाँ रखी है इसका भी पता चल गया। वह धीरे से कोठरी के अंदर गया। उसने जल्दी से अलमारी को खोला और अंदर हाथ डाला।

अलमारी पुरानी थी। उसके अंदर शहद की मक्खियों ने छत्ता बना रखा था। चोर का हाथ उस पर पड़ा तो छत्ता हिला। मक्खियाँ छत्ते से निकल पड़ीं, वे गुस्से में आकर चोर के हाथ और मुँह पर डंक मारने लगीं। वह दर्द से तड़पने लगा और बड़े ज़ोर से चिल्लाया, "हाय रे मरा, हाय रे मरा।"

चोर का चिल्लाना सुनकर पड़ोस के लोग भी आ पहुँचे और उसको पकड़कर थाने में ले गए।

o o o

बीस

जातक कथाओं से

एक बार कोशल के राजा ने एक ही रात में सोलह सपने देखे । जाग कर वह बहुत घबराया और सोचने लगा कि न जाने इन सपनों का फल क्या होगा ? सुबह उठते ही उसने राजपुरोहित को बुलवाया । राजपुरोहित ने उसके सपनों के बारे में सुना और सपनों का फल बताने वाले कई ज्योतिषियों को भी बुला लिया । उन्होंने भी राजा के सपनों को सुना और उन पर विचार किया । काफ़ी देर तक आपस में विचार करने के बाद उन सबने राजा से कहा ।

“महाराज,यह सभी सपने बुरे हैं । आप पर तीन तरह की विपत्तियाँ आ सकती हैं, आपके राज्य पर, आपके प्राणों पर और आपके धन पर ।” राजा ने उनका बुरा फल टालने का उपाय पूछा । पंडितों ने कहा“महाराज, दान धर्म करने से ही इन सपनो के बुरे फल से आप बच सकते हैं । नगर में जहाँ जहाँ चौराहे हैं, वहाँ वहाँ यज्ञ कराएँ, पशुओं की बलि दें और अन्न धन के भंडार खोल दें । ब्राह्मणों को मुँह माँगा दान दें ।”

राजा तो डरा था ही । उसने उन्हें ऐसा ही करने की आज्ञा दे दी । पंडितों ने यज्ञ का सारा सामान इकट्ठा कर लिया, पर फिर भी वे बार बार राजा के पास आकर कुछ न कुछ माँगते रहे । रानी मल्लिका को पुरोहितों के कहने पर विश्वास नहीं था । वह ताड़ गई कि यह सभी पंडित लोभी और लालची हैं, यह सपनों का बुरा फल बताकर दान पुण्य के बहाने अपना काम बनाना चाहते हैं ।

वह राजा के पास गई और बोली "राजन ! यह पंडित बार बार आपके पास क्यों आ रहे हैं ? "

" रानी मल्लिका," कोशल के राजा ने कहा "मुझे तुम्हारे अज्ञान पर ईर्ष्या होती है । रात मैंने सोलह सपने देखे हैं, यह पंडित उनका बुरा फल टालने के लिये उपाय कर रहे हैं ।"

तब रानी ने कहा, "मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूँ । नगर के बाहर एक बड़े सिद्ध महात्मा रहते हैं । आप उनके पास जाइए और उनसे अपने सपनों का फल पूछिए ।"

रानी मल्लिका की यह बात राजा को जँच गई और वह उन सिद्ध पुरुष के पास गया । उसने हाथ जोड़ कर नमस्कार किया और खड़ा रहा । जब महात्मा ने उसके आने का कारण पूछा तो राजा ने कहा "महात्मन्, मैंने

सुबह के पहले पहर कई सपने देखे । उनसे मैं इतना डर गया कि मैंने पंडितों को बुलाकर फल पूछा । पंडितों की राय है कि यज्ञ और दान पुण्य करने से मुझ पर आने वाली विपत्तियाँ हट जाएँगी । मैं आपसे विनय करता हूँ, भगवन् आप जो कि मनुष्यों और देवताओं के संसार में सबसे महान हैं, जिन्हें भूत, वर्तमान और भविष्य का ज्ञान है, कृपा कर के मुझे इन सपनों का फल बताएँ ।"

यह कोई साधारण महात्मा न थे, यह भगवान बुद्ध थे, ज्ञान से उनकी बुद्धि निर्मल थी । उन्होंने राजा को धीरज बँधाते हुए कहा "यह सच है कि मेरे सिवा कोई और आपको इन सपनों का फल बताने में समर्थ नहीं है । आप अपना एक-एक सपना मुझे सुनाते जाइए और मैं आपको उसका फल बताता जाऊँगा ।"

यह सुनकर राजा की जान में जान आई ।

○ ○ ○

छब्बीस

पहला सपना

कोशल के राजा ने कहा —— "तथागत, पहला सपना मुझे सुबह होने से कुछ देर पहले दिखाई दिया था । मैंने देखा कि चार मोटे तगड़े काजल की तरह काले साँड़ चारों दिशाओं से राजमहल के आँगन में आ गए हैं। ऐसा जान पड़ता था कि अभी - अभी लड़ पड़ेंगे । बाहर - भीतर के कितने ही लोग उनकी लड़ाई देखने के लिए इकट्ठे हो गए । लेकिन उनमें लड़ाई नहीं हुई । वे एक - दूसरे को घूरते और एक - दूसरे की ओर गरजते हुए कुछ देर यों ही मचलते रहे । फिर जो जिस दिशा से आया था, उसी दिशा को लौट गया । महात्मा जी, यह मेरा पहला सपना है ।"

भगवान बुद्ध ने मन - ही - मन कुछ देर इस सपने पर विचार किया । फिर बोले —— "इसमें तो कोई शक नहीं कि इस सपने का फल अच्छा नहीं है । लेकिन इसका बुरा फल न आपको, न मुझे देखना पड़ेगा। इसलिये आपको डरने - घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है । आज से कई सौ साल बाद इस सपने का बुरा फल सामने आएगा ।"

थोड़ा रुककर उन्होंने आगे कहना शुरू किया ----"आगे आने वाले समय में जब राजा और प्रजा धर्म को छोड़कर पाप का रास्ता पकड़ेंगे तो सब जगह सूखा पड़ेगा। वर्षा नहीं होगी। वर्षा न होने से अन्न नहीं होगा। लोग भूखों मरने लगेंगे। उस समय चारों दिशाओं से काले-काले बादल मँडराते हुए आएँगे। उनकी गड़गड़ाहट सुनकर ऐसा लगेगा कि जैसे वे बरसने ही वाले हैं। ज़ोर की बिजलियाँ कड़केंगी। दिन में भी रात जैसा अँधेरा छा जाएगा। अब वर्षा होगी, यह समझकर लोग मन-ही-मन खुश होंगे। वे आँखें उठा-उठाकर बादलों की तरफ देखेंगे। लेकिन वर्षा नहीं होगी। गरजते बादल बिना बरसे ही छँट जाएँगे। जैसे साँड बिना लड़े लौट गए वैसे ही बादल भी बिना एक बूँद बरसाए जिधर से आएँगे उधर ही लौट जाएँगे। पर आपको घबराने की ज़रूरत नहीं है ? यह सब आपके रहते नहीं होगा। अब आप अपना दूसरा सपना सुनाइये।"

° ° °

बाईस

दूसरा सपना

राजा ने अपना दूसरा सपना सुनाना शुरु किया -- "महात्मन्, दूसरे सपने में मैंने क्या देखा कि गायों ने जिन बछड़ों को उसी दिन जन्म दिया था, उन्हीं का वे दूध पी रही हैं। कैसी अनहोनी बात है। इस सपने का क्या फल होगा महात्मा जी ?"

महात्मा बोले --" इस सपने का अर्थ है कि भविष्य में संतान अपने माता-पिता का आदर नहीं करेगी। संतान अपने माता-पिता को अपने ऊपर बोझ समझेगी। माता-पिता बूढ़े होने पर रोटी के लिए भी बच्चों का मुँह ताकेंगे। पर यह सब अभी जल्दी होने वाला नहीं है। इसकी आप चिन्ता न करें।

तेईस

तीसरा सपना

राजा ने आगे कहा -- "महाराज, मेरा तीसरा सपना इस प्रकार है -

मैंने एक तालाब देखा । उसमें पाँच तरह के कमल खिले हुए थे। हर ओर दोपाए और चौपाए जीव उसमें पानी पी रहे थे । उस तालाब के पानी में विचित्र बात यह थी कि बीच के हिस्से का पानी तो गन्दा था और किनारों का पानी साफ़ था । कृपया मुझे बताइये कि इस सपने का क्या मतलब है ।"

"इसका मतलब यह है," महात्मा ने समझाते हुए कहा, "बहुत समय बाद राजा लोग अपनी प्रजा के साथ मनमानी करेंगे । वे अपनी मौज-मस्ती में डूबे रहेंगे । वे प्रजा की रक्षा नहीं कर सकेंगे । न्याय भी ठीक-ठीक नहीं होगा । हाँ, प्रजा से कर खूब लिया करेंगे । इस अन्याय से दुखी होकर प्रजा राज के बीच वाले हिस्से में नहीं रहेगी । वह राजधानी से दूर, राज की सीमा के पास जा बसेगी । ऐसा करने से राजा का अमला प्रजा के पास कम पहुँच पाएगा और वह सुखपूर्वक रहेगी ।"

थोड़ा रुककर महात्मा जी बोले --"लेकिन यह सब अभी बहुत समय बाद होगा। इसलिए आपको घबराने की ज़रूरत नहीं है।"

○ ○ ○

चौबीस

चौथा सपना

जब तथागत ने राजा से चौथा सपना सुनाने को कहा तो राजा ने कहना आरंभ किया --

"महाश्रमण्, चौथे सपने में मैंने एक ही बर्तन में तीन तरह के चावल पकते हुए देखे हैं -- कुछ तो लौंदे की तरह थे, कुछ कड़े और अधपके, और कुछ अच्छी तरह पके हुए,इस सपने का क्या फल होगा ?"

भगवान बुद्ध ने उत्तर दिया --

"सुनो राजन् । भविष्य में जब कभी राजा और उनके पुरोहित,उनकी प्रजा, गृहस्थ,नगर वासी और गाँव वाले शुद्ध विचारों के न रहेंगे तो उनके पाप के कारण प्रकृति के नियम भी एक से न रहेंगे । देश में सब जगह एक सी वर्षा नहीं होगी । कहीं तो वर्षा न होने से खेती नष्ट हो जाएगी और कहीं ज़्यादा वर्षा होने के कारण बाढ़ में फ़सलें बह जाएँगी । केवल कहीं-कहीं ही ठीक वर्षा होने से खेती ठीक होगी । इस प्रकार लोग अकाल से दुख पाएँगे और बरसात से भी । कुछ ही भाग्यवान लोग ऐसे होंगे

जो इस कष्ट से बच सकेंगे ।

लेकिन यह संकट-काल आपके जीवन में नहीं आएगा । इसलिए आप इसकी चिन्ता न कीजिए । हाँ, अब आप मुझे अपना पाँचवाँ सपना सुनाइये ।"

○ ○ ○

पच्चीस

पाँचवाँ सपना

अब राजा ने अपना पाँचवाँ सपना सुनाना शुरु किया ।

" भगवन्, मैंने देखा कि बहुत छोटे - छोटे मेंढक बड़े - बड़े काले साँपों का पीछा कर रहे हैं । वे मेंढक बहुत ही छोटे थे, फिर भी मेंढकों ने उन साँपों के कमल नाल की तरह खंड खंड कर दिए । इसके बाद वे उन साँपों को खा गए ।

भगवन्, बताइए कि इस सपने का क्या अर्थ है और इसका क्या फल होगा ?"

महात्मा जी ने सपने के बारे में बताना शुरु किया --

"राजन्, इस सपने का अर्थ है कि एक समय आएगा, जब घर और बाहर के सभी कामों पर स्त्रियाँ कब्ज़ा कर लेंगी । पुरुष उनके हाथों की कठपुतली भर रह जाएँगे । स्त्रियाँ उन्हें मनमाने ढंग से नचाएँगी । सब जगह पुरुष की हस्ती घर के नौकर जैसी होगी । स्त्रियों का राज होगा ।

लेकिन यह सब अभी नहीं होगा । इसलिए आप धीरज रखें और

किसी तरह की चिन्ता न करें।"

○ ○ ○

छब्बीस

अकबर और बीरबल

गधा ही

एक बार बादशाह अकबर और राजा बीरबल कहीं जा रहे थे। रास्ते में बादशाह ने देखा कि एक तम्बाकू के खेत में एक गधा चर रहा है। लेकिन वह तम्बाकू के पत्ते न खाकर इधर उधर की घास चर रहा है।

राजा बीरबल तम्बाकू खाते थे। इसलिए बादशाह ने बीरबल पर व्यंग्य करते हुए बादशाह ने कहा, "देखो बीरबल, तम्बाकू ऐसी चीज़ है जिसे गधा भी नहीं खाता है।"

बादशाह तम्बाकू नहीं खाते थे। बीरबल ने व्यंग्य का अर्थ समझते हुए कहा, "जी हाँ, गधा ही तम्बाकू नहीं खाता है।"

बादशाह बीरबल का जवाब सुन झेंप गए।

○ ○ ○

सताईस

हथेली पर बाल

बादशाह अकबर राजा बीरबल से कभी-कभी बड़े विचित्र सवाल पूछ बैठते थे। एक दिन जब कि दरबार लगा हुआ था उन्होंने एक ऐसा ही विचित्र सवाल पूछा। बोले, "बीरबल, यह तो बताओ कि मेरी हथेली पर बाल क्यों नहीं हैं ?"

बीरबल ने जवाब दिया, "जहाँपनाह, चूँकि आप हर समय दान देते रहते हैं, इसीलिए आपकी हथेली पर बाल नहीं उगते हैं।"

बादशाह इस जवाब से बहुत खुश हुए, लेकिन थोड़ी देर तक कुछ सोचते रहने के बाद उन्होंने कहा," लेकिन बीरबल, बाल तो तुम्हारी हथेली पर भी नहीं हैं। इसका क्या कारण है ?"

बीरबल ने तत्काल उत्तर दिया, "हुज़ूर, आप दान देते हैं और मैं हाथ बढ़ाकर वह दान लेता हूँ। आपसे दान लेते रहने के कारण मेरी हथेली पर भी बाल नहीं उग पाते हैं।"

बादशाह और भी खुश हुए, लेकिन थोड़ी देर तक कुछ सोचते रहने

के बाद उन्होंने फिर पूछा, "लेकिन, बीरबल, बाल तो हमारे दरबारियों की हथेलियों पर भी नहीं है। इसका क्या कारण है?"

बीरबल ने छूटते ही जवाब दिया, "जहाँपनाह, बात यह है कि आप दान देते हैं और मैं दान लेता हूँ। यही देखकर ये दरबारी हाथ मलते रहते हैं। इसी से इनकी हथेलियों पर बाल नहीं उग पाते हैं। जो थोड़े-बहुत पहले होंगे भी, वे भी हाथ मलते-मलते अब तक घिस चुके हैं।"

यह जवाब सुनकर बादशाह हँसने लगे।

○ ○ ○

अठाईस

अंधों की फ़ेहरिस्त

एक बार बादशाह अकबर ने बीरबल से अंधों की फ़ेहरिस्त तैयार करने को कहा। बीरबल ने सोचा कि यह अच्छी मुसीबत आ पड़ी। घर-घर जाकर अंधों की फ़ेहरिस्त बनाना अपने आपमें एक अच्छी-खासी मुसीबत थी। इसलिए उन्होंने टालने के विचार से कह दिया, "जहाँपनाह, मुझे तो लगभग सभी अन्धे दिखाई देते हैं। फ़ेहरिस्त क्या बनाई जाए।"

बादशाह बिगड़े, "तुम्हारे मन में जो भी उलटा-सीधा आता है, बक देते हो। यहाँ अच्छे-भले लोग बैठे हैं और तुम सबको अंधा बता रहे हो।"

बीरबल ने बादशाह की बात का कोई उत्तर न दिया और थोड़ी देर बाद दरबार से उठकर अपने घर चले गए। घर पहुँचकर उन्होंने थोड़ी सी मूँज मँगवाई और उसे लेकर अपने दरवाज़े पर रस्सी बटने बैठ गए। थोड़ी देर बाद उधर से मिर्ज़ा दो प्याज़ा गुज़रे। उन्होंने बीरबल को रस्सी बटते देख कर पूछा, "कहिए राजा साहब क्या कर रहे हैं?" बीरबल

ने कोई जवाब नहीं दिया। हाँ, पास में रखा एक कागज़ उठाया, उस पर कुछ लिखा और फिर उसे उसकी जगह पर रख कर फिर से रस्सी बटने में लग गए।

इसके बाद एक-एक कर सारे दरबारी उधर से गुज़रे और सभी ने यही सवाल पूछा, "राजासाहब, आप यहाँ बैठे हुए यह क्या कर रहे हैं?" लेकिन बीरबल ने किसी का उत्तर न दिया। हाँ, जब भी कोई प्रश्न करता, वह पास में रखे कागज़ को उठाते, उस पर कुछ लिखते, उसे वहीं रखते और फिर से रस्सी बटने लग जाते।

थोड़ी देर बाद स्वयं बादशाह भी उधर से गुज़रे। उन्होंने भी यही प्रश्न किया, "यह क्या कर रहे हो बीरबल?"

प्रश्न सुनते ही बीरबल ने कागज़ उठाया उस पर कुछ लिखा और फिर वह कागज़ बादशाह के हाथ में थमा दिया। बादशाह ने देखा कि उसमें सबसे ऊपर मिर्ज़ा दो प्याज़ा का नाम लिखा है फिर सारे दरबारियों के नाम हैं। और अंत में स्वयं बादशाह का नाम लिखा है। हैरान होकर उन्होंने पूछा, "यह क्या है?" बीरबल ने जवाब दिया, "अंधों की फ़ेहरिस्त।"

"क्या मतलब?" बादशाह ने झुँझलाकर पूछा।

"जहाँपनाह", बीरबल ने कहा, "मैं यहाँ बैठा मूँज की रस्सी बट

रहा था। लेकिन, यहाँ से जो भी गुज़रा, उसने यही सवाल किया -- बीरबल क्या कर रहे हो ? अब आप ही बताइए कि अगर वे अंधे न होते तो क्या मुझे रस्सी बटता देख न लेते ?" बादशाह झेंपकर आगे बढ़ गए।

○ ○ ○

उन्तीस

बीरबल की खिचड़ी

एक बार बादशाह अकबर ने घोषणा करवाई कि जो आदमी सर्दियों की रात में तालाब में खड़ा रहेगा उसे एक हज़ार अशर्फ़ियाँ पुरस्कार में दी जाएँगी। सभी लोगों ने घोषणा सुनी, लेकिन यह काम करने की हिम्मत किसी की नहीं हुई। भला सर्दियों की रात में पानी में कौन खड़ा होता और वह भी सारी रात। लेकिन एक बेचारे गरीब ब्राह्मण को अपनी लड़की की शादी करनी थी, जिसके लिए उसे पैसे की सख्त ज़रुरत थी। इसलिए उसने घोषणा सुनते ही सीधे दरबार की राह पकड़ी।

दरबार में आकर उसने कहा, "हुज़ूर, मैं सारी रात तालाब में खड़ा होने को तैयार हूँ।" ब्राह्मण को रात को तालाब में खड़ा कर दिया गया। बेचारा ब्राह्मण इसी आशा में कि सुबह होते ही उसे अशर्फ़ियाँ मिल जाएँगी और फिर वह अपनी बेटी की शादी धूमधाम से कर देगा, पानी में खड़ा रहा। ठंड से अपना ध्यान बटाने के लिए वह महल की खिड़की में जलते दीपक की

ओर देखता रहा था। जैसे-तैसे कर उसने पूरी रात काट दी और सुबह होते ही दरबार में पहुँच गया।

जब उसने अपना पुरस्कार माँगा तो बादशाह ने अपने पहरेदारों से पूछा, "क्या यह ब्राह्मण ठीक कह रहा है कि वह सारी रात तालाब में खड़ा रहा था ?"

पहरेदारों के यह बताने पर कि वह ठीक कह रहा है, बादशाह ने ब्राह्मण से पूछा, "तुम्हारा पुरस्कार तो तुम्हें अभी दे दिया जाएगा, लेकिन यह तो बताओ कि तुम सारी रात तालाब में खड़े कैसे रहे ?"

"जहाँपनाह," ब्राह्मण बोला, "मैं अपना ध्यान आपके महल की खिड़की पर जलते हुए दीपक पर लगाए रहा था। इसलिए मुझे ठंड का पता ही नहीं चला और सारी रात बीत गई।"

"अच्छा, तो तुम हमारे महल की खिड़की पर जलते दीपक से गर्मी लेते रहे थे। जब तुमने गर्मी ले-लेकर रात काटी है तो, फिर पुरस्कार किस बात का ?" और यह कह कर बादशाह ने उसे बिना पुरस्कार दिए ही दरबार से लौटा दिया।

बेचारा ग़रीब ब्राह्मण रोता-कलपता राजा बीरबल के पास पहुँचा

और उसे अपनी करुण कहानी जा सुनाई।

बीरबल समझ गये कि बादशाह अशर्फियाँ देना नहीं चाहते हैं। थोडी देर तो वह कुछ सोचते रहे, फिर ब्राह्मण से बोले, "तुम जाओ, तुम्हें कल तुम्हारा पुरस्कार मिल जाएगा।"

अगली सुबह बीरबल ने एक ऊँचे से बाँस पर एक पतीली लटका दी और नीचे ज़मीन पर धीमी-धीमी आग जला दी।

उधर जब बीरबल दरबार में नहीं पहुँचे तो बादशाह ने एक सिपाही उन्हें बुलाने भेजा। सिपाही ने बीरबल से कहा, "राजासाहब, बादशाह आप को याद कर रहे हैं।

बीरबल ने कहा, "तुम चलो। बादशाह सलामत से कह देना कि मैं खिचडी पका रहा हूँ। पकते ही खाकर दरबार में पहुँच जाऊँगा।" सिपाही ने बादशाह से जाकर यही कह दिया। लेकिन जब काफ़ी देर बाद भी बीरबल नहीं आए तो राजा ने दूसरा सिपाही भेजा। उस सिपाही से भी बीरबल ने यही कहा, "तुम चलो। बादशाह सलामत से कह देना कि मैं खिचडी पका रहा हूँ। पकते ही खाकर दरबार में पहुँच जाऊँगा।"

इसी प्रकार राजा ने एक के बाद दूसरा सिपाही बीरबल के पास

भेजा। लेकिन सभी से बीरबल ने यही कह दिया, "तुम चलो। बादशाह सलामत से कह देना कि मैं खिचड़ी पका रहा हूँ। पकते ही खाकर दरबार में पहुँच जाऊँगा।"

लेकिन जब शाम होने तक भी बीरबल दरबार में नहीं पहुँचे तो बादशाह स्वयं उनके घर की ओर चल पड़े। वहाँ पहुँच कर देखते क्या हैं कि एक काफ़ी ऊँचे बाँस पर एक पतीली लटकी है और बीरबल बैठे हुए नीचे आग जला रहे हैं। यह देखकर उन्होंने पूछा, "यह क्या कर रहे है बीरबल ?"

" जहाँपनाह, खिचड़ी पका रहा हूँ।" बीरबल ने कहा।

" अरे, तुम पागल तो नहीं हुए हो ?" बादशाह बोले, "कहीं इतनी दूर की आँच से खिचड़ी पक सकती है ? ऐसे तो पतीली तक गर्मी भी नहीं पहुँचेगी।"

" हुज़ूर जब एक दीपक से तालाब में खड़े आदमी तक गर्मी पहुँच सकती है तो नीचे जलती हुई आग की गर्मी पतीली तक भला क्यों नहीं पहुँचेगी ?"

बादशाह तत्काल सारी बात समझ गए। उन्होंने तभी ब्राह्मण को बुलाया। उससे माफ़ी माँगी और एक हजार अशर्फियाँ देकर उसे विदा किया। बीरबल की खिचड़ी पक गई थी।

○ ○ ○

तीस

दो चीनी यात्री

श्री मन्मथनाथ गुप्त

चीन हमारा पडोसी देश है । चीन ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया, तब स्वाभाविक रुप से वहाँ के धार्मिक नेता बौद्ध पुस्तकों की खोज में भारत आये, और उन्होंने लौटकर जो कुछ लिखा वह भारतीय इतिहास के लिए बड़े महत्व की वस्तु है । भारतीयों में इतिहास लिखने की परिपाटी कम थी, इस कारण इन वर्णनों से उस समय कैसी राज्य-पद्धति थी, लोगों के विचार तथा रहन-सहन कैसे थे, इसे जानने में बडी सहायता मिली है । दो सबसे प्रसिद्ध चीनी यात्री हो गए हैं-- फ़ाहियान और ह्यूनसांग । फ़ाहियान चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय में, और ह्यूनसांग हर्षवर्धन के समय में भारत में आये थे ।

फाहियान

फाहियान अपने घर चांगआन से, जिसे आजकल सियानफ कहते हैं भारत के लिए रवाना हुए । यह ३९९ ई० यानी आज से साढे पन्द्रह सौ वर्ष पहले की बात है । आज जो कोई चीन से आता है, उसके लिए तो रास्ता साफ है । वह चीन के किसी बन्दरगाह से जहाज द्वारा सिंगापुर होता हुआ

किसी भी भारतीय बन्दरगाह में आ सकता है । इसके अतिरिक्त हवाई जहाज में बैठकर थोडे समय में हांगकांग, सिंगापुर, रंगून होता हुआ कलकत्ता पहुँच सकता है ।

फाहियान ने सारे मध्य एशिया की पैदल यात्रा की, और वे छ साल में भारत पहुँचे । उनके साथ उनके पाँच और मित्र थे । इनमें से दो रास्ते में मर गए और दो रास्ते की कठिनाइयों से घबडाकर वापस चले गए। इस प्रकार दो ही मित्र, यानी फाहियान और उनके एक मित्र ही भारत पहुँचे। इन दो में से तो एक तो भारत में ही बस गया और अपने देश को वापस नहीं लौटा । फाहियान ही ऐसे निकले जिन्होंने अपनी यात्रा के सारे उद्देश्यों को छः साल में पूरा करके घर का रास्ता लिया ।

फाहियान ने भारत में रहकर संस्कृत सीखी । उन्होंने बौद्ध धर्म के सम्बन्ध में अच्छा ज्ञान प्राप्त किया । जब वे देश लौटे तो चीनी भाषा में पुस्तक उन्होंने लिखी, उसी से हम फाहियान तथा उस समय के भारत के विषय में बहुत कुछ जान पाते हैं । सबसे मज़े की बात यह है कि फाहियान ने अपनी यात्रा का जो वर्णन लिखा, उसमें यहाँ के राजा चन्द्रगुप्त या अन्य किसी भी जीवित राजा का उल्लेख नहीं किया । इसकी उन्होंने जरुरत ही नहीं समझी । वे तो यहाँ की संस्कृति और साहित्य के विषय में जानने के लिए

आये थे। यहाँ कैसी सरकार थी तथा यहाँ के लोग कैसे थे -- इस सम्बन्ध में उन्होंने बहुत कुछ लिखा है।

उन्होंने लिखा है कि यहाँ के लोग खुशहाल और सुखी थे। उन्हें इस बात पर बहुत आश्चर्य हुआ कि उनके देश में आम लोगों पर जिस तरह के बन्धन थे, यहाँ भारत में उनका पूर्ण रुप से अभाव था। उन्होंने यह भी लिखा कि यहाँ कर कम थे। जो लोग राजा की जमीन जोतते थे, उन्हें अपनी आय में से एक अंश देना पड़ता था। किसान आनन्द में थे। लोगों के साथ न्याय किया जाता था। दोनों पक्षों को सुनने का तरीक़ा था। बहुत कम मामलों में शारीरिक सज़ा दी जाती थी। अपराधों के अनुसार लोगों पर जुर्माने किये जाते थे। यदि कोई व्यक्ति राजद्रोह भी करता तो उसे मामूली सज़ा दी जाती थी। पर यदि कोई बार-बार राजद्रोह करता था तो उसका दाहिना हाथ काट लिया जाता था।

यदि फाहियान की बात मानी जाय तो उस समय भारत में कोई माँसाहारी नहीं था। यहाँ तक कि लोग प्याज़, लहसन भी नहीं खाते थे और न कोई शराब पीता था।

बौद्ध धर्म का बड़ा ज़ोर था। सर्वत्र बौद्ध मठ बने हुए थे, जहाँ हज़ारों की संख्या में भिक्षु रहते थे। बौद्धों और ब्राह्मणों में कोई झगड़ा

नहीं था, और दोनों एक-दूसरे के उत्सवों में शरीक होते थे। विदेशी होने के कारण किसी ने फाहियान के साथ किसी प्रकार का बुरा सलूक नहीं किया, बल्कि वे जहाँ भी गए, उनका स्वागत हुआ।

फाहियान ने मगध के निवासियों को बहुत दान देते हुए पाया। उन्होंने वहाँ मुफ्त इलाज करने के लिए अस्पताल देखे। यहाँ पर यह बात भी बता दी जाय कि यूरोप में पहला निःशुल्क अस्पताल इसके पाँच सौ वर्ष बाद स्थापित हुआ। जानवरों के लिए भी अस्पताल थे। राहगीरों के लिए सरायें बनी हुई थीं। जब वे पाटलिपुत्र पहुँचे, तो उस समय तक अशोक महान् का राजमहल ज्यों का त्यों मौजूद था। इस राजमहल को देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ, क्योंकि वह बड़े-बड़े पत्थरों से बना हुआ था तथा उसमें तरह-तरह के काम थे। फाहियान इस महल को देखकर इतने आश्चर्य में पड़ गए कि उन्होंने लिखा है कि यह महल मनुष्यों द्वारा नहीं बनाया हुआ हो सकता है। उन्हें यह देखकर दुःख हुआ कि भगवान् बुद्ध का जन्म-स्थान कपिलवस्तु जंगल बन चुका है और गया जहाँ पर बोधि-वृक्ष है वीरान-सा था।

पाटलिपुत्र में फाहियान को जो धर्म-ग्रन्थ चाहिए थे, वे मिले। इस प्रकार वे छः साल तक भ्रमण करने के बाद बंगाल के ताम्रलिप्ति नामक

बन्दरगाह से सिंहल (लंका) पहुँचे । वहाँ दो साल रहने के बाद वे समुद्र की गड़बड़ियों के कारण बहुत दिनों तक भटकते - भटकते ४१४ ई० में चीन पहुँच गये ।

फाहियान के सवा दो सौ साल बाद ह्यूनसांग या यू - आन्चांग भारत में बौद्ध धर्म का अध्ययन करने आये । वे ६२९ ई० में चीन से चले । उस समय उनकी उम्र २६ साल की थी, और वे उसी उम्र में एक विद्वान् के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुके थे । वे भी घूमकर मध्य एशिया के रास्ते से भारत में आये । जब वे कश्मीर पहुँचे, और कश्मीर के राजा को उनके आने का पता चला तो सडकों पर फूलों और सुगन्ध का छिड़काव किया गया । यहीं पर ह्यूनसांग ने संस्कृत का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया और साथ ही साथ शास्त्रों का भी अध्ययन किया । जब कश्मीर के राजा को यह ज्ञात हुआ कि वे यहाँ के संस्कृत ग्रन्थों की नकल साथ ले जाना चाहते हैं, तो उन्होने ह्यूनसांग को बीस पंडित दिये और कहा कि इनसे आप नक़ल कराने का काम लीजिए ।

कश्मीर में अपना काम समाप्त करने के बाद वे भारत में पूर्व की ओर बदे । नालन्दा विश्वविद्यालय में उनका स्वागत हुआ और वे पाँच साल तक नालन्दा में रहे । राजा हर्ष ने उन्हें बार - बार बुलाकर उनके मुख से धर्म की बातें सुननी चाहीं, पर वे उस समय गम्भीर अध्ययन में लगे हुए थे,

इसलिए उन्होंने नम्रता के साथ इस निमन्त्रण को अस्वीकार किया। कामरूप के राजा कुमार की तरफ से भी इसी प्रकार का एक निमन्त्रण आया पर उन्होंने उसे भी अस्वीकार किया। जब तीसरी बार निमन्त्रण आया तो उसके साथ धमकी भी थी कि यदि वे नहीं गये तो उन्हें राजा कुमार अपनी फ़ौज भेज कर पकड़वा[२] ले जायेंगे। इस पर नालन्दा विश्वविद्यालय के शीलभद्र ने उन्हें सलाह दी कि वे कामरूप जायें।

जब हर्ष को पता लगा कि उनके अधीन कुमार ने इस प्रकार उन्हें ज़बर्दस्ती बुलवाया है, तब उन्होंने हुक्म दिया कि फौरन चीनी यात्री को मेरे पास भेज दो। इस पर कुमार ने कहा कि वह अपना सिर दे सकता है, पर अपने अतिथि को नहीं भेज सकता। तब सम्राट् हर्ष की ओर से आज्ञा हुई कि सिर ही भेज दो। तब कुमार को अक्ल आई और उसने ह्यूनसांग को जाने दिया और घोड़ा, हाथी, फौज आदि लेकर उनके पीछे-पीछे चला। ह्यूनसांग को इतना सम्मान दिया गया कि उनके सभापतित्व में धर्म-विषयक सभा हुई।

ह्यूनसांग सारे भारत में घूमे, और जहाँ भी गये, वहाँ के लोगों से बहुत खुश रहे। उन्होंने यहाँ लोगों को खुशहाल और सुखी पाया, पर उनके सम्बन्ध में जो ब्यौरे मिलते हैं, उनसे ऐसा मालूम होता है कि

उन दिनों भारत में धार्मिक झगडे बहुत बढ रहे थे। बौद्ध धर्म की दो शाखाएँ हीनयान और महायान आपस में लड रही थीं। बाद को इन्हीं झगडों के कारण देश कमज़ोर हो गया और परतन्त्र हो गया।

ह्यूनसांग ६४५ ई० में वापस लौटे। हर्ष ने बहुत चेष्टा की कि उन्हें रोकें, पर वे जिस काम के लिए आये थे, उसे पूरा करके भारत से विदा हुए। वे अपने साथ ६५७ संस्कृत पुस्तकें ले गये। बार-बार हर्ष और कुमार ने उनसे विदा माँगी, और घोडे दौडा-दौडाकर पीछे से उनसे जाकर मिले। एक विद्वान् के लिए यह सम्मान उचित ही था।

○ ○ ○

इकतीस

राष्ट्रपति - भवन

दिनेश -- आज आपका क्या कार्यक्रम है ?

मार्शा -- मेरा इरादा आज राष्ट्रपति भवन देखने का है । मालती, क्या तुम हमारे साथ नहीं चलोगी ?

मालती -- मैं तो कई बार देख चुकी हूँ । लेकिन अगर तुम कहोगी तो मैं भी चली चलूँगी ।

दिनेश -- तो फिर जल्दी से तैयार हो जाओ ।

मार्शा -- वह जो सामने गुम्बद दिखाई दे रहा है, वह राष्ट्रपति - भवन ही है न? ?

मालती -- हाँ, लेकिन तुम्हें यह कैसे पता चला ? तुम यहाँ पहले तो कभी नहीं आई हो ।

मार्शा -- यहाँ तो नहीं आई हूँ, लेकिन मैंने इसके चित्र तो देखे ही हैं ।

दिनेश -- मार्शा जी, आप तो सारा भारत घूमकर आई हैं । क्या ऐसा गुम्बद आपने और भी कहीं देखा है ?

मार्शा -- हाँ, इस गुम्बद को देखकर मुझे साँची का स्तूप याद आ रहा है। इस गुम्बद की बनावट उस स्तूप के जैसी ही है।

मालती -- आपको कुछ पता है यह राष्ट्रपति भवन कब बनाया गया था ?

दिनेश -- हाँ, सन् १९११ में जब दिल्ली को दोबारा भारत की राजधानी बनाया गया तो वाइसरॉय के रहने के लिए एक भवन बनाने की योजना बनाई गई थी। यह वही वायसरॉय-भवन है जो आजकल राष्ट्रपति भवन कहलाता है।

मार्शा -- इसकी रूपरेखा भी तो किसी विदेशी ने ही बनाई थी न। मुझे इस समय उसका नाम याद नहीं आ रहा है। क्या नाम था उसका -- ?

दिनेश -- उसका नाम सर एडविन लिचिन्स था। यह भवन उसी की देन है।

मालती -- लेकिन इसमें तो भारतीय वास्तुकला के भी चिन्ह दिखाई देते हैं -- जैसे यह गुम्बद ही --

दिनेश -- तुम ठीक कहती हो। लेकिन इन चिन्हों के मिलने का कारण यह नहीं है कि लिचिन्स भारतीय वास्तुकला या भारतीय शैलियों को पसंद करता था। सचबात तो यह है कि भारत की जलवायु ने उसे विवश कर दिया था कि वह भारतीय उपकरणों को इस्तेमाल करे तथा

भारतीय वास्तुकला के नियमों का पालन करें। यहाँ की कड़ी धूप, सूखी सर्दी और भारी वर्षा से भवनों की रक्षा करने के लिए यह एकदम ज़रूरी था।

मार्शा -- इसमें कुल कितने कमरे होंगे ? और लागत कितनी लगी होगी ?

मालती -- इसमें कुल ३४० कमरे हैं। जहाँ तक लागत का प्रश्न है, उस समय इस पर १० करोड़ रुपए से भी अधिक व्यय हुए थे। आज के हिसाब से यह रक़म १ अरब रुपये से भी अधिक बैठेगी।

दिनेश -- देखिए मार्शा जी, यह दरबार हॉल है। इसी के ऊपर वह गोल गुम्बद है। इसके चारों कोनों पर चार बड़े-बड़े कमरे बने हैं।

मार्शा -- ये कमरे किसलिए बनाए गए हैं ?

दिनेश -- इनमें नृत्य-कक्ष, भोजन-कक्ष, और बैठक आदि हैं।

मार्शा -- इस भवन के साथ एक उद्यान भी तो है, जिसे शायद राष्ट्रपति उद्यान ---

दिनेश -- हाँ, उद्यान तो है, लेकिन उसका नाम राष्ट्रपतिउद्यान नहीं, मुग़ल गार्डन है। चूँकि यह उद्यान भारतीय शैली पर बना है, इसलिए इसे मुग़ल गार्डन ही कहा जाता है।

मार्शा -- क्या हम उसे भी देख सकते हैं ?

मालती -- हाँ, हाँ, क्यों नहीं ? आजकल वह आम जनता के लिए खुला हुआ है ?

मार्शा -- मतलब ?

मालती -- यह गार्डन सारे वर्ष जनता के लिए नहीं खुला रहता है । सिर्फ़ एक महीने तक जनता के लिए खोल दिया जाता है ।

मार्शा -- आओ, तो फिर उधर ही चलें ।

० ० ०

बत्तीस

जामा मस्जिद

राजीव -- आओ जीन, आज तुम्हें जामा मस्जिद दिखाते[1] हैं ।

जीन -- इसका निर्माण भी तो लालक़िले के निर्माता शाहजहाँ ने ही करवाया था ?

राजीव -- जी हाँ ।

जीन -- यह कितने दिन में बनकर तैयार हुई थी ?

राजीव -- इसका निर्माण ६ अक्तूबर, सन् १६५० को प्रारम्भ हुआ था । लगभग ५००० राज - मज़दूर और संग - तराश लगभग ६ वर्ष तक इसे बनाते रहे थे । तब जाकर कहीं सन् १६५६ में यह पूरी हो पाई थी ।

रेखा -- फिर तो इस पर व्यय भी काफ़ी हुआ होगा ।

राजीव -- हाँ, उस समय इसके निर्माण पर लगभग १० लाख रुपया व्यय हुआ था। आओ, अब अंदर चलें ।

रेखा -- क्या यही इसका मुख्य द्वार है ?

राजीव -- नहीं, इसका मुख्य द्वार तो वह है जिसका मुँह पूरब की ओर है । इसके तीन द्वार हैं । एक मुख्य द्वार, एक यह और तीसरा ठीक

इसके दूसरी ओर है । जीन, इधर आओ ।

जीन -- जहाँ हम इस समय खड़े हैं, यह जगह किसलिए बनाई गई है ?

राजीव -- यह नमाज़ पढ़ने का दालान है । यह जो सामने वर्गाकार दालान है, जिसमें हौज़ बना है और हौज़ में फव्वारा बना है इसका क्षेत्रफल ४५० वर्ग फ़ीट है ।

रेखा -- देखो जीन, यह मस्जिद नीचे से तो लाल पत्थरों की बनी है, लेकिन लेकिन इसके गुम्बद सफ़ेद पत्थर के हैं ।

जीन -- लेकिन गुम्बद एकदम सफ़ेद तो नहीं दिखाई देते हैं ?

राजीव -- हाँ, उनके बीच-बीच में काले पत्थर की पट्टियाँ बनाई गई हैं । इन तीनों गुम्बदों में इधर उधर के गुम्बद बराबर के हैं । बीच का दोनों से बड़ा है ।

जीन -- इन गुम्बदों के दोनों ओर ये जो लाल और सफ़ेद धारियों की मीनारें खड़ी हैं, इनकी ऊँचाई कितनी होगी ?

राजीव -- इनमें से प्रत्येक मीनार की ऊँचाई १३० फ़ीट है । तुम देख रही हो न, इन मीनारों के ऊपर भी सफ़ेद पत्थर की छतरियाँ बनी हुई हैं । उधर, तीनों दरवाजों के ऊपर भी छोटी-छोटी बुर्जियाँ या स्तूपी बनाई गई हैं । वे संगमरमर की ही हैं । उनमें

काली पट्टियाँ नहीं हैं ।

जीन -- क्या इन अठपहलुआ मीनारों पर चढ़ा जा सकता है ?

रेखा -- ऊपर जाने के लिए इनमें सीढ़ियाँ तो बनी हुई हैं, लेकिन आजकल ऊपर नहीं जाने दिया जाता है ।

राजीव -- लेकिन मस्जिद के चारों कोनों पर पीतल की नोंक लगे ये जो संगमरमर के बुर्ज़ हैं, उन तक जाया[२] जा सकता है । कहो तो ऊपर चलें ।

जीन -- अभी नहीं, पहले हज़रत मुहम्मद के अवशेष देख लें । मैंने कहीं पढ़ा था कि इस मस्जिद में उनके कुछ अवशेष रखे हैं ।

राजीव -- यहाँ पर हज़रत मुहम्मद की चप्पल, उनका बोला हुआ कुरान का एक अध्याय और उनकी दाढ़ी का एक बाल रखा है । आओ, मुख्य इमाम के पास उन्हें देखने को चलें ।

० ० ०

तेंतीस

कुतुब मीनार

कुतुब मीनार भारतीय वास्तुकला का एक अनोखा नमूना है । यह मीनार महरौली नामक गाँव के पास राय पिथौरा के क़िले के खण्डहरों के बीच सिर उठाए खडी है । यह स्थान दिल्ली नगर से ११ मील दक्षिण में[१] है ।

कुतुब मीनार के निर्माता के विषय में लोगों में मतभेद है । कुछ लोगों का मत है कि यह राजपूत राजाओं ने बनवाई थी । इनके मतानुसार इसका निर्माण अंतिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान ने कराया था । कुछ के मतानुसार[२] कुतुबुद्दीन एबक़ ने अज़ाँ देने के लिए इस मीनार का निर्माण करवाया था । लेकिन यह बात सही नहीं जान पडती है ।

ऐसा लगता है कि पृथ्वीराज चौहान ने विजय-स्तंभ के रूप में इसकी एक मंज़िल बनवाई थी । बाद में दास-वंश के संस्थापक कुतुबुद्दीन एबक़ ने सन् ११९९ में इसका पुनर्निर्माण किया था । बाद में कुतुबुद्दीन के दामाद और उत्तराधिकारी शम्सुद्दीन अल्तमश ने सन् १२१० - ३६ में इसके ऊपर की तीन मंज़िलें बनवाई थीं । पाँचवीं मंज़िल का निर्माण फ़ीरोज़ तुग़लक़ ने इसकी मरम्मत कराते समय

सन् १३७० के लगभग किया था। टूटी मंज़िल के रूप में इसके ऊपर एक छतरी भी लगी हुई थी। सन् १८०३ में एक भूचाल से यह छतरी गिर गई। तब सन् १८२८ में अँग्रेजों ने इसकी मरम्मत करवाई और इसके ऊपर एक लोहे की छतरी लगवा दी। लेकिन कुतुब मीनार की वास्तुकला के साथ मेल न खाने के कारण यह छतरी बहुत ही भद्दी लगती थी। इसलिए सन् १८४८ में लॉर्ड हार्डिंग्ज़ ने इस छतरी को उतरवा दिया। यह उतरी हुई छतरी आज भी कुतुब मीनार के पास एक ओर रखी हुई है। इस समय मीनार की चोटी पर एक साधारण सा जंगला बना हुआ है।

कुतुब मीनार की पहली तीन मंज़िलें लाल पत्थर की बनी हुई हैं। यह पत्थर आगरा के पास से लाया गया था। चौथी और पाँचवीं मंज़िलें संगमरमर और लाल पत्थरों की मिलावट से बनी हुई हैं। मीनार की ऊपर की दोनों मंज़िलें बनावट और सामग्री की दृष्टि से शेष भाग से भिन्न हैं। इससे भी यह पता लगता है कि मीनार को कई शासकों के समय में बनाया और पूरा किया गया है।

कुतुब मीनार की ऊँचाई २३८ फ़ीट है। पहली मंज़िल ९६ फ़ीट ऊँची है, दूसरी ५१ फ़ीट, ६ इंच, तीसरी ४१फ़ीट ६ इंच, चौथी २५ फ़ीट कुछ इंच और पाँचवीं २३ फ़ीट कुछ इंच ऊँची है।

आधार पर इस मीनार का व्यास ४९ फ़ीट ३इंच और चोटी पर केवल ९

फ़ीट है । चोटी पर जाने के लिए मीनार के अंदर ३७९ घुमावदार सीढ़ियाँ हैं । मीनार में बाहर को निकले हुए चार छज्जे भी हैं । इन छज्जों से पूरी दिल्ली तथा दूर-दूर के दृश्यों को देखा जा सकता है ।

◦ ◦ ◦

चौंतीस

जन्तर - मन्तर

राकेश -- जन्तर - मन्तर नाम से प्रसिद्ध यह खगोल सम्बन्धी वेधशाला जयपुर के महाराजा जयसिंह सवाई (द्वितीय) ने बनवाई थी । इसका निर्माण सन् १७२४ में हुआ था ।

वीणा -- जयपुर, उज्जैन, मथुरा और बनारस में भी तो ऐसी वेधशालाएँ है । क्या वे भी महाराजा जयसिंह ने ही बनवाई थीं ?

कैथी -- हाँ मुझे बताया गया था कि उनका निर्माण भी महाराजा जयसिंह ने ही करवाया था । लेकिन यह नहीं समझ आता कि उसने इतने बड़े - बड़े यंत्र क्यों बनवाए थे ।,

राकेश -- इसका कारण तो प्रत्येक भारतीय को पता है । बात यह थी कि मुसलमानों द्वारा बनाए गए खगोल - सम्बन्धी यंत्र पीतल आदि धातुओं के थे । लेकिन वे सभी यंत्र दोषपूर्ण थे । इसलिए महाराजा जयसिंह ने ये गारे और चूने - पत्थर के यंत्र बनवाए थे । इतना ही नहीं, उसने स्वयं भी कई यंत्रों का आविष्कार किया था ।

वीणा-- क्या इसका मूल और सही नाम जन्तर - मन्तर ही है ?

राकेश -- नहीं, लोगों का कहना है कि इसका मूल और सही नाम सम्राट यंत्र था । वही नाम अब बिगड़ते - बिगड़ते जन्तर - मन्तर हो गया है ।

कैथी -- लेकिन सम्राट यंत्र तो यह है जहाँ हम इस समय खडे हैं ।

राकेश -- हाँ, इसका भी नाम सम्राट यंत्र है । लेकिन चूँकि यही यंत्र प्रमुख यंत्र है, इसलिए इसी के नाम पर पूरी वेधशाला का नाम रखा गया था ।

वीणा -- इस सम्राट यंत्र से किस चीज़ का पता लगाया जाता है ?

कैथी -- यह सूर्य की गति बताने वाला यंत्र है । इससे समय का पता लगाया जाता है ।

राकेश -- यह जो ६४ फीट ऊँची तिरछी कर्णाकार दीवार है, इसकी छाया दीवार के दोनों ओर बने वृत्त के चतुर्थांशों पर पडती है । दोपहर से पहले सूर्य पूरब में रहता है इसलिए इसकी छाया पश्चिम के वृत्त चतुर्थांश पर पडती है । दोपहर बाद सूर्य पश्चिम में चला जाता है, इसलिए इसकी छाया पूरब के वृत्त चतुर्थांश पर पडती है । यह छाया दोपहर के बारह बजे दीवार के ठीक नीचे आ जाती है । इसी छाया से समय का पता लगाया जाता है ।

वीणा -- और उधर जो गोलाकार दीवारों से घिरे हुए यंत्र हैं, उनके क्या -

क्या नाम हैं ?

राकेश -- उसका नाम राम यंत्र है । साधारण व्यक्ति को तो ये दो अलग-अलग यंत्र जान पड़ते हैं, लेकिन ये एक ही यंत्र के दो भाग हैं ।

केथी -- और वीणा, वह जय प्रकाश यंत्र है । आकाश-मंडल के बारे में जानकारी देता है ।

राकेश -- इनके अतिरिक्त इस वेधशाला में तीन यंत्र और हैं -- मिश्र यंत्र, नियतचक्र यंत्र तथा दक्षिणी वृत्त यंत्र ।

वीणा -- हम लोगों के लिए तो ये सिर्फ़ चूने-गारे की दीवारें हैं ।

राकेश -- इसका कारण यह है कि हम खगोल-विद्या से अपरिचित हैं । वैसे ये यंत्र बहुत ही उपयोगी हैं ।

○ ○ ○

पैंतीस

झूठ और झूठ

१

किसी शहर में एक मियाँ जी रहते थे। उन्हें एक नौकर की ज़रूरत थी। काफ़ी दौड़-धूप करने के बाद आख़िर उन्हें नौकर मिल ही गया। वेतन आदि की बात तय हो जाने के बाद उन्होंने नौकर से कहा, "देखो भाई, एक बात और सुन लो। मुझे झूठ बोलने की आदत है। मैं झूठ बोले बिना रह ही नहीं सकता हूँ।"

"कोई बात नहीं हुज़ूर," नौकर ने कहा, "मुझे कोई एतराज़ नहीं है, आप चाहे जितना झूठ बोलें। लेकिन हाँ, झूठ तो मैं भी बोलता हूँ, लेकिन छः महीने में सिर्फ़ एक बार। इसलिए जब मैं आपके रोज़ रोज़ के झूठ बरदाश्त करूँगा तो आपको भी छः महीने में एक बार मुझे झूठ बोलने की इजाज़त देनी होगी।"

"हाँ, हाँ मुझे कोई एतराज़ नहीं है," मियाँ जी ने कहा।

नौकर ने उनके यहाँ काम करना शुरु कर दिया। मियाँ जी को तो

झूठ बोलने की आदत थी ही, वे बात-बात में झूठ बोलते रहते। इससे नौकर को बड़ी परेशानी होती, लेकिन वह बेचारा कर भी क्या सकता था।

कई महीने बाद मियाँ जी ने परिवार की ख़बर लाने के लिए अपने नौकर को गाँव भेज दिया। मियाँ जी के परिवार में उनकी एक बूढ़ी माँ, पत्नी और एक बच्चा था। इनके अतिरिक्त उनके यहाँ एक घोड़ा और एक कुत्ता भी था। कुत्ता उन्हें सबसे अधिक प्यारा था। इसलिए जब आठ दिन बाद उनका नौकर लौटकर आया तो सबसे पहले उन्होंने अपने कुत्ते के बारे में ही पूछा, "मेरा कुत्ता तो ठीक है न ?"

नौकर ने कहा, "बड़ा अच्छा कुत्ता था, लेकिन बेचारा मर गया।"

"मर गया ? लेकिन कैसे ?" मियाँ जी ने पूछा।

"बेचारे के गले में घोड़े की हड्डी फँस गई थी, बस।" नौकर ने जवाब दिया।

मियाँ जी को बड़ा दुख हुआ, लेकिन किया भी क्या जा सकता था। थोड़ी देर बाद बोले, "मेरा घोड़ा तो अच्छी तरह है न ?"

"अच्छी तरह क्या हुज़ूर, वह तो ईंटें ढोते-ढोते मर गया। उसी की हड्डी तो आपके कुत्ते ---"

"ईंटें किसने ढुलवाई थीं मेरे घोड़े से ?" नौकर की बात को बीच में ही काटकर गुस्से में चीख़ते हुए बोले ।

"हुज़ूर, ज़रूरत ही ऐसी थी । आख़िर कब्र तो बनवानी ही थी । भला क्या आपकी माता जी की कब्र भी न बनती ?" नौकर ने कहा ।

"तो क्या मेरी माता जी भी चल बसीं ?" मियाँ जी ने आह भरते हुए पूछा ।

नौकर ने उसी तरह आह भरते हुए कहा, "भला बेटे की बहू के बिना सास कैसे जीवित रह सकती थी ?"

"क्या ?" मियाँ जी की आँखें फटी की फटी रह गईं । "तो क्या मेरी पत्नी कहीं भाग गई ?"

"अरे साहब, भागें आपके दुश्मनों की पत्नियाँ, वह क्यों भागती ? वह बेचारी तो पुत्र का दुख न सह सकीं -- और स्वयं भी चल बसीं ।"

यह सुनकर तो जैसे मियाँ जी पर पहाड़ ही टूट पड़ा । पूछा, "मेरे बेटे को आख़िर हुआ क्या था ?"

"होना क्या था मालिक, बस समझ लीजिए कि मौत आ गई थी । वह तो अच्छा-भला खेल रहा था कि बैठे बैठे मर गया," नौकर ने कहा ।

मियाँ जी अपना सिर थामकर बैठ गए । थोड़ी देर बाद उन्होंने

सोचा कि जब परिवार में कोई रहा ही नहीं तो यह कारोबार और सामान अब किसके लिए रखा जाए ।

इसलिए उन्होंने थोड़ा-सा पैसा अपने पास रखकर बाक़ी सारा सामान और धन पड़ोस के लोगों में बाँट दिया और नौकर को साथ लेकर अपने गाँव की ओर चल पड़े । जब वह अपने घर के पास पहुँचे तो उनका कुत्ता उन्हें देखकर दुम हिलाता हुआ उनके पास आ गया । उन्होंने कहा, "अरे मेरा कुत्ता तो यह रहा।" नौकर ने उनकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया, लेकिन तभी उन्हें अपने घोड़े की हिनहिनाहट सुनाई दी । घर के अन्दर पहुँचकर उन्होंने अपनी माँ, पत्नी और बेटे -- सभी को वहाँ बैठा पाया ।

अब तो वह गुस्से से फट पड़े और एक छड़ी लेकर नौकर को मारने दौड़े । नौकर बोला, "पहले आप मेरी बात तो सुनिए ।"

"अरे तू सुनाएगा क्या ? तूने तो मुझे बरबाद कर दिया । आज मैं तुझे ज़मीन में गाड़ दूँगा ।"

"ज़मीन में बाद में गाड़िएगा, पहले मेरी शर्त याद कीजिए । क्या छः महीने में एक बार झूठ बोलने की बात तय नहीं हुई थी । आप तो दिन में बीस-बीस झूठ बोलें और मैं छः महीने में एक दिन भी झूठ न बोलूँ, यह कहाँ का न्याय है ?"

“लेकिन कम्बख़्त तेरे झूठ ने तो मुझे बरबाद कर दिया। अब तू मेरी आँखों के सामने से चला जा। यह ले अपने पैसे और जा।” नौकर अपना वेतन लेकर चल दिया।

○ ○ ○

छत्तीस

सर विलियम जोन्स ने संस्कृत कैसे सीखी ?

महावीर प्रसाद द्विवेदी

सर विलियम जोन्स, सुप्रीम कोर्ट के जज मुक़र्रर होकर[१], १७८३ ई० में कलकत्ता आए । वहाँ आकर उन्होंने थोडी सी हिन्दी सीखी । उसकी मदद से वह अपने नौकरों से किसी तरह बातचीत करने लगे । उसके बाद उन्हें संस्कृत सीखने की इच्छा हुई । इससे वह एक पंडित जी की तलाश में लगे । पर पंडित उन्हें कैसे मिल सकता था ? वह आजकल का ज़माना तो था नहीं । एक भी ब्राह्मण वेद और शास्त्र की पवित्र संस्कृत भाषा एक यवन को सिखाने पर राज़ी न हुआ । कृष्णनगर के महाराज शिवचन्द्र सर विलियम के मित्र थे । उन्होंने बहुत कोशिश की पर व्यर्थ । यवन को संस्कृत शिक्षा । शिव ! शिव ! सर विलियम ने बहुत तनख्वाह का लालच भी दिया, पर उनका यह प्रयत्न भी निष्फल हुआ । लालच के मारे दो-एक पंडित सर विलियम के यहाँ पधारे भी और इसका निश्चय करना चाहा कि यदि वे उन्हें संस्कृत पढाएँ तो क्या तनख्वाह मिलेगी । जब यह बात उनके पडोसियों ने सुनी, तब उनके तलवों

की आग मस्तक तक आ पहुँची । तुम यवनों के हाथ हमारी पवित्र देववाणी बेचोगे ? अच्छी बात है, तुम बिरादरी से ख़ारिज । तुम्हारा जल ग्रहण बन्द । बस फिर क्या था, उनका सारा साहस काफ़ूर हो गया । अब क्या किया जाय ? खैर, कलकत्ते से न सही, और ही कहीं कोई पंडित मिल जाय तो अच्छा । यह समझकर सर विलियम संस्कृत के प्रधान पीठ नवद्वीप को गए । वहाँ भी उन्होंने बहुत कोशिश की, परन्तु किसी ने उन्हें संस्कृत शिक्षा देना अंगीकार न किया । मूंड मारकर वह वहाँ से लौट आये ।

इस नाकामयाबी और नाउम्मेदी पर भी सर विलियम जोन्स ने रट नहीं छोड़ी । पंडितों की तलाश में वह बराबर बने ही रहे । अंत में ब्राह्मण तो नहीं, वैद्य जाति के एक संस्कृतज्ञ ने १०० रुपए महीने पर आपको[२] पढ़ाना मंजूर किया । इन पंडित का नाम था रामलोचन कविभूषण । यह पंडित महाराज संसार में अकेले ही थे । न स्त्री थी, न[३] संतति । हावड़ा के पास सलकिया में आप रहते थे । किसी से कुछ सरोकार न रखते थे, सबसे अलग रहते थे । इसी से आपको जाति या समाज से बहिष्कार का डर न था । पंडित महाशय वैद्य-विद्या भी जानते थे । पास पड़ोस के लोग चिकित्सा कराने बुलाते थे । कभी कभी इनके रोगी अच्छे भी हो जाते थे । इससे उन्होंने अपने मन में कहा कि यदि हम इस यवन को संस्कृत सिखाएँ,

तो भी हमारे टोले-मोहल्ले के लोग हमें छोड़ न सकेंगे। जब कोई बीमार होगा, लाचार होकर उन्हें हमीं को बुलाना पडेगा। क्योंकि और कोई वैद्य यहाँ है ही नहीं। इसी से उन्हें सर विलियम जोन्स को पढाने का साहस हुआ। एक तो सौ रुपए महीने तनख्वाह, फिर सलकिया से चौरंगी तक रोज़ आने जाने के लिए मुफ़्त में पालकी की सवारी। याद रहे, उस समय पालकी की सवारी के लिए महीने में ३० रुपए से कम ख़र्च न होते थे। अतएव अपना सब तरफ़ से फ़ायदा समझकर रामलोचन ने सर विलियम को पढाने का निश्चय किया।

कविभूषण जी ने सर विलियम जोन्स के साथ बडी शर्तें कीं। पर सर विलियम इतने उदार-हृदय थे कि उन्होंने सब शर्तों को मंजूर कर लिया। उनके बँगले के नीचे के खंड का एक कमरा पढाने के लिए पसंद किया गया। उसके फ़र्श में संगमरमर बिछवाया गया। एक हिन्दू नौकर रखा गया। उसके सुपुर्द यह काम हुआ कि वह रोज हुगली से जल लाकर कमरे के फ़र्श को और थोडी दूर तक दीवारों को भी धोए। दो-चार लकडी की कुर्सियाँ और एक लकडी की मेज़ के सिवा और सब चीजें उस कमरे से हटा दी गई। ये चीजें भी रोज़ धोई जाने लगीं। शिक्षा-दान के लिए सबेरे की बेला नियत हुई। पढने के कमरे में क़दम रखने के पहले सर विलियम को

हुकुम हुआ कि एक प्याला चाय के सिवा न कुछ खायें न पियें। यह भी उन्हें मंजूर करना पड़ा। कविभूषण जी की यह भी आज्ञा हुई कि गो - मांस, वृष - मांस, शूकर - मांस मकान के अन्दर न जाने पाये। यह बात भी क़बूल हुई। एक कमरा पंडित जी को कपड़े पहनने के लिए दिया गया। उसके भी रोज़ धोए जाने की योजना हुई। पंडित महाशय ने दो जोड़े कपड़े रखे। उनमें से एक जोड़ा इस कमरे में रखा गया। रोज़ प्रातः काल जिस जोड़े को पहनकर आप साहब के यहाँ आते थे, उसे इस कमरे में रख देते थे और उस कमरे में रखा हुआ जोड़ा पहनकर आप पढ़ाते थे। चलते समय फिर उसे बदलकर घरवाला जोड़ा पहन लेते थे।

इतने महाभारत के बाद सर विलियम ने रामः रामो रामा शुरु किया। न सर विलियम संस्कृत जानते थे, न कविभूषण महाशय अँग्रेज़ी। पाठ कैसे चलता? ख़ैर इतनी थी कि साहब थोड़ी सी हिन्दी बोल लेते थे। उसी की मदद से पाठ आरम्भ हुआ। दोनों ने उसकी शरण ली। सौभाग्य से अध्यापक और विद्यार्थी दोनों बुद्धिमान थे। नहीं तो उतनी थोड़ी हिन्दी से काम न चलता। सर विलियम ने बड़ी मेहनत की। एक ही वर्ष में वह सरल संस्कृत में अपना अभिप्राय प्रकट करने लगे। संस्कृत में लिंगभेद और क्रियाओं के रुप बड़े मुश्किल हैं। बहुत संभव है पहले सर विलियम ने

बहुत सी संज्ञाओं और क्रियाओं के रूप कागज़ पर लिख लिए होंगे। उनकी तालिकाएँ बना ली होंगी। उन्हीं की मदद से उन्होंने आगे का काम निकाला होगा। इस तरह से उन्होंने पंडित रामलोचन से संस्कृत सीखी। कहीं लिखा हुआ नहीं मिलता, पर यदि उनकी पाठ-ग्रहण-प्रणाली मालूम हो जाती, तो उसे जानकर ज़रूर कुतूहल होता।

एक दिन सर विलियम जोन्स पंडित महाशय से बातचीत कर रहे थे। बातों में नाटक का ज़िक्र आया। आपको मालूम हुआ कि संस्कृत में भी नाटक के ग्रन्थ हैं। उस समय भी कलकत्ते में अमीर आदमियों के यहाँ नाटक खेले जाते थे। अँग्रेजों में यह बात मालूम नहीं थी। पंडित रामलोचन ने कहा, पुराने ज़माने में भी राजाओं और अमीर आदमियों के यहाँ ऐसे ही नाटक हुआ करते थे। यह सुनकर सर विलियम को आश्चर्य हुआ और पंडित रामलोचन से आप शाकुन्तल पढ़ने लगे। उस पर आप इतने मुग्ध हुए कि उसका गद्य-पद्य-मय अँग्रेज़ी अनुवाद आपने कर डाला। यद्यपि अनुवाद अच्छा नहीं बना, तथपि उसने यूरोपवालों की आँखें खोल दीं। उसे पढ़कर लोगों ने पहले-पहल जाना कि संस्कृत का साहित्य खूब उन्नत है। जर्मनी का गेटे नामक कवि तो सर विलियम के अनुवाद को पढ़कर अलौकिक आनन्द से मत्त हो उठा। उसने अपनी मत्तता की दशा में शाकुन्तल की

स्तुति में एक कविता तक बना डाली ।

सुनते हैं, सर विलियम जोन्स के शिक्षक बड़े तेजमिजाज़ आदमी थे । जो बात सर विलियम के समझ में न आती थी, उसे गुरुजी से पूछना पड़ता था । गुरु महाशय ठीक तौर से पढ़ाना जानते न थे । वह सर विलियम को भी उसी रास्ते ले जाते थे, जिस रास्ते टोल (पाठशाला) के विद्यार्थी जाते हैं । इससे सर विलियम को कभी - कभी कोई बात दो - दो तीन - तीन दफ़े पूछनी पड़ती थी । एक दफ़े बताने से वह उनके ध्यान में न आती थी । ऐसे मौके पर गुरुदेव महाशय का मिजाज़ गरम हो उठता था । आप झट कह बैठते थे - "यह विषय बड़ा ही क्लिष्ट है, गोमांस - भोजी लोगों के लिए इसका ठीक ठीक समझना प्रायः असम्भव है ।" पर सर विलियम जोन्स पंडित महाशय को इतना प्यार करते थे और उन्हें इतना मान देते थे कि मलामतों को वह हँसकर टाल दिया करते थे ।

पंडित रामलोचन कविभूषण १८१२ ई० तक जीवित थे । वह अच्छे विद्वान थे । काव्य, नाटक, अलंकार और व्याकरण में खूब प्रवीण थे, पर धर्म-शास्त्र और दर्शन में उनकी विशेष गति न थी । इसलिए व्याकरण और काव्य का यथेष्ट अभ्यास कर चुकने पर जब सर विलियम ने धर्मशास्त्र का अध्ययन करना शुरु किया, तब उन्हें एक और पंडित रखना पड़ा । यवन को संस्कृत

सिखाना पहले घोर पाप समझा जाता था, पर अब इस तरह का ख़्याल कुछ ढीला पड़ गया था। इससे सर विलियम को धर्मशास्त्री पंडित ढूँढने में विशेष कष्ट नहीं उठाना पड़ा।

सर विलियम जोन्स १७८३ ई० में जज होकर कलकत्ते आये और १७९४ में वहीं मरे। हिन्दुस्तान आने के पहले ऑक्सफ़ोर्ड में उन्होंने फ़ारसी और अरबी सीखी थी। उनका बनाया हुआ फ़ारसी का व्याकरण उत्तम ग्रन्थ है। वह अब नहीं मिलता। बंगाल की एशियाटिक सोसायटी उन्हीं की क़ायम की हुई है।

* * *

सैंतीस

कुछ पत्र

एक

१२१, रवीन्द्र नगर,

नई दिल्ली.

दिनांक १५ जनवरी, १९६६.

प्रिय राजेश,

नमस्ते ।

जब से हम लोग इस नए घर में आए हैं, तब से तुम एक बार भी हमारे यहां नहीं आए हो ।

मैं और तुम्हारी भाभी चाहते हैं[1] कि इस शनिवार को शाम की चाय तुम लोग हमारे साथ पियो । छोटे पप्पू को भी ज़रूर साथ लाना ।

सस्नेह ।

तुम्हारा

अजय

० ० ०

अड़तीस

कुछ पत्र

दो

रूम नं० ७, केप होटल,
कन्याकुमारी, भारत ।

दिनांक ११ फ़रवरी, १९६६.

प्रिय जेनी,

यह पत्र मैं तुम्हें भारत के दक्षिणी छोर से लिख रही हूं । तुम तो शायद इस स्थान का नाम भी नहीं जानती होगी । इसका नाम है कन्याकुमारी । वैसे कुछ लोग इसे कुमारी अंतरीप के नाम से भी पुकारते हैं। इसे किसी कवि ने सुनहले सूर्योदय और सुनहले सूर्यास्त की भूमि कहा था। अब जबकि मैं यहां का सूर्योदय और सूर्यास्त दोनों देख चुकी हूं, कह सकती हूं कि उस कवि ने ठीक ही कहा था ।

कल शाम को मैं सूर्यास्त देखने गई थी । और भी बहुत-से लोग वहां आए हुए थे । मैं जहाँ खड़े होकर उस अद्भुत दृश्य को देख रही थी वह भारत के स्थल भाग की अंतिम चट्टान है । मेरे दाईं ओर अरब

सागर लहरा रहा था और बाईं ओर बंगाल की खाड़ी, और आंखों के सामने हिन्द महासागर फैला पड़ा था ।

पश्चिमी क्षितिज में सूर्य धीरे-धीरे नीचे जा रहा था । जिस समय सूर्य ने पानी की सतह को छुआ उस समय तो बिलकुल ऐसा जान पड़ता था मानो चारों ओर सोना-ही-सोना[1] बरस रहा हो । परन्तु धीरे-धीरे डूबता हुआ सूर्य जब बिलकुल डूब गया तो जहां अब तक पानी पर सोना तैर रहा था, वहीं अब जैसे खून बह आया हो । सारा वातावरण लाल हो उठा । धीरे-धीरे यह रंग भी गहरा होते-होते काला पड़ने लगा तो मुझे ध्यान आया कि अरे मुझे अपने होटल भी तो वापस पहुंचना है । मैं यहां केप होटल में रुकी हूं । वैसे ठहरने को यहां एक-दो धर्मशालाएं और दूसरे होटल भी हैं, लेकिन मुझे यही होटल पसंद आया था ।

आज सुबह मैं सूर्योदय का दृश्य देखने गई थी । सूर्योदय का दृश्य विवेकानन्द चट्टान से बहुत अच्छा दिखाई देता है । कहते हैं कि इस चट्टान पर स्वामी विवेकानन्द ने समाधि लगाई थी, इसी-लिए इसका नाम विवेकानन्द चट्टान पड़ गया है । यहां सूर्योदय का दृश्य भी बहुत ही मनमोहक और अद्भुत होता है । वहां से लौटते हुए आज हमने समुद्र के किनारे पर बना हुआ कन्याकुमारी का मंदिर भी देखा था । मंदिर की लाल और सफ़ेद

रंग की लकीरें बहुत ही अच्छी लगती हैं ।

तुम जब भारत आओ तो यहां ज़रूर आना । यहां तक पहुंचने में कोई कठिनाई नहीं होगी । तिरुवनंतपुरम तक तो रेल ही जाती है और वहां से बस द्वारा तुम यहां तक पहुंच सकती हो । और अगर सम्भव हो तो यहां पूर्णिमा के दिन आना, क्योंकि पूर्णिमा के दिन एक ओर डूबता हुआ सूर्य और दूसरी ओर से उगते हुए चन्द्रमा का दृश्य अनोखा होता है । जब तुम स्वयं देख लोगी तो तुम्हें मेरी बात की सचाई का पता चल जाएगा ।

अच्छा, शेष बातें कल लिखूंगी । हां, मैंने तुम्हारे लिए यहां मिलने वाली शंखों की माला ख़रीद ली है और एक कौड़ी पर तुम्हारा नाम भी लिखवा लिया है । जब आऊंगी तो तुम्हें दूंगी ।

अच्छा, नमस्कार ।

तुम्हारी

मार्शा

० ० ०

उनतालीस

कुछ पत्र

तीन

रूम नं० १५, मिरांडा हाउस हॉस्टल

विश्वविद्यालय, दिल्ली - ७

२७ जून, १९६६.

प्रिय क्लारा,

मैं जानती हूँ कि तुम नाराज़ होगी। पिछले महीनों में मैं बहुत अधिक व्यस्त रही थी। तुम तो जानती ही हो कि यहाँ अप्रैल - मई के महीने में परीक्षाएं होती हैं। इसलिए जनवरी - फरवरी से ही पढ़ाई में जुट गई थी। और परीक्षा के बाद मैं कश्मीर देखने चली गई थी। मैं सारा कश्मीर घूम आई हूँ। मैंने वहाँ जो कुछ देखा है वह सब मैंने अपनी डायरी में लिख रखा है। चूँकि पत्र में वह सब नहीं लिख पाऊँगी, इसलिए लौटने पर ही तुम्हें सुनाऊँगी। अगर एक वाक्य में सुनना चाहती हो तो मैं बस यही कह सकती हूँ कि जो लोग कश्मीर को भारत का स्विट्ज़रलैण्ड कहते हैं - वे

ठीक ही कहते हैं ।

आज शाम को तुम्हें कई लोगों ने याद किया । बात यह है कि आज रेखा की शादी थी । तुम्हें रेखा की याद होगी । वही, जो हिन्दी में एम. ए. कर रही थी और हॉस्टल में तुम्हारे कमरे के पास वाले कमरे में रहती थी । उसकी शादी में उसकी वे सब सहेलियां भी थीं जो तुम्हें जानती थीं । सभी मुझसे तुम्हारे संबंध में पूछने लगीं ।

जिस समय मैं वहां पहुंची उस समय बहुत से मेहमान आ चुके थे । चारों ओर बड़ी चहल-पहल थी । रेखा के घर के सामने वाले पार्क में एक बहुत बड़ा शामियाना लगाया गया था । वह पूरे का पूरा शामियाना कागज़ की बेलों से सजाया गया था और उसमें रंग बिरंगी बत्तियां लगी हुई थीं । रेखा के घर पर भी बहुत सी बत्तियां लगी हुई थीं और वह मकान ऐसा लग रहा था जैसे कि बत्तियों का ही बना हो । शामियाने में सोफ़े और कुर्सियां पड़ी थीं । एक कोने में तख्त पड़ा था और उस पर बैठे शहनाई वाले शहनाई बजा रहे थे ।

चारों ओर बच्चे भाग दौड़ रहे थे । औरतें ढेर सारे ज़ेवर पहने हुए थीं । उनकी साड़ियों की तड़क-भड़क बहुत ही अच्छी लग रही थी । और तब मैं रेखा के पास पहुंची । एक बार तो मैं उसे पहचान

ही न सकी। आश्चर्य से मैं उसे देखती ही रह गई। जैसे ही उसकी निगाह मुझ पर पड़ी वह मेरे पास आई और मुझसे लिपट गई। मैं उसके रूप को देखकर ठगी-सी रह गई थी।

तभी किसी ने कहा कि चलो बाहर बाहर बारात आ रही है। मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि मैंने यहां देखा है कि बारात आती है तो उसके आगे-आगे बैण्ड बजता है। लेकिन यहां तो बैण्ड की आवाज नहीं आ रही थी। फिर भी मैं सब लोगों के साथ बाहर गई। मैंने देखा कि कुछ लोग चले आ रहे हैं। मैंने देखा कि न तो वहां बाजा बज रहा है और न दूल्हे की घोड़ी दिखाई दे रही है। यहां दूल्हा एक सजी हुई घोड़ी पर चढ़कर आता है। उसके सिर पर मौर रहता है और चेहरे पर सेहरा। लेकिन यहां तो न बाजा था, न घोड़ी और न कोई ऐसा व्यक्ति जिसके सिर पर मौर और चेहरे पर सेहरा हो।

मैंने अपने पास खड़ी एक स्त्री से पूछा -"क्या यही बारात है? लेकिन दूल्हा तो दिखाई ही नहीं दे रहा है।" उन्होंने कहा --"हां, हां, यही है बारात। और वह जो सुन्दर सा युवक है न, जिसने सिल्क का कुर्ता पहना हुआ है वही है दिनेश - रेखा का दूल्हा।" मैंने देखा कि एक स्वस्थ युवक अपने मित्रों के साथ बातचीत करता हुआ चला आ रहा है।

पहले तो मुझे बडा अजीब लगा, लेकिन शीघ्र ही मुझे अच्छा भी लगने लगा। भारत में नई पीढी आगे आ रही है जो पुरानी रूढियों को तोड कर आगे बढ रही है। यह बारात भी उसी नई पीढी के एक युवक की बारात थी।

सारे बाराती शामियाने में बिठा दिए गए। दूल्हा और उसके कुछ मित्र घर के दरवाज़े पर पहुंचे। दरवाज़े पर रेखा अपनी सहेलियों से घिरी खडी थी। दूल्हे के दरवाज़े पर पहुंचते ही पंडित ने कुछ मंत्र पढे और तब रेखा ने दूल्हे के गले में वरमाला डाल दी। वरमाला डालते समय रेखा के चेहरे पर एक लज्जा, एक चमक और एक लाली दौड गई थी। उस समय वह अपूर्व सुन्दरी लग रही थी।

इसके बाद खाना-पीना हुआ और फिर विवाह। फूलों से सजी वेदी पर दूल्हा-दुल्हन बिठाए गए। रेखा के पिताजी ने कन्या-दान किया और बाद में फेरे पडे। यहां पर अग्नि को साक्षी करके दूल्हा-दुल्हन सात फेरे लेते हैं। सारे कार्यक्रम में पंडित मंत्र बोलते रहे थे। मुझे बडा अच्छा लग रहा था। मैंने रेखा और दिनेश को एक बार फिर बधाई दी और फिर चली आई।

वहां से अभी-अभी लौटी हूं और तुम्हें पत्र लिखने बैठ गई हूं।

पत्र का उत्तर शीघ्र देना ।

तुम्हारी

पुत्री

* * *

चालीस

सच्चा कोष

एक भिखारी था। वह रोज़ एक ही स्थान पर बैठकर भीख माँगा करता था। उसकी जीवन में धनवान बनने की बड़ी इच्छा थी, लेकिन वह कंगाल ही मरा।

उसके मर जाने के बाद पता चला कि जिस जगह पर बैठकर वह छब्बीस वर्ष तक भीख माँगता रहा, उसके ठीक नीचे भारी ख़ज़ाना गड़ा हुआ था, जिसमें किसी राजा के हीरे-जवाहरात और सोने के सिक्के थे। भिखारी जीवन-भर वहीं बैठकर भीख माँगता रहा और यह नहीं जान पाया कि उसके पाँव-तले कुबेर का कोष पड़ा है।

इसी तरह बहुत-से लोग जीवन-भर शांति और आनंद के लिए तरसते हैं। वे नहीं जान पाते कि शांति और आनंद का दैवीय रत्नकोष तो उनकी आत्मा में ही छिपा पड़ा है।

इकतालीस

शरणागत

वृन्दावनलाल वर्मा

रज्जब अपना रोज़गार कर के ललितपुर लौट रहा था। साथ में स्त्री थी, और दो-तीन सौ की बड़ी रकम। मार्ग बीहड़ था, और सुनसान। ललितपुर काफ़ी दूर था, बसेरा कहीं-न-कहीं लेना ही था, इसलिए उसने एक गांव में ठहर जाने का निश्चय किया। उसकी स्त्री को बुख़ार हो आया था, रक़म पास में थी, और बैलगाड़ी किराये पर करने पर ख़र्च ज़्यादा पड़ता, इसलिए रज्जब ने उस रात आराम कर लेना ही ठीक समझा।

परन्तु ठहरता कहां? अपनी जाति छिपाने से काम नहीं चल सकता था। उसकी पत्नी नाक और कानों में चांदी की बालियां पहने थी, और पैजामा पहने थी। इसके सिवा गांव के बहुत से लोग उसको पहचानते भी थे। वह उस गांव के बहुत से पुराने और बेकार ढोर लेजा चुका था।

° ° °

रज्जब ने अपने जानकारों से रात भर रहने के लिए जगह की याचना

की। किसी ने भी मंजूर न किया।

गाँव में एक ग़रीब ठाकुर रहता था। थोड़ी सी ज़मीन थी, जिसको किसान जोते हुए थे, जिन का हल-बैल कुछ भी न था। छोटा सा मकान था, परन्तु उसको गाँव वाले गढ़ी के आदर-व्यंजक शब्द से पुकारा करते थे, और ठाकुर को डर के मारे राजा के शब्द से सम्बोधित करते थे। रज्जब इसी ठाकुर के दरवाज़े पर अपनी ज्वर-ग्रस्त पत्नी को लेकर पंहुचा ठाकुर पौर में बैठा हुक्का पी रहा था। रज्जब ने बाहर से ही सलाम करके कहा --"दाऊ जू, एक बिनती है।"

ठाकुर ने बिना हिले-डुले पूछा --"क्या ?"

रज्जब बोला --"मैं दूर से आ रहा हूँ। बहुत थका हुआ हूँ। मेरी औरत को ज़ोर से बुख़ार आ गया है। जाड़े में बाहर रहने से इसकी हालत और ख़राब हो जायगी, इसलिये रातभर के लिए कहीं दो हाथ की जगह दे दी जाय।"

"कौन लोग हो ?" ठाकुर ने प्रश्न किया।

"हूँ तो कसाई।" रज्जब ने सीधा उत्तर दिया। चेहरे पर उसके बहुत गिड़गिड़ाहट थी।

ठाकुर की आँखों में कठोरता छा गई। बोला --"जानता है यह

किस का घर है ? यहांतक आने की हिम्मत कैसे की तूने ?"

रज्जब ने आशा भरे स्वर में कहा --"यह राजा का घर है, इसलिए शरण में आया हूं ।"

तुरन्त ठाकुर की आंखों से कठोरता ग़ायब हो गई । ज़रा नरम स्वर में बोला --"किसी ने तुझ को बसेरा नहीं दिया ?"

"नहीं, महाराज," रज्जब ने उत्तर दिया --"बहुत कोशिश की, परन्तु मेरे पेशे के कारण कोई नहीं माना ।" और वह दरवाज़े के बाहर ही, एक कोने में चिपट कर बैठ गया । पीछे उसकी पत्नी कराहती, कांपती हुई गठरी-सी बन कर सिमट गई ।

ठाकुर ने कहा --"तुम अपनी चिलम लिए हो ?"

"हां सरकार ।" रज्जब ने उत्तर दिया ।

ठाकुर बोला --"तब भीतर आ जाओ, और तमाखू अपनी चिलम से पी लो । अपनी औरत को भी भीतर कर लो । हमारी पौर के एक कोने में पड़ रहना ।"

जब वे दोनों भीतर आ गए, ठाकुर ने पूछा --"तुम कब यहां से उठ कर चले जाओगे ?"

जवाब मिला --"अंधेरे में ही महाराज । खाने के लिए रोटियां

बांधे हूं, इसलिए पकाने की ज़रूरत न पड़ेगी।"

"तुम्हारा नाम ?"

"रज्जब।"

○ ○ ○

थोड़ी देर बाद ठाकुर ने रज्जब से पूछा --"कहां से आ रहे हो ?"

रज्जब ने स्थान का नाम बतलाया।

"वहां किस लिए गए थे ?"

"अपने रोज़गार के लिए।"

"काम तो तुम्हारा बहुत बुरा है।"

"क्या करूं ? पेट के लिए करना ही पड़ता है।"

"क्या नफ़ा हुआ ?" प्रश्न करने में ज़रा ठाकुर को संकोच हुआ, और प्रश्न का उत्तर देने में रज्जब को उससे बढ़कर।

रज्जब ने जवाब दिया --"महाराज, थोड़ा सा कुछ मिल गया है।"

ठाकुर ने इस पर कोई ज़िद नहीं की।

रज्जब एक क्षण बाद बोला --"बड़े भोर उठ कर चला जाऊंगा। तब तक बीबी की तबीयत भी अच्छी हो जाएगी।"

इसके बाद दिन भर के थके हुए पति-पत्नी सो गए। काफ़ी रात

हुए कुछ लोगों ने एक बंधे इशारे से ठाकुर को बाहर बुलाया। फटी सी रज़ाई ओढ़े ठाकुर बाहर निकल आया। आगन्तुकों में से एक ने धीरे से कहा --"दाऊ जू, आज तो ख़ाली हाथ लौटे हैं।"

ठाकुर ने कहा --"आज ज़रूरत थी। और कल देखा जाएगा। क्या कोई उपाय किया था ?"

"हां," आगन्तुक बोला --"एक कसाई रुपए बांधे इसी ओर आया है। परन्तु हम लोग ज़रा देर से पहुंचे। वह खिसक गया। कल देखेंगे। ज़रा जल्दी।"

ठाकुर ने घृणासूचक स्वर में कहा --"कसाई का पैसा न छुएंगे।"

"क्यों ?"

"बुरी कमाई है।"

"उस के रुपयों पर कसाई थोड़े ही लिखा है ?"

"परन्तु उसके व्यवसाय से वह रुपया दूषित हो गया है।"

"रुपया तो दूसरों का ही है। कसाई के हाथ में आने से रुपया कसाई नहीं हुआ।"

"मेरा मन नहीं मानता, वह अशुद्ध है।

"हम अपनी तलवार से उसको शुद्ध कर लेंगे।"

ज़्यादा बहस नहीं हुई। ठाकुर ने कुछ सोच कर अपने साथियों को बाहर-का-बाहर ही टाल दिया। भीतर देखा कसाई सो रहा था, और उसकी पत्नी भी।

ठाकुर भी सो गया।

○ ○ ○

सवेरा हो गया, परन्तु रज्जब न जा सका। उसकी पत्नी का बुख़ार तो हल्का हो गया था, परन्तु शरीर भर में पीड़ा थी, और वह एक क़दम भी नहीं चल सकती थी।

ठाकुर उसे वहीं ठहरा हुआ देखकर कुपित हो गया। रज्जब से बोला—"मैंने ख़ूब मेहमान इकट्ठे किए हैं। गाँव-भर थोड़ी देर में तुम लोगों को मेरी पौर में टिका हुआ देखकर तरह तरह की बकवास करेगा। तुम बाहर जाओ, इसी समय।"

रज्जब ने बहुत विनती की मगर ठाकुर न माना। यद्यपि गाँव-भर उसके दबदबे को मानता था, परन्तु अव्यक्त लोकमत का दबदबा उसके भी मन पर था। इसलिए रज्जब गाँव के बाहर सपत्नीक एक पेड़ के नीचे जा बैठा, और हिन्दुओं को मन-ही-मन कोसने लगा। उसे आशा थी कि पहर-आध-पहर में उसकी पत्नी की तबीयत इतनी स्वस्थ हो जाएगी कि वह

पैदल यात्रा कर सकेगी। परन्तु ऐसा न हुआ, तब उसने एक गाड़ी किराए पर कर लेने का निश्चय किया।

मुश्किल से एक चमार काफ़ी किराया लेकर ललितपुर गाड़ी लेजाने के लिए राज़ी हुआ। इतने में दोपहर हो गई। उसकी पत्नी को ज़ोर का बुखार हो आया। वह जाड़े के मारे थर थर कांप रही थी, इतनी कि रज्जब की हिम्मत उसी समय ले जाने की न पड़ी। चलने में अधिक हवा के लगने के भय से रज्जब ने उसी समय तक के लिए यात्रा को स्थगित कर दिया, जब तक कि उस बेचारी की कम से कम कंपकंपी बन्द न हो जाए।

घण्टे-डेढ़-घण्टे तक उसकी कंपकंपी तो बन्द हो गई, परन्तु ज्वर बहुत तेज़ हो गया। रज्जब ने अपनी पत्नी को गाड़ी में डाल दिया, और गाड़ीवान से जल्दी चलने को कहा।

गाड़ीवान बोला --"दिन भर तो यहीं लगा दिया। अब जल्दी चलने को कहते हो।"

रज्जब ने मिठास के स्वर में उससे फिर जल्दी करने के लिए कहा।

वह बोला --"इतने किराए में काम नहीं चल सकेगा। अपना रुपया वापस लो। मैं तो घर जाता हूँ।"

रज्जब ने दांत पीसे। कुछ क्षण चुप रहा। सचेत होकर कहने

लगा --"भाई,आफ़त सब के ऊपर आती है । मनुष्य, मनुष्य को सहारा देता है, जानवर तो देते नहीं । तुम्हारे भी बालबच्चे हैं । कुछ दया के साथ काम लो ।"

कसाई को दया पर व्याख्यान देते सुनकर गाड़ीवान को हंसी आ गई ।

उस को टस से मस न होता देख कर रज्जब ने और पैसे दिए । तब उसने गाड़ी हांकी ।

○ ○ ○

पांच-छः मील चलने के बाद संध्या हो गई । गांव कोई पास में न था । रज्जब की गाड़ी धीरे धीरे चली जा रही थी । उसकी पत्नी बुखार में बेहोश सी थी । रज्जब ने अपनी कमर टटोली । रकम सुरक्षित बंधी पड़ी थी ।

रज्जब को स्मरण हो आया कि पत्नी के बुखार के कारण पैसे कुछकम हो गए हैं -- और स्मरण हो आया -- गाड़ीवान का वह हठ, जिस के कारण उसको कुछ पैसे व्यर्थ ही देने पड़े थे । उसे गाड़ीवान पर क्रोध था, परन्तु उसको प्रकट करने की उस समय उसके मन में इच्छा न थी ।

बातचीत कर के रास्ता काटने की कामना से उसने वार्तालाप आरम्भ किया

"गाँव तो यहाँ से दूर मिलेगा ?"

"बहुत दूर। वहीं ठहरेंगे।"

"किसके यहाँ ?"

"किसी के यहाँ भी नहीं। पेड़ के नीचे। कल सवेरे ललितपुर चलेंगे।"

"कल को फिर पैसा माँग उठना।"

"कैसे माँग उठूँगा ? किराया ले चुका हूँ। अब फिर कैसे माँगूगा ?"

"जैसे आज गाँव में हठ कर के माँगा था। बेटा ! ललितपुर होता तो बतला देता।"

"क्या बतला देते ? क्या मुफ़्त गाड़ी में बैठना चाहते थे ?"

"क्यों बे, रुपए देकर भी मुफ़्त का बैठना कहता है ? जानता है, मेरा नाम रज्जब है। अगर बीच में गड़बड़ करेगा तो साले यहीं छुरे से काट कर कहीं फैंक दूंगा। और गाड़ी ले कर ललितपुर चल दूंगा।"

रज्जब क्रोध को प्रकट करना नहीं चाहता था, परन्तु शायद अकारण ही वह प्रकट हो गया।

गाड़ीवान ने इधर उधर देखा। अंधेरा हो गया था। चारों ओर सुनसान था। आसपास झाड़ियां खड़ी थीं। रज्जब की बात सुनकर उसकी

हड्डी काँप गई। ऐसा जान पड़ा मानों पसलियों में उसकी ठंडी छुरी छू रही हो।

गाड़ीवान चुपचाप बैलों को हाँकने लगा। उसने सोचा -- गाँव आते ही गाड़ी छोड़ कर नीचे खड़ा हो जाऊंगा और हल्ला-गुल्ला कर के गाँव वालों की मदद से अपना पीछा रज्जब से छुड़ाऊंगा। रुपए पैसे भले ही वापस कर दूंगा परन्तु और आगे न जाऊंगा। कहीं सचमुच मार्ग में मार डाले।

गाड़ी थोड़ी दूर और चली होगी कि बैल ठिठक कर खड़े हो गए। रज्जब सामने नहीं देख रहा था, इसलिए ज़रा अकड़ कर गाड़ीवान से बोला -- " क्यों बे बदमाश, सो गया क्या ?"

अधिक कड़क के साथ सामने रास्ते पर खड़ी हुई एक टुकड़ी में से किसी के कठोर कण्ठ से निकला --" ख़बरदार, जो आगे बढ़ा।"

रज्जब ने सामने देखा, चार पांच आदमी बड़े बड़े लट्ठ बांधकर न जाने कहां से आ गये हैं। उन में से तुरन्त ही एक ने बैलों की जुआरी पर एक लट्ठ पटका और दो दाए-बाएं आकर रज्जब पर आक्रमण करने को तैयार हो गए।

गाड़ीवान गाड़ी छोड़कर नीचे जा खड़ा हुआ। बोला --" मालिक, --

मैं तो गाड़ीवान हूँ। मुझ से कोई सरोकार नहीं।"

" यह कौन है ? -- एक ने गरज कर पूछा।"

गाड़ीवान की घिग्घी बंध गई। कोई उत्तर न दे सका।

रज्जब ने कमर की गाँठ को एक हाथ से संभालते हुए बहुत ही विनीत स्वर में कहा --" मैं बहुत ग़रीब आदमी हूँ। मेरे पास कुछ नहीं है। मेरी औरत गाड़ी में बीमार पड़ी है। मुझे जाने दीजिए।"

उन लोगों में से एक ने रज्जब के सिर पर लाठी उबारी। गाड़ीवान खिसकना चाहता था कि दूसरे ने उसको पकड़ लिया।

अब उसका मुँह खुला। बोला --" महाराज मुझ को छोड़ दो। मैं तो किराए पर गाड़ी लिए जा रहा हूँ। मेरे पास खाने के लिए तीन-चार आने पैसे ही हैं।"

" और यह कौन है ? बतला।" उन लोगों में से एक ने पूछा।

गाड़ीवान ने तुरन्त उत्तर दिया," ललितपुर का एक कसाई।"

रज्जब के सिर पर जो लाठी उठाई गई थी, वह वहीं रह गई। लाठीवाले के मुँह से निकला --" तुम कसाई हो ? सच बतलाओ।"

" हाँ, महाराज," रज्जब ने सहसा उत्तर दिया --" मैं बहुत ग़रीब हूँ। हाथ जोड़ता हूँ, मुझ को मत सताओ। मेरी औरत बीमार है।"

औरत ज़ोर से कराही ।

लाठीवाले उस आदमी ने कहा (अपने साथी के कान में) --" इसका नाम रज्जब है । छोडो । चलो यहां से ।"

उसने न माना । बोला --"इस की झोपडी चकनाचूर करो दाऊजू यदि ऐसे न माने तो -- असाई-कसाई हम कुछ नहीं मानते ।"

" छोडना ही पडेगा," उसने कहा --" इस पर हाथ नहीं उठाएंगे, न इसका पैसा छूएंगे ।"

दूसरा बोला --" क्या कसाई होने से ? दाऊजू, आज तुम्हारी बुद्धि पर पत्थर पडगए हैं, मैं देखता हूं ।" और तुरन्त लाठी लेकर गाडी में चढ गया । लाठी का एक सिरा रज्जब की छाती में अडा कर उसने तुरन्त रुपया--पैसा निकाल दे देने का हुक्म दिया । नीचे खडे हुए एक व्यक्ति ने ज़रा तीव्र स्वर में कहा --" नीचे उतरआओ । उससे मत बोलो । उसकी औरत बीमार है ।"

पर गाडी पर चढे हुए लठैत ने यह अनसुनी कर रज्जब को फिर धमकी दी ।

नीचे खडे हुए उस व्यक्ति ने कहा --"ख़बरदार जो इसे छुआ । नीचे उतरो, नहीं तो तुम्हारा सिर चूर किए देता हूं । वह मेरी शरण आया था ।"

गाड़ीवान लठैत नीचे उतर आया ।

नीचेवाले व्यक्ति ने कहा --"सब लोग अपने अपने घर जाओ । राहगीरों को तंग मत करो ।"

फिर गाड़ीवान से बोला --"जा रे, हांक ले जा गाड़ी । ठिकाने पर पंहुचा आना, तब लौटना । नहीं तो अपनी खैर मत समझियो । और तुम दोनों में से किसी ने भी कभी इसबात की चर्चा कहीं की तो भूसी की आग में जला कर खाक कर दूंगा ।"

गाड़ीवान गाड़ी लेकर बढ़ गया । उन लोगों में से जिस आदमी ने गाड़ी पर चढ़कर रज्जब के सिर पर लाठी तानी थी, उसने क्षुब्ध स्वर में कहा --"दाऊजू, आगे से कभी आप के साथ न आऊंगा ।"

दाऊजू ने कहा --" न आना । मैं अकेले ही बहुत कर गुज़रता हूं परन्तु बुन्देला शरणागत के साथ घात नहीं करता । इस बात को गांठ बांध लेना ।

° ° °

कहानी

हार की जीत

श्री सुदर्शन

माँ को अपने बेटे, साहूकार को अपने देनदार और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनन्द प्राप्त होता है, वही आनन्द बाबा भारती को अपना घोड़ा देख कर होता था। भगवान के भजन से जो समय बचता, वह घोड़े के अर्पण हो जाता। यह घोड़ा बड़ा सुन्दर था और बड़ा बलवान। इसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे सुलतान कह कर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देख कर प्रसन्न होते थे। ऐसी लगन, ऐसे आदर, ऐसे स्नेह से कोई व्यक्ति अपने सच्चे प्रेमी को भी न चाहता होगा। उन्होंने अपना सबकुछ छोड़ दिया था -- रुपया, माल, असबाब, ज़मीन यहाँ तक कि उन्हें नागरिक जीवन से भी घृणा थी। अब एक गाँव से बाहर छोटे-से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे, परन्तु सुलतान से बिछुड़ने की वेदना उनके लिए असह्य थी। मैं इसके बिना न रह सकूँगा, उन्हें ऐसी भ्रान्ति-सी हो गई थी। गाँवों के लोग इस

मोहमाया को देखकर चकित थे। जब तक बाबा भारती सन्ध्या समय सुलतान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते तब तक उन्हें चैन न आता।

खड्गसिंह इस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुन कर काँपते थे। सुलतान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार कर के बैठ गया।

बाबा भारती ने पूछा --"खड्गसिंह, क्या हाल है ?"

खड्गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया --"आपकी दया है।"

"कहो, इधर कैसे आ गए ?"

"सुलतान की चाह खींच लाई।"

"विचित्र जानवर है। देखोगे, तो प्रसन्न हो जाओगे।"

"मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।"

"उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।"

"कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुन्दर है।"

"क्या कहना। जो उसे एकबार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है। बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो गया हूँ।"

बाबा और खड़गसिंह दोनों अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड़गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। उसने सैकड़ों घोड़े देखे थे, परन्तु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी गुज़रा न था। सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड़गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधू को ऐसी चीज़ों से क्या मतलब? कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात हृदय में हलचल होने लगी, बालकों की सी अधीरता से बोला --"परन्तु बाबाजी, इसकी चाल न देखी तो क्या देखा[2] ?"

○ ○ ○

बाबाजी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुखसे सुनने के लिए उनका हृदय भी अधीर हो गया। घोड़े को खोल कर बाहर लाए और उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे। एकाएक उचक कर सवार हो गए। घोड़ा वायु-वेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर, उसकी गति देखकर, खड़गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए, उसपर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था, रुपया था और आदमी भी थे। जाते-जाते बोला --"बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।"

बाबा भारती डर गए। अब उन्हें रात को नींद न आती थी। सारी

रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता। परन्तु कई मास बीत गए और वह न आया। यहां तक कि बाबा भारती कुछ लापरवाह हो गए।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आंखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता थी। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी रंग को और फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज़ आयी --"ओ बाबा। इस ग़रीब की बात भी सुनते जाना।" आवाज़ में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को थाम लिया।

देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले -- "क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है?" अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा --"बाबा, मैं दुखिया हूँ, मुझ पर दया करो। रामांवाला यहां से तीन मील है, मुझे वहां जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा तुम्हारा भला करेगा।"

"वहां तुम्हारा कौन है?"

"दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।"

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया, और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे।

सहसा उन्हें एक झटका सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई । उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है, तो उनके मुखसे भय विस्मय और निराशा से मिली हुई एक चीख़ निकल गई । यह अपाहिज खड्गसिंह डाकू था ।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और इसके पश्चात कुछ निश्चय करके पूरे बलसे चिल्लाकर बोले --" ज़रा ठहर जाओ ।"

यह आवाज़ सुनकर खड्गसिंह ने घोड़ा रोक लिया, और उसकी गर्दन पर हाथ फेरते हुए कहा --"बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूंगा ।"

" परन्तु एक बात सुनते जाओ ।"

खड्गसिंह ठहर गया । बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आंखों से देखा, जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा --" यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका । मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूंगा । परन्तु खड्गसिंह ! एक प्रार्थना करता हूं, उसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा ।"

" बाबा जी, आज्ञा दीजिए । मैं आपका दास हूं, केवल यह घोड़ा न दूंगा ।"

" अब घोड़े का नाम न लो । मैं तुमको इसके विषय में कुछ न कहूंगा ।

मेरी प्रार्थना यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना ।"

खड्गसिंह का मुंह आश्चर्य से खुला रह गया । उसका विचार था कि उसे इस घोड़े को लेकर यहां से भागना पड़ेगा, परन्तु बाबा भारती ने स्वंय उससे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना । खड्गसिंह ने बहुत सोचा, परन्तु कुछ समझ न सका । हारकर उसने अपनी आंखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दी और पूछा --"बाबाजी, इसमें आपको क्या डर है ?"

बाबा भारती ने उत्तर दिया --"लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया, तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे ।"

यह कहते - कहते उन्होंने सुलतान की ओर से इस तरह मुंह मोड़ लिया, जैसे उनका उससे कभी सम्बन्ध ही न था । बाबा भारती चले गए, परन्तु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूंज रहे थे । सोचता था, कैसे उच्च विचार हैं ? उन्हें इस घोड़े से प्रेम था । इसे देखकर उनका मुख फूल की तरह खिल जाता था । कहते थे, इसके बिना मैं रह न सकूंगा । इसकी रखवाली में में वह कई रातें सोये नहीं । भजन - भक्ति के बदले रखवाली करते रहे । परन्तु आज उनके मुख पर चिंता की रेखा तक न देख पड़ती थी । उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग ग़रीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें । उन्होंने अपनी निज की हानि को मनुष्यत्व की हानि पर न्यौछावर कर दिया ।

ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं, देवता है ।

○ ○ ○

रात्रि के अंधकार में खड्गसिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुंचा । चारों ओर सन्नाटा था । आकाश के तारे टिमटिमा रहे थे । थोड़ी दूर पर गांव के कुत्ते भौंकते थे । मंदिर के अन्दर कोई शब्द सुनाई न देता था । खड्गसिंह सुलतान की बाग पकड़े हुए था । वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक तक पंहुचा । फाटक चौपट खुला था । किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वंय लाठी लेकर पहरा देते थे, परन्तु आज उन्हें किसी चोरी या किसी डाके का भय न था । खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बांध दिया, और बाहर निकल कर सावधानी से फाटक बंद कर दिया । इस समय उसकी आंखों में पश्चात्ताप के आंसू थे ।

अन्धकार में रात्रि ने तीसरा पहर समाप्त किया । चौथा पहर आरम्भ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल, ठण्डे जल से स्नान किया। उसके पश्चात इस प्रकार, जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पांव अस्तबल की ओर मुड़े, परन्तु फाटक पर पहुंचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई, साथ ही घोर निराशा ने पावों को मन-मन भर का बना दिया । वे वहीं रुक गए ।

घोड़े ने स्वाभाविक मेधा से अपने स्वामी की चाप को पहचान लिया और

वह ज़ोर से हिनहिनाया ।

बाबा भारती दौड़ते हुए अन्दर घुसे । अपने घोड़े के गले से लिपट कर इस प्रकार रोने लगे, जैसे बिछुड़ा हुआ पिता चिरकाल के पश्चात् पुत्र से मिल कर रोता है । बार बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते थे । बार बार उसके मुख पर थपकियां देते थे और कहते थे --"अब कोई ग़रीबों की सहायता से मुंह न मोड़ेगा ।"

○ ○ ○

तेतालीस

प्रायश्चित

श्री भगवतीचरण वर्मा

अगर कबरी बिल्ली घर-भर में किसी से प्रेम करती थी तो रामू की बहू से और अगर रामू की बहू घर-भर में किसी से घृणा करती थी तो कबरी बिल्ली से। रामू की बहू दो महीना हुआ मायके से प्रथम बार ससुराल आयी थी। पति की प्यारी, और सास की दुलारी चौदह वर्ष की बालिका। भंडार-घर की चाबी उसकी करधनी में लटकने लगी, नौकरों पर उसका हुक्म चलने लगा और रामू की बहू घर में सब कुछ। सास जी ने माला ली और पूजा-पाठ में मन लगाया।

लेकिन ठहरी[1] चौदह वर्ष की बालिका, जो कभी भंडार-घर खुला है, तो कभी वह भंडार-घर में बैठे बैठे सो गयी। कबरी बिल्ली को मौका मिला, घी-दूध पर अब वह जुट गयी। रामू की बहू हांडी में घी रखते रखते ऊंघ गयी और बचा हुआ घी कबरी के पेट में[2]। रामू की बहू दूध ढक कर मिसरानी को जिन्स देने गयी और दूध नदारद। अगर बात यहां तक रह जाती, तो भी बुरा न था। कबरी रामू की बहू को, कुछ ऐसा परक गयी थी कि रामू की बहू के लिए खाना-पीना दुश्वार हो गया। रामू की बहू के कमरे में रबड़ी से भरी

कटोरी पंहुची और रामू जब तक आए तब तक कटोरी साफ़ चटी हुई। बाज़ार से बालाई आयी और जब तक रामू की बहू ने पान लगाया, बालाई गायब। रामू की बहू ने तय कर लिया कि, या तो वही घर में रहेगी या फिर कबरी बिल्ली ही। मोरचाबंदी की गई और दोनों सतर्क। बिल्ली फंसाने का कटघरा आया, उसमें दूध बालाई, चूहे और बिल्ली को स्वादिष्ट लगनेवाले विविध प्रकार के व्यंजन रखे गए। लेकिन बिल्ली ने उधर निगाह तक न डाली। इधर कबरी ने सरगर्मी दिखायी। अभी तक तो वह रामू की बहू से डरती थी, पर अब वह साथ लग गयी। लेकिन इतने फ़ासले पर कि रामू की बहू उस पर हाथ न लगा सके।

कबरी के हौंसले बढ़ जाने से रामू की बहू को घर में रहना मुश्किल हो गया। उसे मिलती थीं सास की मीठी झिड़कियां और पति देव को मिलता था रूखा - सूखा भोजन।

एक दिन रामू की बहू ने रामू के लिए खीर बनायी। पिस्ता, बादाम, मखाने और तरह - तरह के मेवे दूध में औंटे गए। सोने का वर्क चिपकाया गया और खीर से भर कर कटोरा कमरे के एक ऊंचे ताक पर रखा गया, जहाँ बिल्ली न पहुंच सके। रामू की बहू इसके बाद पान लगाने में लग गयी। उधर कमरे में बिल्ली आयी, ताक़ के नीचे खड़ी होकर उसने ऊपर कटोरे की ओर देखा सूंघा -- माल अच्छा है, ताक की ऊंचाई अन्दाजी। पान लगाकर रामू की बहू सास

जी को पान देने चली गयी और कबरी ने छंलाग मारी, पंजा कटोरे में लगा और कटोरा झनझनाहट की आवाज के साथ फर्श पर आ गिरा ।

आवाज़ रामू की बहू के कान में पहुंची, सास के सामने पान फेंक कर दौडी । क्या देखती है कि कटोरा टुकडे-टुकडे, खीर फ़र्श पर, और बिल्ली डटकर खीर उडा रही है । रामू की बहू को देखते ही कबरी भाग गयी ।

रामू की बहू पर खून सवार हो गया उसने सोचा कि न रहे बांस न बजे बांसुरी । रामू की बहू ने कबरी की हत्या पर कमर कस ली । रात-भर उसे नींद न आयी, किस तरह पर कबरी पर वार किया जाएकि फिर ज़िन्दा न बचे, यही पडे पडे सोचती रही । सुबह हुई और वह देखती है कि कबरी देहरी पर बैठी बडे प्रेम से उसे देख रही है ।

रामू की बहू ने कुछ सोचा, इसके बाद वह मुस्कुराती हुई उठी । कबरी रामू की बहू के उठते ही खिसक गयी । रामू की बहू एक कटोरा दूध कमारे के दरवाज़े की देहरी पर रख कर चली गयी । हाथ में पाटा लेकर वह लौटी, तो देखती क्या है कि कबरी दूध पर जुटी हुए है । मौका हाथ में आ गया । सारा बल लगाकर पाटा उसने बिल्ली पर पटक दिया । कबरी न हिली, न डुली, न चीखी, न चिल्लायी, बस एकदम उलट गयी ।

आवाज़ जो हुई तो महरी झाडू छोड कर, मिसरानी रसोई छोड कर और

सास पूजा छोड़ कर घटना - स्थल पर उपस्थित हो गयीं । रामू की बहू सर झुकाए हुए अपराधिनी की भांति बातें सुन रही है ।

महरी बोली --"अरे राम, बिल्ली तो मर गयी । मां जी, बिल्ली की हत्या बहू से हो गई, यह तो बुरा हुआ ।"

मिसरानी बोली --"मां जी, बिल्ली की हत्या और आदमी की हत्या बराबर है ।"

सास जी बोलीं --"हां, ठीक ही तो कहती हो । अब जब तक बहू के सिर से हत्या न उतर जाए तब तक न कोई पानी पी सकता है न खाना खा सकता है । यह क्या कर डाला ।"

महरी ने कहा --"फिर क्या हो ? कहो, तो पंडित जी को बुला लाऊं ?"

सास जी की जान में जान आयी --"अरे हां, जल्दी दौड़ के पंडित जी को बुला ला ।"

बिल्ली की हत्या की ख़बर बिजली की तरह पड़ोस में फैल गई । पड़ोस की औरतों का रामू के घर में तांता बंध गया । चारों तरफ़ से प्रश्नों की बौछार और रामू की बहू सिर झुकाए बैठी रही ।

पंडित परमसुख को जब यह ख़बर मिली, उस समय वे पूजा कर रहे थे । ख़बर पाते ही, वे उठ पड़े । पंडिताइन से मुस्कुराते हुए बोले -- भोजन न बनाना । लाला घासीराम की पतोहू ने बिल्ली मार डाली । प्रायश्चित होगा --

पकवानों पर हाथ लगेगा ।

पंडित परमसुख चौबे छोटे से, मोटे से आदमी थे । लंबाई चार फ़ुट दस इंच और तोंद का घेरा अठावन इंच । चेहरा गोल मटोल, मूंछें बडी, रंग गोरा, चोटी कमर तक पंहुची हुई । कहा जाता है कि मथुरा में जब पंसेरी ख़ुराक वाले पंडितों को ढूंढा जाता था, तो पंडित परमसुख जी को उस लिस्ट में प्रथम स्थान दिया जाता था ।

पंडित परमसुख पंहुचे और कोरम पूरा हुआ । पंचायत बैठी -- सास जी, मिसरानी, किसनू की मां, छन्नू की दादी और पंडित परमसुख । बाकी स्त्रियां बहू से सहानुभूति प्रकट कर रहीं थीं । किसनू की मां ने कहा --"पंडित जी बिल्ली की हत्या करने से कौन सा नरक मिलता है ?"

पंडित परमसुख ने पत्रा देखते हुए कहा --"बिल्ली की हत्या अकेले से तो नरक का नाम नहीं बतलाया जा सकता, वह मुहूरत भी मालूम हो जब बिल्ली की हत्या हुई, तभी नरक का पता लग सकता है ।"

"यही कोई सात बजे सुबह," मिसरानी ने कहा ।

पंडित परमसुख ने पत्रे के पन्ने उलटे, अक्षरों पर उंगलियां चलायीं, माथे पर हाथ लगाया और कुछ सोचा । चेहरे पर धुंधलापन आया । माथे पर बल पडे, नाक कुछ सिकुडी और स्वर गंभीर हो गया --"हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, बडा

बुरा हुआ, प्रातः काल, ब्राह्ममुहूर्त में बिल्ली की हत्या । घोर कुंभीपाक नरक का विधान है । रामू की मां, यह तो बड़ा बुरा हुआ ।”

रामू की मां की आँखों में आंसू आ गए --“तो, फिर पंडित जी, अब क्या होगा, आप ही बतलाएं ।”

पंडित परमसुख मुस्कुराये --“रामू की मां, चिन्ता की कौन सी बात है ? शास्त्रों में प्रायश्चित का विधान है, सो प्रायश्चित से सब कुछ ठीक हो जाएगा ।”

रामू की मां ने कहा --“पंडित जी, इसलिए तो आप को बुलवाया था । अब आगे बतलाओ कि क्या किया जाए ?”

“किया क्या जाए ? यही एक सोने की बिल्ली बनवा कर बहू से दान करवा दी जाए । जब तक बिल्ली न दे दी जाएगी, तब तक तो घर अपवित्र रहेगा, बिल्ली दान देने के बाद इक्कीस दिन का पाठ हो जाए ।”

छन्नू की दादी ने कहा --“हां, और क्या ? पंडित जी तो ठीक कहते हैं, बिल्ली दान दे दी जाए और पाठ फिर हो जाए ।”

रामू की मां ने कहा --“तो पंडित जी कितने तोले की बिल्ली बनवाई जाए ?”

पंडित परमसुख मुस्कुराए । अपनी तोंद पर हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा --“बिल्ली कितने तोले की बनवाई जाए ? अरे रामू की मां । शास्त्रों में तो लिखा है कि बिल्ली के वज़न भर सोने की बिल्ली बनवायी जाए । कम से कम

इक्कीस तोले की बिल्ली बनवा के दान करवा दो और आगे तो अपनी श्रद्धा ।"

रामू की मां ने आंखे फाड़ कर पंडित परमसुख को देखा --"अरे बाप रे । इक्कीस तोला सोना । पंडित जी यह तो बहुत है, तोला भर की बिल्ली से काम न निकलेगा ?"

पंडित परमसुख हंस पड़े --"रामू की मां । एक तोला सोने की बिल्ली । बहू के सिर बड़ा पाप है, इसमें इतना लोभ ठीक नहीं ।"

मोल तोल शुरु हुआ और मामला ग्यारह तोले की बिल्ली पर ठीक हो गया । इसके बाद पूजा पाठ की बारी आयी । पंडित परमसुख ने कहा -- " उसमे क्या मुश्किल है, रामू की मां, मैं पाठ कर दिया करुंगा, पूजा की सामग्री तुम हमारे घर भिजवा देना ।" "पूजा का सामान कितना लगेगा ?"

" अरे, कम से कम सामान में पूजा कर देंगे, दान के लिए करीब दस मन गेहूं, एक मन चावल, एक मन दाल, मन-भर तिल, पांच मन जौ, पांच मन चना, चार पंसेरी घी और मन भर नमक भी लगेगा । बस इतने से काम चल जाएगा।"

" अरे बाप रे । इतना सामान । पंडित जी, इस में तो सौ डेढ़ सौ रुपया ख़र्च हो जाएगा"-- रामू की मां ने रुँआसी हो कर कहा ।

" फिर इससे कम में तो काम न चलेगा । बिल्ली की हत्या कितना बड़ा पाप है रामू की मां । ख़र्च को देखते वक्त पहले बहू के पाप को देख लो ।

यह तो प्रायश्चित है कोई हंसी खेल थोड़े ही है ?"

पंडित परमसुख की बात से पंच प्रभावित हुए। किसनू की मां ने कहा "पंडित जी ठीक तो कहते हैं, बिल्ली की हत्या कोई छोटा पाप तो नहीं। बड़े पाप के लिए बड़ा ख़र्चा भी चाहिए।"

छन्नू की दादी ने कहा --"और नहीं तो क्या ? दान-पुन्न से ही पाप कटते हैं।" मिसरानी ने कहा --"और फिर मां जी आप लोग बड़े आदमी ठहरे।"

रामू की मां ने अपने चारों ओर देखा, सभी पंच पंडित जी के साथ। एक ठंडी सांस लेते हुए रामू की मां ने कहा --"अब तो जो नाच नचाओगे नाचना ही पड़ेगा।"

पंडित परमसुख ज़रा नाराज़ होकर बोले --"रामू की मां यह तो खुशी की बात है। अगर तुम्हें यह अच्छा नहीं लगता तो यह न करो। मैं चला।" इतना कह कर पंडित जी ने पोथी पत्रा बटोरा।

रामू की मां ने पंडित जी के पैर पकड़े और पंडित जी ने अब जम कर आसन जमाया।

"और क्या हो ?"

" इक्कीस दिन के पाठ के इक्कीस रुपये और इक्कीस दिन तक दोनो वखत

पांच पांच ब्राह्मणों को भोजन करवाना पड़ेगा।" कुछ रुक कर पंडित परमसुख ने कहा -- "सो इसकी चिन्ता न करो, मैं अकेले दोनों समय भोजन कर लूंगा और मेरे अकेले भोजन करने से पांच ब्राह्मणों के भोजन का फल मिल जाएगा।

' अच्छा तो फिर प्रायश्चित का प्रबंध करवाओ, रामू की मां। ग्यारह तोले सोना निकालो, मैं उसकी बिल्ली बनवा लाऊं। दो घंटे में मैं बनवा कर लौटूंगा तब तक पूजा का प्रबंध कर रखो। और देखो पूजा के लिए -- "

पंडित जी की बात ख़त्म भी न हुई थी कि महरी हांफती हुई कमरे में घुस आयी और सब लोग चौंक उठे। रामू की मां ने घबड़ा कर पूछा -- "अरी क्या हुआ री ?"

महरी ने लड़खड़ाते स्वर में कहा -- "मां जी बिल्ली तो उठ कर भाग गयी।"

० ० ०

चवालीस

बर्त राम्का: एक शाम

निर्मल वर्मा

बर्त राम्का एक छोटा सा शब्द, एक नाम। प्राग के लाखों घरों के जमघट के बीच एक साधारण से घर का नाम---बार्ड का पुराना, ज़र्द तख्ता भीग रहा है---बारिश की बूंदों में टप्,टप्। पेडों के झुरमुटे के बीच वह घर दूर से ही दीख जाता है। हम सीढियों के पास खडे हैं। मैं सोचता हूं, मोत्सार्त इन्हीं सीढियों से उतरकर पुराने शहर के थियेटर जाते होंगे।

o o o

उन दिनों बर्त राम्का जहां मोत्सार्त ठहरे थे शहर की सीमाओं से अलग था। यह सोचकर मुझे आश्चर्य हुआ कि हर शाम मोत्सार्त इतनी दूर पैदल ही थियेटर जाया करते थे। वह उन दिनों अपने नये ऑपेरा डॉन जुआन का रिहर्सल देखने प्राग आये थे। कहते हैं, थियेटर जाते हुए मोत्सार्त एक विशेष रेस्तरां में एक गिलास शराब पीने अवश्य रुक जाते थे। वापस जाते हुए आधी रात बीत जाती थी। उन दिनों के प्राग का एकमात्र पुल चार्ल्स ब्रिज

पार करने के बाद वह एक छोटे से काफ़ी हाउस का दरवाज़ा खटखटाते थे। काफ़ी हाउस का मालिक, जो उस समय सो रहा होता था, दरवाज़े पर थपथपाहट सुन एकदम जाग उठता था। वह जानता था कि यह मोत्सार्त ही होंगे। कुछ ही देर में कमरा काफ़ी की गन्ध से महकने लगता था। अब भी उसी स्थान पर काफ़ी हाउस की टूटी पुरानी इमारत खड़ी है।

वे शुरु पतझर के दिन थे। प्राग की गलियों में अंगूरलताओं की गंध तैरती रहती थी। जिन दिनों मोत्सार्त बर्तराम्का आए थे, गुलाब के फूलों की आख़िरी पंखुड़ियां झड़ रही थी। वाटिका अब भी है, पेड़ों की छांह में वह बेंच भी, जिसे कभी मोत्सार्त की उंगलियों ने छुआ होगा।

मोत्सार्त का कमरा---अलमारी में सजी उन की किताबें, उनके ख़त। हम धीरे धीरे आगे बढ़ते जाते हैं। जिस व्यक्ति की आत्मा का संस्पर्श आजतक केवल ग्रामोफ़ोन के रेकर्डों से ही मिलता है, आज उसके कमरे में चलते हुए, उन की निजी चीज़ों को छूते हुए, एक अजीब सी झिझक महसूस होती है।

मैं एक छोटी सी खिड़की के सामने आकर खड़ा हो गया। बाहर प्राग का आकाश फैला था। एक खिड़की की भी एक कहानी है। उन दिनों मोत्सार्त का प्रसिद्ध ऑपेरा, डान जुआन प्राग में प्रस्तुत किया जाने वाला था। सब तैयारी हो चुकी थी, शहर की दीवारों पर ऑपेरा के पोस्टर थे। प्राग निवासी

महीनो से मोत्सार्त के ऑपेरा की बाट जोह रहे थे । उन्हें गर्व था कि डॉन जुआन का उद्घाटन मोत्सार्त के शहर वियेना में नहीं बल्कि प्राग में होने जा रहा है । यदि कोई परेशान था तो वह था ऑपेरा का निर्देशक, क्यों कि मोत्सार्त ने अभी तक अपने ऑपेरा का पूर्वरंग नहीं लिखा था । वह हमेशा उसे कल पर टाल देते थे । अन्त में एक रात को उनके मित्रों ने उन्हें इस कमरे में बन्द कर दिया कि जब तक वह पूर्वरंग न लिख लेंगे, उन्हें कमरे से नहीं निकाला जाएगा । उन्हें खाना व शराब भी इसी खिड़की से पहुंचायी गयी । कौन कह सकता है कि यह घटना सच है । किन्तु यह सच है कि मोत्सार्त ने पूर्वरंग उद्घाटन के दिन ही दिया था, जब काग़ज़ पर स्याही पूरी तरह सूखी भी न थी ।

मोत्सार्त प्रागवासियों के बहुत प्रिय थे । मोत्सार्त की मृत्यु का समाचार सुनकर हज़ारों निवासी 'सेन्ट निकोलस चर्च' के सामने इकट्ठे हुए थे । मोत्सार्त का रिकुईम मास भी इस अवसर पर रोती सिसकती भीड़ के सामने गाया गया था। किन्तु वियेना में उनकी अर्थी के संग केवल कुछ ही मित्र गए थे । एक साधारण से कब्रिस्तान में उन्हें दफ़ना दिया गया । आज कोई नहीं जानता कि मोत्सार्त की कब्र कहां है ।

○ ○ ○

पेंतालीस

महात्मा गांधी के भाषण

(लिखित संदेश)

एक

हिंदुस्तान का बंटवारा और प्रांतों के जो टुकडे किये जाने वाले हैं, वह हमारे लिए कसौटी समझिये । आज के अखबारों में जिक्र किया जाता है कि लंदन में हिंदुस्तान के बंटवारे का जो बिल पार्लमेंट में रखा जायगा उसकी रस्म धूमधाम से मनाई जायगी और हिंदुस्तान जो आजतक एक कौम रहा है, दो कौमें या दो नेशन बना दिया जायगा । ऐसे उदासी के मौके पर खुशी किस बात की । हमने तो यह श्रद्धा दिल में रखी है कि हम जुदा हो रहे हैं तो भी वह जुदाई एक ही खानदान के भाइयों की होगी, और हम मित्र तो रहेंगे ही । अगर अखबारों की खबर ठीक है तो बरतानिया हमें दो राष्ट्र बनाने वाला है और वह भी खुशी के नारे लगाकर । क्या यह उनकी हमपर आखिरी गोली होगी ? मैं उम्मीद करता हूं कि नहीं ।

लेकिन अगर हिंदुस्तान के बडे हिस्से ने, अर्थात् इंडियन यूनियन ने अपने धर्म का पालन किया तो हम उनकी चाल को मात कर सकेंगे । बंटवारे

से तो हम आज बच नहीं सकते, चाहे वह हमें कितना ही नापसंद हो । लेकिन धर्म का पालन यह है कि हम सीधे रास्ते पर चलें, अपने आपको हमेशा एक ही कौम समझें और मुसलमान अल्पसंख्यकों को कभी भी परदेशी मानने से साफ इन्कार करें । हिंदुस्तान उन का भी उतना ही घर है जितना कि हमारा ।

इसके स्पष्ट मानी यह हुए कि हमें हिंदू-धर्म में क्रांतिकारी परिवर्तन करना होगा । हमारे ऊपर अछूतों का कलंक लगाया जाता है और वह हमारी कमज़ोरी जरूर है । पढ़ने में आता है कि मुस्लिम लीग के नेता आज अछूतों को यह झांसा दे रहे हैं कि पाकिस्तान में उन्हें अलग चुनाव का हक मिलेगा । क्या यह पाकिस्तानी इस्लाम में शामिल होने की दावत है ? ज़बर्दस्ती से जो हाल में लोगों से मज़हब बदलवाया ऐसी और बात चली है, उसके बारे में मैं कुछ नहीं कहना चाहता । चूँकि मैंनें अछूत भाइयों से खुद ऐसी बातें सुनी हैं । मुझे जरूर डर है कि क्या होने वाला है ।

इस डर या डरावे का जवाब एक ही हो सकता है, वह यह कि हिंदू-धर्म से छूतछात का भूत बिल्कुल निकल जाय । हिंदुस्तान में कोई अछूत न हो । हिंदू सब एक हों । कोई ऊंचा, कोई नीचा नहीं । जिन गरीब लोगों की ओर मसलन अछूत या आदिवासी, हम आजतक बेदरकार रहे हैं, उनकी हम खास देखभाल करें । उन्हें पढ़ायें उनके रहन-सहन को देखें, आदि । वोटरों की

फेहरिस्त में सब एक ही हों। आज की हालत न रहे, इससे कई दर्जे बेहतर हो। क्या हिंदू धर्म इतनी ऊंचाई तक चढ सकेगा या कि झूठी मिथ्या बातों से और दूसरों की खराबी का अनुकरण या नकल कर के अपना आत्मघात करेगा ? सवाल तो हमारे सामने यही है।

(२३ जून, १९४७)

दो

भाइयो और बहनो[१],

आज हम सब दीवाने बन गए हैं, मूरख बन गए हैं। ऐसा नहीं है कि सिख ही दीवाने बने, हिंदू ही या मुसलमान ही दीवाने बन गए हैं। मुझसे कहा जाता है कि सारा आरंभ तो मुसलमानोंने किया। वह ठीक है, मैं तो मानता हूं कि उन्होंने आरंभ किया, इसमें कोई शक नहीं है। लेकिन वह याद करके मैं करुंगा क्या ? आज क्या करना है, मुझको तो वह देखना है। हिंदुस्तानरुपी गजराजको हो सके तो छुडाना चाहता हूं। मुझको क्या करना चाहिए?

मुझको तो ईश्वर का सहारा लेना चाहिए। मेरा पराक्रम कुछ कर सके तो मुझको खुशी है। पर मेरा शरीर तो थोडी हड्डी है, थोडी चर्बी। ऐसा आदमी क्या कर सकता है ? किसको समझा सकता है ? लेकिन ईश्वर सबकुछ कर सकता है। तो मैं रात-दिन ईश्वर को पकडता हूं। हे भगवान,

तू अब आ, गजराज डूब रहा है । हिंदुस्तान डूब रहा है, उसे बचा[२] ।

हिंदुस्तान में सिवा हिंदू के कोई रहे ही नहीं, मुसलमान रहें तो गुलाम होकर रहें तो ऐसी बात नहीं है । आप देखें तो जवाहरलाल क्या कहता है। हम तो तंगी में पड़े हैं। दूसरे जो काम करने हैं उन्हें नहीं कर सकते । इसी एक काम में पड़े हैं। अगर मान लें कि सब मुसलमान गंदे हैं, पाकिस्तान में सब बिगड़ गए हैं तो उससे हमको क्या ? पाकिस्तान में सब गंदे है तो क्या हुआ ? मैं तो आपको कहूंगा कि हम तो हिंदुस्तान को सुंदर ही रखें जिससे सारी गंदगी बह जाय । हमारा यह काम नहीं हो सकता कि कोई गंदा करे तो हम भी गंदा करें । मेरे पास मुसलमान भाई भी आते हैं । उनसे बातें करता हूं, मोहब्बत करता हूं और उनको कहता हूं कि आप क्यों डरते हैं । आप तगड़े बन जायं । आप क्यों घर-बार छोड़ते हैं । आप जाकर बैठिए अपने घर में । यहां वे तो शरारत नहीं कर सकते । इसलिए मैं चाहता हूं कि सब हिंदू भले हो जायं । सब सिख भले बन जायं । जो मुसलमान पड़े हैं और जो पाकिस्तान नहीं जाना चाहते है उनसे सिख और हिंदू कहें कि आप अपने घर में जाकर बैठो[३] । यहां दुनिया में सबसे बड़ी मस्जिद पड़ी है । हम बहुत-से मुसलमानों को मार डालें और जो बाकी बचे वे भयके कारण पाकिस्तान चले जायं, तो फिर मस्जिद का क्या होगा ? आप मस्जिद को

क्या पाकिस्तान में भेजोगे, या मस्जिद को ढाह दोगे, या मस्जिद का शिवालय बनाओगे ? मान लो कि कोई हिंदू ऐसा गुमान भी करे कि शिवालय बनायेंगे, सिख ऐसा समझें कि हम तो वहां गुरुद्वारा बनायेंगे । मैं तो कहूंगा कि वह सिख-धर्म और हिंदू-धर्म को दफ़नाने की कोशिश करनी है । इस तरह तो धर्म बन नहीं सकता है ।

पाकिस्तान में जानेवाले जो जाना चाहते हैं वे यहां से चले जायं । मगर जो हिंदुओं के डर के कारण चले गए, पुराने किले में हैं, हुमायूं के मकबरे में हैं, वे क्यों वहां रहें ? मैंने तो उनको कहा है कि जो अपने घरों में हैं वे वहीं पड़े रहें और पीछे हिंदू मारें-पीटें, काट डालें तो भी न हटें । मैं आपके पीछे कट जाऊंगा । मेरी जान है, वह जान मैं फ़िदा कर दूंगा । या तो करुंगा या मरुंगा । उनको कुछ हौसला आया और उन्होंने कहा कि हम यहीं मरेंगे, घर है वहां से हटेंगे नहीं । मेरा खयाल है कोई मुसलमान वहां से हटेगा नहीं । अपने घरों में पड़े हैं, सदियों से यहां हैं। लेकिन वह नहीं हो सकता । जो यहां से चले गए हैं उनका क्या करें ? मैंने कहा कि उनको हम अभी नहीं लायेंगे । पुलिस के मार्फ़त, मिलिटरी के मार्फ़त थोड़े ही लाना है ? जब हिंदू और सिख उन्हें कहें कि आप तो हमारे दोस्त हैं आप आइए अपने घरों में, आपके लिए कोई मिलिटरी नहीं चाहिए, कोई

पुलिस नहीं चाहिए, हम आपकी मिलिटरी हैं, पुलिस हैं, हम सब भाई-भाई होकर रहेंगे तब उन्हें लावेंगे। हमने दिल्ली मे ऐसा कर बतलाया तो मैं आपको कहता हूं कि पाकिस्तान में हमारा रास्ता बिलकुल साफ हो जायगा और एक नया जीवन पैदा हो जायगा। पाकिस्तान में जाकर मैं उनको नहीं छोड़ूंगा। वहां के हिंदू और सिखों के लिए जाकर मरूंगा। मुझे तो अच्छा लगे कि मैं वहां मरूं। मुझे तो यहां भी मरना अच्छा लगे, मगर यहां जो मैं कहता हूं नहीं हो सकता है तो मुझे मरना है। मुझको भी गुस्सा आता है, लेकिन इन्सान तो ऐसा होना चाहिए कि गुस्से को पी जाय। मैंने सुना कि काफ़ी औरतें जो अपनी शर्म को गंवाना नहीं चाहती थीं मर गईं। काफ़ी मर्दों ने खुद अपनी औरतों को मार डाला। मुझे तो यह बड़ा अच्छा लगता है। क्योंकि मैं समझता हूं कि वे हिन्दुस्तान को बुज़दिल नहीं बनाते हैं। आखिर मरना-जीना यह तो थोड़े दिनों का खेल है। गया तो गया[४], लेकिन बहादुरी से गया। अपनी शर्म नहीं बेच डाली। यह नहीं था कि उनको जान प्यारी न थी, लेकिन उनको मुसलमान जबर्दस्ती इस्लाम में लायें और उनकी मिट्टी ख्वार करें, उससे बेहतर था बहादुरी से मर जाना। औरतें मर गईं, दो-चार नहीं काफी औरतें मरीं। यह सब सुनता हूं। मेरी तो आंख खुशी से नाचना शुरु कर देती है कि ऐसी औरतें हिंदुस्तान में पड़ी हैं। लेकिन जो लोग

भागे हैं वे लोग कहां जायं ? उनको वापस जाना है और शान के साथ। हम अपने यहां तो न्याय ही करें। अपना दामन शुद्ध रक्खें और अपने हाथ शुद्ध रक्खें, तब हम सारी दुनिया के सामने न्याय मांग सकते हैं। मैंने कह दिया है कि जो मुसलमान हथियार रखते हैं, उन मुसलमानों को हथियार छोड़ देना चाहिए। परसों जैसा मैंने कहा है, सब लोग हथियारों को दे दें। मैं समझता हूं कि उसमें कुछ देर लगेगी, लेकिन बात चल गई है हथियार तो छोड़ना ही है। हथियार से बच नहीं सकते।

दूसरी, मेरे पास बड़ी शिकायत आती है जो हमारे सिपाही लोग, मिलिटरीवाले हैं, हिंदू हैं, सिख भी हैं, उसमें क्रिस्टी भी पड़े हैं, गोरखे पड़े हैं, वे सब रक्षक हैं पर भक्षक बन गए हैं। यह कहां तक सच है और कहां तक झूठ है, मैं नहीं जानता हूं। लेकिन मैं अपनी आवाज उन पुलिस वालों तक पहुंचाना चाहता हूं कि आप शरीफ बनें। कहीं तो ऐसा सुना है कि वे खुद लूट लेते हैं। मुझको आज सुनाया गया कि कनाट-प्लेस में कुछ हो गया और वहां जो सिपाही और पुलिस के लोग थे उन्होंने लूटना शुरु कर दिया। मुमकिन है कि वह सब गलत हो। लेकिन उसमें कुछ भी सच्चाई हो तो मैं सिपाही और मिलिटरी से कहूंगा कि अंग्रेज का जमाना चला गया। तब जो कुछ करना चाहते थे वे कर सकते थे, लेकिन आज तो वे हिंदुस्तान के सिपाही

बन गए हैं, उन्हें मुसलमान का दुश्मन नहीं बनना है, उनको तो हुक्म मिले किउसकी रक्षा करो तो वह करनी ही चाहिए ।

(१८सितम्बर, १९४७)

तीन

(आज सायंकाल प्रार्थना-सभा के समय कुरान-शरीफ की आयत पढ़े जाने पर एक व्यक्ति द्वारा आपत्ति की गई जिसके कारण प्रार्थना न हो सकी । लोगों ने आपत्ति करने वाले को अपना विरोध वापस ले लेने को समझाया, लेकिन बाहर जाकर वह फिर भीतर आ जाया करता था । इसलिए गांधीजी को प्रार्थना-सभा के लिए आते समय तीन बार लौटना पडा । अंत में जब वह आदमी चला गया तब लोगों के अनुरोध करने पर गांधीजी ने थोडे समय के लिए भाषण करते हुए कहा ---)

भाइयो और बहनो,

यहां क्या हो रहा था यह मुझे पता चलता रहता था । इससे मुझे दुख हुआ । मैं आज तो यह बता देना चाहता हूँ कि यह एक निजी आदमी का घर (बिडलाभवन) है । यहां गोलमाल नहीं होना चाहिए । जो लोग बाहर से यहां आ जाते हैं वे आएं, लेकिन आने के बाद शिकायत करना यह सभ्यता नहीं है । आज एक भाई कहते हैं कि आज प्रार्थना नहीं होने दूंगा । तब

मुझे विचार करना पड़ा कि इस हालत में मुझे प्रार्थना करनी चाहिए या नहीं। शिकायत करने वाले को आपने कहा तो वे चले गए, फिर आए, फिर चले गए, फिर आए। यह मेरे लिए अच्छा नहीं है। इसका मतलब यह है कि उसका दिल दुखित होता है। यों तो मैं समझता हूं कि आप लोगों में से काफी लोग दुखित होंगे कि प्रार्थना में कुरान का एक टुकड़ा होता है। लेकिन मैं लाचार हूं, क्योंकि वह मेरी प्रार्थना का एक अविभाज्य अंग है। यहां प्रार्थना नहीं होगी, तो क्या मैं प्रार्थना नहीं करुंगा ? एक तरफ धर्म बताता है कि मैं प्रार्थना करुं। मैं यहां प्रार्थना नहीं करुंगा, इसलिए घर में प्रार्थना न करुं ऐसी बात नहीं है। दुनिया में मेरे साथ कोई भी न रहे तो भी प्रार्थना करुंगा। दिल में ही प्रार्थना हो सकती है। मुझको यहां अहिंसा की दृष्टि से सोचना पड़ता है। उसी निगाह से देखना चाहिए कि मेरा धर्म क्या है ? यदि वह भाई चला जाता है तो मैं प्रार्थना करुं, यह मुझे अच्छा नहीं लगता। मैं आज प्रार्थना तो करना नहीं चाहता हूं, बहस भी नहीं करना चाहता हूं, तो भी करुंगा, क्योंकि समय भी नाजुक पड़ा है। इसलिए लोग सुनना चाहते हैं कि गांधी क्या कहता है। मैं भी कहना चाहता हूं कि लोग मुझे समझ तो लें कि मैं क्या कहना चाहता हूं। लेकिन मैं लाचार बन गया, इसलिए बहस नहीं करुंगा।

मुझे सोचना है कि मैं जो प्रार्थना करता हूं उसे बंद कर दूं और क्या बहस में ही रहूं ? यह बड़ा प्रश्न है । इन प्रश्न पर मुझे सोचना पड़ेगा । आज मैं कहना नहीं चाहता और बहस भी नहीं करना चाहता । बहस ही करुं तो प्रार्थना छोड़ दूं । मैं इसके बारे में एक प्रेस-वक्तव्य निकाल दूंगा ।

जब देखा कि आप लोग हैं तो मैं आ गया । मेरी सभ्यता और अहिंसा बताती है कि मैं अपना दिल खोलकर आप के सामने रख दूं और बता दूं कि मैं कौन हूं । मेरे पास इस जगत में सत्य और अहिंसा के सिवा कोई दूसरी चीज नहीं है । आप सत्य और अहिंसा को पहचान लें तो दुनिया में बड़े-बड़े काम हो सकते हैं । मैं कोई लम्बी-चौड़ी बात नहीं करना चाहता । दुनिया में बड़ी-बड़ी बातें होती हैं, लेकिन ईश्वर का जो नियम है उसे कौन फेर सकता है और दुनिया में जो बड़े-बड़े नियम हैं उन्हें ईश्वर फेर नहीं सकता । मैं समझता हूं कि हम अभिमान में पड़े हैं, अज्ञान में पड़े हैं, इसलिए यह मान लेते हैं कि सत्य तो इतनी बड़ी चीज है कि वह व्यापार में कैसे चल सकती है ? व्यवहार में कैसे चल सकती है ? अहिंसा चलेगी कैसे ? मुझे लोग गाली देते हैं तो लोग कहते हैं कि जब कोई मुझे दो गाली देता है तो मैं एक गाली तो दूं । गाली के सामने थप्पड़ क्यों न लगा दूं । इस के पीछे क्या होता है कि हम आगे नहीं बढ़ते हैं । लेकिन हम को तो आगे

बढ़ना ही है, यही मैं समझता हूं कि जन्म लेने के मानी हैं। मैं स्थिर रह नहीं सकता हूं। स्थिर तो एक ईश्वर है, लेकिन स्थिर होते हुए उपनिषद में बताया गया है कि वह स्थिर भी है और गतिमान भी है। हमेशा गति करता-है--ऐसा जो गति करना है वह स्थिर है, ऐसा लगता है। हम कहां जानते थे कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी अस्थिर है, लेकिन अब हम सीख गए कि गति-सी जो लगती है वह स्थिर है। ईश्वर की ऐसी माया बन गई है। जो स्थिर और अस्थिर है, वह ईश्वर ही है। इसमें स्थिरता-जैसी कोई चीज नहीं है, गति है, गति है तो हमको बढ़ना है। हम मां के पेट से निकले और बढ़े। आगे जाते-जाते वृद्ध होते हैं। ऐसा काम दुनिया में चलता है। जो जन्मता है उसको आगे बढ़ना है, वह बढ़ता ही है। कुछ लोग वृद्धावस्था को गिरना मानते हैं। लेकिन मैं वैसा नहीं मानता। वृद्धावस्था पका हुआ फल है। तो शरीर छूटता है, आत्मा थोड़े छूटती है। वह न मरती है और न गिरती है। आत्मा की गति बढ़ती ही रहती है लेकिन दुनिया में सत्य और अहिंसा के बिना काम नहीं चलता। मैं अब भी दावे के साथ कहता हूं कि सत्य और अहिंसा ऐसी चीज है जिसे बच्चे को भी सीखना चाहिए। इसे अगर माता सीख लेती है तो अपने बच्चे को सिखा सकती है। माता आज-के-आज तो सीख नहीं सकती है, लेकिन कहते हैं कि हम तो आदिकाल से,

करोड़ो साल से हैं तो उस विकास को देखना है। इसके लिए हम में धैर्य तो होना चाहिए। मैं इसके बारे में अधिक तो कहना नहीं चाहता, लेकिन सिवा सत्य और अहिंसा के कुछ नहीं हो सकता। हम विकास नहीं कर सकते।

मैं आज बहस तो नहीं करना चाहता। आप कल ही आएंगे। यदि कल भी किसी को कुरान की आयत पढ़े जानेपर आपत्ति होगी तो उस पर मैं सोचूंगा कि मुझको बहस करना है या नहीं। यदि किसी को शिकायत होगी तो बोलेगा कि शिकायत है, नहीं तो बोलेंगे कि हम प्रार्थना सुनना चाहते हैं और बहस भी। लोगों को समझ लेना चाहिए कि हम गुस्से में नहीं आयंगे। हां, पीछे कोई ठान लें कि हम किसी को सुनने न देंगे और चीखें तो मैं कहूंगा कि आप की हिंसा की कसौटी हो जाएगी और मेरी अहिंसा की परीक्षा हो जायगी? यह भी मालूम हो जायगा कि आप कहां तक जाते हैं? यदि आप मेरे साथ रहेंगे और अहिंसा का साथ देंगे तो अहिंसा के सामने हिंसा रह नहीं सकती, ऐसा मैं दावे के साथ कह सकता हूं। लेकिन शर्त यह है कि मैं जैसा कहूं वैसा आप करें। आप कहें कि हम अंकुश में रहने वाले हैं, निग्रह में रहेंगे और दिल में गुस्सा न करेंगे। वह भाई अज्ञानी है जो कुरान की आयत पर आपत्ति करता है। कुरानशरीफ ने क्या गुनाह किया है? यहां के मुसलमान बिगड़े, इसलिए कुरान बिगड़े यह बात नहीं है। वह तो बुलंद है,

सनातन है, अरबी में है। जो उससे घृणा करता है उससे अधिक अज्ञानी मैं और किसी को नहीं समझता। इसी तरह से शिकायत करने वाले को आप समझा दें। हां, अगर कोई कहे कि वह प्रार्थना सुनना ही नहीं चाहता तो मैं प्रार्थना करुंगा और बहस भी। लेकिन मैं प्रार्थना बंद करता हूं, इसके लिए किसी को आप मारें यह मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। यदि मैं अकेला रहूं और पांच आदमी आवें और कहें कि हम आपको मार डालेंगे तो मैं कहूंगा कि मेरा सिर आपके सामने है। मैं कहूंगा कि पांच क्यों मारें, एक ही आदमी गला काट सकता है। लेकिन तो भी मैं प्रार्थना करुंगा। जब अब आप का दिल ऐसा हो जायगा तब आप न किसी को मारेंगे और न किसी पर गुस्सा करेंगे। शिकायत करने वाला, जिसे हम असभ्य कह सकते हैं, अगर चीख-चीख कर भी शिकायत करेगा तो भी हम प्रार्थना करेंगे। कल प्रार्थना होगी और बहस भी। यदि कल कोई शिकायत करे तो वह शिकायत करके चला जाय। उसके पीछे मैं ख्वार नहीं होना चाहता। मैं गुस्से को काबूमें रखूं, धीरज रखूं तब मेरी गाड़ी आगे चल सकती है। मैं आज इतना ही सुनाना चाहता हूं। अब आप शांति से घर जाइए और बहस न करें। घर जाकर इस पर विचार कीजिए।

३० अक्तूबर, १९४७

० ० ०

चार

चरखा-संघ की जो बैठक हुई थी उसमें ग्राम-उद्योगसंघ की बात मैंने अभी तक छोड रखी थी । थोडा-सा इशारा जरुर कर दिया था । चरखा तो ग्राम-उद्योग का मध्य-बिंदु है । अगर सात लाख गांवों में चरखा न चले तो अन्य गृह-उद्योग भी नहीं चल सकते हैं । चरखा तो सूरज है और दूसरे जो उद्योग हैं वे ग्रह हैं, जो सूरज के इर्द-गिर्द फिरते रहते हैं । अगर सूरज डूब जाय तो दूसरे ग्रह चल नहीं सकते, क्योंकि वे सब सूरज पर ही आश्रित हैं, ऐसा दुनिया में बन गया है । लेकिन देहात का सूरज किसको कहें ? हिंदुस्तान का सूरज तो वह चक्र है कि जो झंडे में मौजूद है, पीछे चाहे आप उसको सुदर्शन चक्र कहें या अशोक राजा का चक्र कहें । मेरी निगाह में तो वह चरखे की निशानी है । अगर वह देहातों में चलता रहे तो अन्य ग्राम-उद्योग भी रुक नहीं सकते, लेकिन उसके चलते रहने पर भी दूसरों को देखना तो है । अगर उसको संभालें ही नहीं वे सब इर्द-गिर्द चलना छोड दें तो फिर जो सूरज है, वह भी बेहाल हो जायगा । जितने हमारे खगोल-शास्त्री कहे जाते हैं उन्होंने यह नहीं देखा है और उन्होंने देखा होगा तो मैं मूर्ख हूं, जानता नहीं हूं । लेकिन मैं तो मानता हूं कि अगर सब ग्रह डूब जाते हैं तो सूरज को भी डूबना है । यह मैं शास्त्रीय तरीके से तो सिद्ध नहीं कर सकता हूं, लेकिन यहां तो मैं सिद्ध कर सकता हूं कि जो दूसरे इर्द-

गिर्द के उद्योग न चलें तो चरखा बेचारा अकेला क्या कर सकता है ? दिल्ली के इर्द-गिर्द क्या थोडे ग्राम पडे हैं । अगर वे सब दिल्ली को आश्रय दें और उनको दिल्ली का आश्रय लेना है तो पीछे वह सब बहुत खूबसूरत काम बन जाता है और आपस-आपस-की लडाई का सारा झगडा भी मिट जाता है । आखिर देहातों में से सब चीजें हमको चाहिएं । आज तो वे चीजें आ नहीं सकती हैं । आप अगर न जानते हों तो जानना चाहिए कि दिल्ली में बहुत से कारीगर मुसलमान थे । वे चले गए । पानीपत में देखो, कितने मुसलमान कंबल वगैरा बनाते थे । आज तो वह धंधा अस्त-व्यस्त हो गया । पीछे अगर हिंदू और सिख वहां गए तो देखा जायगा । लेकिन वे क्यों वहां जाएं ? वे कोई भूखे थोडे ही मरते हैं । हिंदू के पास जो पेशा है उसमें से वह कमा लेता है और मुसलमान के पास जो पेशा है उसमें वह कमा लेता है । अगर तब मुसलमान अपना काम छोडकर यहां से चले जाते हैं तो उसमें हिंदुस्तान का नुकसान ही होता है । इस लिहाज से तो पाकिस्तान और हिंदुस्तान दोनों डूब रहे हैं ।

ग्राम-उद्योग की बात तो एक बडी बुलंद बात है । कल मैंने आपको बताया था मीराबेन उस काम को कर रही है और उस में तो हमारी हकूमत के लोगों का भी हाथ है । वह खाद हम सब अपने घरों में बना सकते हैं ।

हम लोग जो मैला करते हैं वह और गोबर तथा और भी जो कूड़ा-कचरा जमा हो जाता है, वह सब मिला लें। वह इस खूबी से मिल जाता है कि पीछे एक खूबसूरत और सुगंधित खाद बन जाती है।

इसलिए ग्राम-उद्योग और चरखा-संघ का जो काम है वह तभी चल सकता है जब करोड़ों आदमी उसमें मदद दें। अगर वे न दें तो वह काम बिलकुल नहीं चल सकता। चार चीजें, जहां तक मुझको याद है अर्थात् चरखा-संघ, हरिजन-सेवक, ग्राम-उद्योग संघ और तालीमी संघ--जो बनी हैं, चारों की चारों धनिको के लिए नहीं, बल्कि गरीबों के लिए हैं। सब लोगों को इनके काम में हाथ बटाना है। अगर हाथ न बटाए तो वह काम चल नहीं सकता। अगर हम हिंदुस्तान में पंचायत राज्य या लोगों-का राज्य चाहते हैं, तो सब लोगों को उस काम में मदद देनी है। वह कोई हवा में से तो आता नहीं है और न हिमालय से चलकर आता है। वह तो यहां की जनता के द्वारा ही हो सकता है। जनता एक तरह की नींव है, जिसपर हम एक बहुत ऊंचा मकान बना सकते हैं। अगर उसमें सब हाथ दें, तब तो खैर है और अगर न दें तो ठीक है। हम एक-दूसरे से लड़ तो रहे ही है और नतीजा भी उसका वही आकर रहेगा जो यादव लोगों का हुआ था। यदुवंशी तो कृष्ण भी हुए थे, लेकिन पीछे क्या हुआ कि सब लड़ते थे और दूसरों को डराते रहते थे।

शराब पीना, व्यभिचार करना और आपस में लड़ना, उनका काम रह गया था। वह खत्म हो गए। वह नतीजा या तो हिंदुस्तान को आनेवाला है और अगर नहीं आने वाला है तो केवल इससे कि ये चार चीजें बनी हैं उनको हम करते रहें। तभी हम सब आराम से रह सकते हैं।

२० दिसम्बर, १९४७

० ० ०

छियालीस

मेरी वसीयत

जवाहर लाल नेहरु

मुझे मेरे देश की जनता ने मेरे हिन्दुस्तानी भाइयों और बहनों ने, इत्ता प्रेम और इत्ती मोहब्बत दी है कि चाहे जित्ता कुछ करुं, उसके छोटे से छोटे[१] हिस्से का बदला नहीं हो सकता । सच तो यह है कि प्रेम इत्ती कीमती चीज़ है कि इसके बदले में कुछ देना मुमकिन नहीं है । इस दुनिया में बहुत से लोग हुए, जिनको अच्छा समझकर, बड़ा मानकर उनका आदर किया गया, पूजा गयां ˙˙ लेकिन भारत के लोगों ने, छोटे और बड़े, अमीर और गरीब, सभी तबकों के बहनों और भाइयों ने मुझे इत्ता अधिक प्यार किया कि जिसका बयान करना मेरे लिए मुश्किल है, और मैं दब गया । मैं आशा करता हूं कि मैं अपने जीवन के बाक़ी वर्षों में अपने देशवासियों की सेवा करता रहूं, और उनके प्रेम के योग्य होऊं ।

बेशुमार दोस्तों और साथियों के मेरे ऊपर और भी ज़्यादा अहसानात हैं । हम बड़े-बड़े कामों में एक-दूसरे के साथ रहे, शरीक रहे, मिलजुल

कर काम किए । यह तो होता ही है कि जब बड़े काम किए जाते हैं, उनमें सफलता भी होती है, नाकामयाबी भी होती है । मगर हम सभी शरीक रहे, सफलता की खुशी में और नाकामयाबी के दुःख में भी । "मैं चाहता हूं और मन से चाहता हूं कि मेरे मरने के बाद कोई धार्मिक रसमें न अदा की जाए । मैं ऐसी बातों को मानता नहीं हूं और सिर्फ रस्म समझकर बंध जाना धोखे में पड़ना मानता हूं । जब मैं मर जाऊं तो मेरी इच्छा है कि मेरा दाह-संस्कार कर दिया जाए । अगर विदेश में मैं मरुं, तो मेरे शरीर को वहीं जला दिया जाए और मेरी अस्थियां इलाहाबाद भेज दी जाएं । इनमें से मुट्ठी-भर गंगा में डाल दी जाएं और उनके बड़े हिस्सों के साथ क्या किया जाए, मैं आगे बता रहा हूं । इनका कुछ भी हिस्सा, किसी हालत में बचाकर न रखा जाए ।

गंगा में अस्थियों का कुछ हिस्सा डलवाने की इच्छा के पीछे, जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, कोई धार्मिक खयाल नहीं है । इस बारे में मेरी कोई धार्मिक भावना नहीं है । मुझे बचपन से गंगा और यमुना से लगाव रहा है, और जैसे-जैसे बड़ा हुआ, यह लगाव बढ़ता रहा । मैंने मौसमों के बदलने के साथ इनके बदलते हुए रंग और रूप को देखा है और कई बार मुझे याद आई उस इतिहास की, उन परम्पराओं की, पौराणिक गाथाओं की, उन गीतों और कहानियों की, जोकि कई युगों से उनके साथ जुड़ गई हैं और उनके बहते हुए

पानी में घुलमिल गई हैं ।

गंगा तो विशेषकर भारत की नदी है, जनता की प्रिय है, जिससे लिपटी हुई हैं भारत की जातीय स्मृतियां, उसकी आशाएं और उसके भय, उसके विजयगान उसकी विजय और पराजय । गंगा तो भारत की प्राचीन सभ्यता का प्रतीक रही है, निशान रही है-सदा बदलती, सदा बहती-और फिर वही गंगा की गंगा[2]। वह मुझे याद दिलाती है हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों की और गहरी घाटियों की, जिनसे मुझे मोहब्बत रही है, और उनके नीचे के उपजाऊ और दूर-दूर तक फैले मैदान, जहां काम करते मेरी ज़िन्दगी गुज़री है । मैंने सुबह की रोशनी में गंगा को मुस्कराते-कूदते देखा है, और देखा है शाम के साये में उदास, काली-सी चादर ओढ़े हुए, भेद-भरी, जाड़ों मे सिमटी-सी आहिस्ते-आहिस्ते बहती सुन्दर धारा, और बरसात में दहाड़ती, गरजती हुई, समुद्र की तरह चौड़ा सीना लिए, और सागर की बराबरी करने की शक्ति लिए हुए । यही गंगा मेरे लिए निशानी है भारत की प्राचीनता की यादगार की जो बहती आई है वर्तमान तक और बहती चलती जा रही है भविष्य के महासागर की ओर । भले ही मैंने पुरानी परम्पराओं, रीति और रस्मों को छोड़ दिया हो, और मैं चाहता भी हूं कि हिन्दुस्तान इन सब ज़ंजीरों को तोड़ दे जिनमें वह जकड़ा है, जो आगे बढ़ने से रोकती हैं, और जो देश में रहनेवालों में फूट डालती हैं, जो बे-

शुमार-लोगों को दबाए रखती हैं, और जो शरीर-आत्मा के विकास को रोकती है, चाहे यह सब मैं चाहता हूं फिर भी मैं यह नहीं चाहता कि मैं अपने को इन पुरानी बातों से बिलकुल अलग कर लू। मुझे फ़ख्र है इस शानदार उत्तराधिकार का, इस विरासत का जो हमारी रही है और हमारी है, और मुझे यह भी अच्छी तरह से मालूम है कि मैं भी, हम सभी की तरह, इस ज़ंजीर की एक कड़ी हूं, जोकि कभी नहीं और कहीं नहीं टूटी है, और जिसका सिलसिला हिन्दुस्तान के अतीत के इतिहास के प्रारम्भ से चला आता है। यह सिलसिला मैं कभी नहीं तोड़ सकता क्योंकि मैं उसकी बेहद क़द्र करता हूं और इससे मुझे प्रेरणा हिम्मत और हौसला मिलता है।

मेरी इस आकांक्षा की पूर्ति के लिए और भारत की संस्कृति को श्रद्धांजलि भेंट करने के लिए, मैं यह दरखास्त करता हूं कि मेरी भस्म की एक मुट्ठी इलाहाबाद के पास गंगा में डाल दी जाए, जिससे कि वह उस महासागर में पहुंचे, जो सारे हिन्दुस्तान को घेरे हुए है।

मेरी भस्म के बाकी हिस्से का क्या किया जाए ?

मैं चाहता हूं कि इसे हवाई जहाज से ऊंचाई पर ले जाकर बिखेर दिया जाए---उन खेतों पर जहां भारत के किसान परिश्रम करते हैं, ताकि वह भारत की मिट्टी में मिल जाए और उसी का अंग बन जाए।

नेहरु जी ने कहा

क्षुद्रता

कठिनाई मुझे ताकत देती है, असम्भव मुझे ज़िन्दगी देता है, मगर क्षुद्रता, छोटापन, मेरे लिए ज़हर है ।

o o o

देश से प्यार

मुझे भारत पर गर्व है, न केवल उसकी प्राचीन भव्य सम्पत्ति के कारण, बल्कि इस कारण भी कि उसमें अपने मन और आत्मा की खिड़कियों को दूर सुदूर देशों से आनेवाली ताज़ा और बलदायिनी हवाओं के प्रति खुला रखने की आश्चर्यजनक शक्ति है । भारत की शक्ति दुहरी रही है, एक तो उसकी अपनी आंतरिक संस्कृति है, जो युगों में पुष्पित हुई है और दूसरे उसमें बाहरी स्त्रोतों के अनुदान को आत्मसात् करने की सामर्थ्य है । उसकी अपनी धारा इतनी प्रबल है कि वह बाहर से आने वाली धाराओं में विलुप्त नहीं हो सकती और उसमें इतनी प्रबुद्धता है कि वह अपने को उनसे अस्पृश्य भी नहीं रहने देती । यही कारण है कि भारत के सांस्कृतिक इतिहास में निरन्तर समन्वय दिखाई देता है । १९४६

संस्कृत भाषा

मैंने अक्सर सोचा है कि भारत के अतीत में उसके हज़ारों वर्ष के इतिहास में, जिन बहुत-से तत्वों ने उसको विशिष्टता प्रदान की है, उनमें सबसे महत्वपूर्ण कौन-सा है ? मेरे मन में कोई सन्देह नहीं है कि वह एक तत्व संस्कृत भाषा है । मैं समझता हूं कि यही वह तत्व है जिसमें हमारी जाति की प्रतिभा, हमारी जाति की प्रबुद्धता, मूर्तिमान हुई है, और करीब-करीब हर वस्तु जिसका बाद के वर्षों में प्रादुर्भाव हुआ, उसका उत्स और स्त्रोत, किसी न किसी रुप से, यही भव्य भाषा है ।

यह एक असाधारण बात है कि एक ऐसी भाषा, जो बहुत काल पूर्व ही जनसाधारण की भाषा नहीं रही थी, इतनी सजीव और सबल हो, जैसी कि संस्कृत इन हज़ारों वर्षों में रही है ।

(भाषण, १९५६)

○ ○ ○

भारत की तथाकथित सैकड़ों भाषाओं का विषय हमारे आलोचकों के निकट एक प्रिय विषय है, पर वे इन भाषाओं में से एक का भी ज्ञान नहीं रखते । तथ्य यह है कि भारत भाषा के रुप से एक है, और यह केवल लोकशिक्षा के अभाव का परिणाम है कि देश में विविध बोलियां प्रचलित है । कुल मिलाकर दस बड़ी भाषाएं हैं, जो कुछ सीमित क्षेत्रों को छोड़कर सारे देश पर हावी हैं ।

ये दो वर्गो में विभाजित है, भारत आर्य और द्रविड, और इन दोनो के बीच (कड़ी के रुप में) संस्कृत की सामान्य पृष्ठभूमि है ।

(भाषण, १९३६)

o o o

हिन्दी

सवाल यह नहीं कि हिन्दी किसी और भाषा जैसे बंगला या तमिल से उत्तम है । ऐसी कोई बात नहीं । बात केवल इतनी है कि व्यावहारिक दृष्टिकोण से केवल हिन्दी ही एकमात्र सम्भवत अखिल भारतीय भाषा हो सकती है । तमिल सम्भव है, ज़्यादा बेहतर और जानदार भाषा हो । मैं सब भाषाएं नहीं जानता और यह नहीं कह सकता कि कौन-सी बेहतर है । लेकिन मैं यह जानता हूं कि तमिल एक महान भाषा है, बंगला एक महान भाषा है और भारत की अन्य भाषाएं भी महान हैं । हिन्दी के किसी अन्य भाषा से बेहतर होने का कोई सवाल नहीं है, लेकिन परिस्थितियां जैसी कुछ भी हैं, उनमें केवल वही एक उपयुक्त अखिल भारतीय भाषा है

(भाषण, १९५४)

हिन्दी का विचार दो तरह से किया जाना चाहिए, एक भाषा के रुप में, जिसकी स्थिति बिल्कुल वही है, जो अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की है, और उससे अलग, एक अखिल भारतीय भाषा के रूप में, सरकारी या किसी और अर्थ में। एक क्षेत्रीय भाषा के रुप में आप हिन्दी को वह समृद्धि प्रदान करना चाहते हैं, जो एक क्षेत्रीय भाषा की होनी चाहिए। लेकिन यदि आप वैसी ही सम्पन्नता अखिल भाषा पर भी थोपना चाहें, तो आप दूसरे लोगों के लिए बहुत कठिन बना देंगे। दक्षिण का एक व्यक्ति, जिसने अखिल भारतीय भाषा सीख ली है, बड़ी सहजता से उसकी अधिक गहन जानकारी उपलब्ध कर सकता है, लेकिन पहली बात यह है कि उसे अपना सरकारी या दूसरा काम करने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए...

(भाषण, १९५४)

o o o

समाजवाद

मैं उस प्रकार के कट्टर समाजवाद का समर्थन नहीं करता, जिसमें सरकार सर्वशक्तिमान होती है और प्रायः सब कुछ उसकी इच्छा पर निर्भर करता है। मैं आर्थिक शक्ति का विकेन्द्रीकरण चाहता हूं। निःसन्देह हम लोहे और इस्पात और इसी प्रकार के बड़े उद्योगों का विकेन्द्रीकरण नहीं कर सकते, लेकिन अन्य छोटे-छोटे कारखाने रखे जा सकते हैं। जहां तक सम्भव हो उन्हें सहकारिता

के आधार पर रखा जाए, और उन पर सरकार का नियंत्रण रहे । इस विषय में मैं रुढ़िवादी बिल्कुल नहीं हूं । हमें व्यावहारिक अनुभव से सीखना और अपने तरीके से आगे बढ़ना है । समाजवाद के सम्बन्ध में मेरी धारणा यह है कि इसमें प्रत्येक व्यक्ति को उन्नति का समान अवसर प्राप्त होना चाहिए ।

(भाषण, १९५८)

० ० ०

पाश्चात्य सभ्यता

पाश्चात्य सभ्यता में आज कोई दोष है, जिनके परिणामस्वरुप वह द्वन्द और युद्ध से ग्रस्त हुई है । तथापि वह एक भव्य सभ्यता रही है । उसने विज्ञान और अभिनव शिल्प द्वारा पश्चिम के लोगों को उच्चतर जीवन-स्तर उपलब्ध कराया है, उसने भव्य साहित्य, महान संगीत और महान कला का निर्माण किया है ।

(भाषण, १९५५)

पाश्चात्य सभ्यता के पतन की बड़ी चर्चा की जाती है । जहां तक पश्चिम के वित्त-साम्राज्यवाद और पूंजीवादी व्यवस्था का सम्बंध है, यह बात सम्भवत: सही है । लेकिन, यूरोपीय सभ्यता में जो कुछ श्रेष्ठ है, वह बचा रहेगा । बहरहाल यह सही है, मैं समझता हूं, कि आज की (पूंजीवादी) सभ्यता समाप्त हो रही है, और उसकी राख से एक नई सभ्यता का निर्माण हो रहा है, जिसमें,

मैं आशा करता हूं, पूरब और पश्चिम के सर्वोत्तम तत्वों का समावेश होगा।

(लेख, १९३९)

भारत को पश्चिम से सीखना होगा, क्योंकि आधुनिक पश्चिम के पास सिखाने को बहुत कुछ है, और युग की धारा का प्रतिनिधित्व पश्चिम द्वारा हो रहा है। लेकिन पश्चिम को भी, ज़ाहिर है, बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है। अभिनव शिल्प में उसकी प्रगति उसके लिए सुख-शांति की वाहिका न बनेगी, यदि वह जीवन के उन गम्भीरतर रहस्यों से अवगत न हो, जिनमें सभी देशों और सभी युगों के चिंतकों ने अपना मन लगाया है।

('भारत की खोज')

० ० ०

सेंतालीस

पूस की रात

प्रेम चंद

हल्कू ने आकर स्त्री से कहा -- सहना आया है, लाओ, जो रुपये रखे हैं उसे दे दूं । किसी तरह गला तो छूटे ।

मुन्नी झाडू लगा रही थी । पीछे फिरकर बोली -- तीन ही तो रुपये हैं, दे दोगे तो कम्मल कहां से आवेगा ? माघ-पूस की रात हार में कैसे कटेगी । उसे कह दो, फसल पर रुपये दे देंगे । अभी नहीं ।

हल्कू एक क्षण अनिश्चित दशा में खडा रहा । पूस सिर पर आ गया, कम्मल के बिना हार में रात को वह किसी तरह नहीं सो सकता । मगर सहना मानेगा नहीं, घुडकियां जमावेगा, गालियां देगा । बला से जाडों में मरेंगे, बला तो सिर से टल जाएगी । यह सोचता हुआ वह अपना भारी-भरकम डील लिए (जो उसके नाम को झूठ सिद्ध करता था) स्त्री के समीप आ गया और खुशामद करके बोला -- ला दे दे, गला तो छूटे । कम्मल के लिए कोई दूसरा उपाय सोचूंगा ।

मुन्नी उसके पास से दूर हट गई और आंखें तरेरती हुई बोली --

कर चुके दूसरा उपाय। जरा सुनूं, कौन उपाय करोगे ? कोई खैरात दे देगा कम्मल ? न जाने कितनी बाकी है जो किसी तरह चुकाने ही नहीं आती। मैं कहती हूं, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते ? मर-मर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज़ आए। मैं रुपये न दूंगी--न दूंगी।

हल्कू उदास होकर बोला--तो क्या गाली आऊं ?

मुन्नी ने तड़पकर कहा-- गाली क्यों देगा, क्या उसका राज है।

मगर यह कहने के साथ ही[2] उसकी तनी हुई भौंहें ढीली पड़ गई। हल्कू ने उस वाक्य में जो कठोर सत्य था, वह मानो एक भीषण जन्तु की भांति उसे घूर रहा था।

उसने जाकर आले पर से रुपये निकाले और लाकर हल्कू के हाथ पर रख दिए। फिर बोली-- तुम छोड़ दो अबकी से खेती। मजूरी में सुख से एक रोटी खाने को तो मिलेगी। किसीकी धौंस तो न रहेगी। अच्छी खेती है[3]। मजूरी करके लाओ, वह भी उसीमें झोंक दो, उसपर से धौंस।

हल्कू ने रुपये लिए और इस तरह बाहर चला मानो अपना हृदय निकालकर देने जा रहा हो। उसने मजूरी से एक-एक पैसा काटकपटकर

तीन रुपये कम्मल के लिए जमा किए थे । वे आज निकले जा रहे थे[४]। एक-एक पग के साथ उसका मस्तक अपनी दीनता के भार से दबा जा रहा था ।

पूस की अंधेरी रात । आकाश पर तारे ठिठुरते हुए मालूम होते थे । हल्कू अपने खेत के किनारे ऊख के पत्तों की एक छतरी के नीचे बांस के खटोले पर अपनी पुरानी गादे की चादर ओदे पड़ा कांप रहा था । खाट के नीचे उसका संगी कुत्ता जबरा पेट में मुंह डाले सर्दी से कूं-कूं कर रहा था । दो में से एक को भी नींद न आती थी ।

हल्कू ने घुटनियों को गर्दन में चिपकाते हुए कहा-- क्यों जबरा, जाड़ा लगता है ? कहता तो था, घर में पुआल पर लेट रह तो यहां क्या लेने आए थे । अब खाओ ठण्ड, मैं क्या करुं । जानते थे, मैं यहां हलुआ-पूरी खाने आ रहा हूं, दौड़े-दौड़े आगे-आगे चले आए । अब रोओ नानी के नाम को ।

जबरा ने पड़े-पड़े दुम हिलाई और अपनी कूं-कूं को दीर्घ बनाता हुआ एक बार जम्हाई लेकर चुप हो गया । उसकी श्वान-बुद्धि ने शायद ताद लिया, स्वामी को मेरी कूं-कूं से नींद नहीं आ रही है ।

हल्कू ने हाथ निकालकर जबरा की ठण्डी पीठ सहलाते हुए कहा-- कल से मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठण्डे हो जाओगे । यह रांड पछुआ

न जाने कहां से बरफ लिए आ रही है । उठूं, फिर एक चिलम भरूं । किसी तरह रात तो कटे । आठ चिलम तो पी चुका यह खेती का मज़ा है । और एक-एक भागवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जादा जाए तो गर्मी से घबड़ाकर भागे । मोटे-मोटे गद्दे, लिहाफ, कम्मल । मजाल है, जादे का गुज़र हो जाए । तकदीर की खूबी है । मजूरी हम करें मज़ा दूसरे लूटें ।

हल्कू उठा और गड्ढे में से ज़रा-सी आग निकालकर चिलम भरी । जबरा भी उठ बैठा ।

हल्कू ने चिलम पीते हुए कहा -- पिएगा चिलम, जादा तो क्या जाता है, हां, ज़रा मन बहल जाता है ।

जबरा ने उसके मुंह की ओर प्रेम से छलकती हुई आंखों से देखा ।

हल्कू -- आज और जादा खा ले । कल से मैं यहां पुआल बिछा दूंगा। उसीमें घुसकर बैठना, तब जादा न लगेगा ।

जबरा ने अगले पंजे उसकी घुटनियों पर रख दिए और उसके मुंह के पास अपना मुंह ले गया । हल्कू को उसकी गर्म सांस लगी ।

चिलम पीकर हल्कू फिर लेटा और निश्चय करके लेटा कि चाहे कुछ हो अब की सो जाऊंगा, पर एक ही क्षण में उसके हृदय में कंपन होने लगा । कभी इस करवट लेटता, कभी उस करवट, पर जादा किसी पिशाच की भांति उसकी

छाती को दबाए हुए था ।

जब किसी तरह न रहा गया तो उसने जबरा को धीरे से उठाया और उसके सिर को थपथपाकर उसे अपनी गोद में सुला लिया । कुत्ते की देह से न जाने कैसी दुर्गन्ध आ रही थी , पर उसे अपनी गोद से चिमटाए हुए वह ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो इधर महीनों से उसे न मिला था । जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यहीं है , और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो कुत्ते के प्रति घृणा की गन्ध तक न थी । अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता । वह अपनी दीनता से आहत न था, जिसने आज उसे इस दशा को पहुंचा दिया । नहीं, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिए थे और उसका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था ।

सहसा जबरा ने किसी जानवर की आहट पाई । इस विशेष आत्मीयता ने उसमें एक नई स्फूर्ति पैदा कर दी थी, जो हवा के ठंडे झोंकों को तुच्छ समझती थी । वह झपटकर उठा और छतरी के बाहर आकर भूंकने लगा । हल्कू ने उसे कई बार चुमकारकर बुलाया , पर वह उसके पास न आया । हार में चारों तरफ दौड़-दौड़कर भूंकता रहा । एक क्षण के लिए आ भी जाता , तो तुरन्त ही फिर दौड़ता । कर्त्तव्य हृदय में अरमान की भांति उछल रहा था।

एक घण्टा और गुज़र गया । रात ने शीत को हवा से धधकाना शुरु किया । हल्कू उठ बैठा और दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर को उसमें छिपा लिया । फिर भी ठण्ड कम न हुई । ऐसा जान पड़ता था, सारा रक्त जम गया है, धमनियों में रक्त की जगह हिम बह रहा है । उसने झुककर आकाश की ओर देखा, अभी कितनी रात बाकी है । सप्तर्षि अभी आकाश में आधे भी नहीं चढ़े । ऊपर आ जाएंगे तब कहीं सबेरा होगा । अभी पहर से ऊपर रात है ।

हल्कू के खेत से कोई एक गोली के टप्पे पर आमों का एक बाग था। पतझड़ शुरु हो गई थी । बाग में पत्तियों का ढेर लगा हुआ था । हल्कू ने सोचा, चलकर पत्तियां बटोरूं और उन्हें जलाकर खूब तापूं । रात को कोई मुझे पत्तियां बटोरते देखे तो समझे कोई भूत है । कौन जाने कोई जानवर ही छिपा बैठा हो, मगर अब तो बैठे नहीं रहा जाता ।

उसने पास के अरहर के खेत में जाकर कई पौधे उखाड़ लिए और उनका एक झाड़ू बनाकर हाथ में सुलगता हुआ उपला लिए बगीचे की तरफ चला । जबरा ने उसे आते देखा, तो पास आया और दुम हिलाने लगा ।

हल्कू ने कहा -- अब तो नहीं रहा जाता जबरा । चलो, बगीचे में पत्तियां बटोरकर तापें । टांटे हो जाएंगे, तब फिर आकर सोएंगे अभी तो

रात बहुत है ।

जबरा ने कूँ-कूँ करके सहमति प्रकट की और आगे-आगे बगीचे की ओर चला ।

बगीचे में खूब अंधेरा छाया हुआ था और अन्धकार में निर्दय पवन पत्तियों को कुचलता हुआ चला जाता था । वृक्षों से ओस की बूंदें टप-टप नीचे टपक रही थीं ।

एकाएक एक झोंका मेंहदी के फूलों की खुशबू लिए हुए आया ।

हल्कू ने कहा -- कैसी अच्छी महक आई जबरु । तुम्हारी नाक में भी कुछ सुगन्ध आ रही है ?

जबरा को कहीं जमीन पर एक हड्डी पड़ी मिल गई थी । उसे निचोड़ रहा था ।

हल्कू ने आग ज़मीन पर रख दी और पत्तियां बटोरने लगा । ज़रा देर में पत्तियों का एक ढेर लग गया । हाथ ठिठुरे जाते थे । नंगे पांव गले जाते थे । और वह पत्तियों का पहाड़ खड़ा कर रहा था । इसी अलाव में वह ठण्ड को जलाकर भस्म कर देगा ।

थोड़ी देर में अलाव जल उठा । उसकी लौ ऊपरवाले वृक्ष की पत्तियों को छू-छूकर भागने लगीं । उस अस्थिर प्रकाश में बगीचे के विशाल वृक्ष ऐसे

मालूम होते थे मानो उस अथाह अंधकार को अपने सिरों पर संभाले हुए हों। अंधकार के उस अनन्त सागर में यह प्रकाश एक नौका के समान हिलता, मचलता हुआ जान पडता था।

हल्कू अलाव के सामने बैठा आग ताप रहा था। एक क्षण में उसने दोहर उतारकर बगल में दबा ली और दोनों पांव फैला दिए, मानो ठण्ड को ललकार रहा हो, तेरे जी में जो आए सो कर। ठंड की असीम शक्ति पर विजय पाकर वह विजय-गर्व को हृदय में छिपा न सकता था।

उसने जबरा से कहा-- क्यों जबरा, अब ठंड नहीं लग रही है ?

जबरा ने कूं-कूं करके मानो कहा-- अब क्या ठंड लगती ही रहेगी।

पहले से यह उपाय न सूझा, नहीं इतनी ठंड क्यों खाते।

जबरा ने पूंछ हिलाई।

अच्छा आओ इस आग को कूदकर पार करें। देखें, कौन निकल जाता है। मगर जल गए बच्चा, तो मैं दवा करूंगा।

जबरा ने इस अग्निराशि की ओर कातर नेत्रों से देखा।

मुन्नी से कल न कह देना नहीं तो लड़ाई करेगी।

यह कहता हुआ वह उछला और उस अलाव के ऊपर से साफ निकल गया। पैरों ज़रा लपटें लगीं, पर वह कोई बात न थी। जबरा आग के गिर्द घूमकर

उसके पास आ खड़ा हुआ ।

हल्कू ने कहा -- चलो चलो इसकी सही नहीं । ऊपर से कूदकर आओ वह फिर कूदा और अलाव के इस पार आ गया ।

° ° °

पत्तियां जल चुकी थीं । बगीचे में फिर अँधेरा छाया था । राख के नीचे कुछ-कुछ आग बाकी थी, जो हवा का झोंका आ जाने पर जाग उठती थी पर एक क्षण में फिर आँखें बन्द कर लेती थी ।

हल्कू ने फिर चादर ओढ़ ली और गर्म राख के पास बैठा एक गीत गुनगुनाने लगा । उसके बदन में गर्मी आ गई थी, पर ज्यों-ज्यों शीत बढ़ती जाती थी, उसे आलस्य दबाए लेता था ।

जबरा ज़ोर से भूँककर खेत की ओर भागा । हल्कू को ऐसा मालूम हुआ कि जानवरों का एक झुंड उसके खेत में आया है । शायद नीलगायों का झुंड था । उनके कूदने-दौड़ने की आवाज़ें साफ कान में आ रही थीं । फिर ऐसा मालूम हुआ कि वह खेत में चर रही हैं । उनके चरने की आवाज़ चर-चर सुनाई देने लगी ।

उसने दिल में कहा -- नहीं, जबरा के होते कोई जानवर खेत में नहीं आ सकता । नोच ही डाले । मुझे भ्रम हो रहा है । कहाँ ? अब तो

कुछ नहीं सुनाई देता। मुझे भी कैसा धोखा हुआ।

उसने ज़ोर से आवाज़ लगाई-- जबरा, जबरा।

जबरा भूँकता रहा। उसके पास न आया।

फिर खेत के चरे जाने की आहट मिली। अब वह अपने को धोखा न दे सका। उसे अपनी जगह से हिलना ज़हर लग रहा था। कैसा दंदाया हुआ बैठा था। इस जाड़े-पाले में खेत में जाना, जानवरों के पीछे दौड़ना असूझ जान पड़ा। वह अपनी जगह से न हिला।

उसने ज़ोर से आवाज़ लगाई-- होलि-होलि। होलि।।

जबरा फिर भूँक उठा। जानवर खेत चर रहे थे। फ़सल तैयार है। कैसी अच्छी खेती थी, पर ये दुष्ट जानवर उसका सर्वनाश किए डालते हैं।

हल्कू पक्का इरादा करके उठा और दो-तीन कदम चला, पर एकाएक हवा का ऐसा ठंडा, चुभनेवाला, बिच्छू के डंक का-सा झोंका लगा कि वह फिर बुझते हुए अलाव के पास आ बैठा और राख को कुरेदकर अपनी ठंडी देह को गर्माने लगा।

जबरा अपना गला फाड़े डालता था, नीलगायें खेत का सफाया किए डालती थीं और हल्कू गर्म राख के पास शांत बैठा हुआ था। अकर्मण्यता ने रस्सियों की भाँति उसे चारों तरफ से जकड़ रखा था।

वह उसी राख के पास गर्म ज़मीन पर चादर ओढ़कर सो गया।

सवेरे जब उसकी नींद खुली, तब चारों तरफ धूप फैल गई थी। और मुन्नी कह रही थी -- क्या आज सोते ही रहोगे? तुम यहाँ आकर रम गए और उधर सारा खेत चौपट हो गया।

हल्कू ने उठकर कहा -- क्या तू खेत से होकर आ रही है?

मुन्नी बोली -- हाँ, सारे खेत का सत्यानाश हो गया। भला ऐसा भी कोई सोता है। तुम्हारे यहाँ मड़ैया डालने से क्या हुआ?

हल्कू ने बहाना किया -- मैं मरते-मरते बचा, तुझे अपने खेत की पड़ी है। पेट में ऐसा दर्द हुआ कि मैं ही जानता हूँ।

दोनों फिर खेत की डांड पर आए। देखा सारा खेत रौंदा पड़ा हुआ है और जबरा मड़ैया के नीचे चित्त लेटा है मानो प्राण ही न हों।

दोनों खेत की दशा देख रहे थे। मुन्नी के मुख पर उदासी छाई थी। पर हल्कू प्रसन्न था।

मुन्नी ने चिंतित होकर कहा -- अब मजूरी करके मालगुजारी भरनी पड़ेगी।

हल्कू ने प्रसन्न मुख से कहा -- रात की ठंड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा।

* * *

एक

STRUCTURAL NOTES

1. बैठ जाना is an instance of a compound verb in which जाना occurs as an explicator, that is, the second verb which only serves to modify the meaning of the preceding main verb. Most explicators occur with the stem form (i.e. the uninflected form) of the first verb. Some, however, may occur exclusively with other forms of the main verb.

   There are five possible forms for the first verb in a compound verb: V, V-taa, V-aa, V-nee, and V-ee. Of these V is by far the most frequent. The choice in the case of others depends, by and large, on which explicator follows.

   It is not always possible to translate satisfactorily into English the meaning modifications introduced by these explicators. The explicator जाना, as in the above compound verb, has a completive connotation.

2. बैठ कर exemplifies the V + कर construction which has an adverbial function and can indicate either of the following two meanings depending on whether the verb is durative or completive.

   (durative) मैं बैठ कर आया, lit., I came sitting
   or, I sat all the way

(completive) मैं खा कर आया Having eaten, I came
or, I ate and then came

Thus, depending on the nature of the verb, the Hindi V + कर construction can be translated as 'V-ing' or 'Having V-en'. Depending on the context, the completive meaning may also imply 'as a result of' in which case V+कर may be translated as 'On V-ing'; for example, मालती का रोना सुन कर मैं उसके पास गया, , 'On hearing her cry, I went to Malti'.

3. भी and ही are emphatic particles which seek to emphasize the elements that they follow. भी indicates inclusion and can be translated as 'too', or 'also' (or 'either' in negative sentences); मेरा अखबार भी 'my newspaper, too'. ही indicates exclusion, e.g., तुम्हारा ही नौकर '(It was) your servant (and no one else)'.

दो

1. The Hindi V-aa construction partially matches the English V-ed construction to mean a single action in the past. The Hindi V-aa construction, however, does not imply hatitual action in the past that the English V-ed construction may.

Hindi V-aa + $\left\{\begin{matrix}\text{hai}\\ \text{thaa}\end{matrix}\right\}$ is equivalent to English $\left\{\begin{matrix}\text{has}\\ \text{had}\end{matrix}\right\}$ + V-en. However, there is no restriction in Hindi on a point (as opposed to period) of time adverbial occurring with a perfective construction.

कल हमने नाटक देखा था

*We had seen the play yesterday.

We saw the play yesterday.

तीन

1. कहो , चलूँ : (future) subjunctive forms of the verbs कहना, चलना for second and first persons respectively. तुम कहो is the deleted form of the conditional construction अगर तुम कहो . The different (future) subjunctive endings are: मैं V-ũũ, तुम V-oo, वह V-ee, and Plural nouns and pronouns V-ẽẽ.

The (future) subjunctive forms of a verb are generally used in conditional constructions (अगर तुम कहो तो मैं तुम्हारे साथ विदेश चलूँ), in the expression of probability (लड़के शायद क्लास में हों) or of desirability (मैं चाहता हूँ कि वो आये), and for permission--in which case they will occur only with first and third person subjects, and only in interrogative sentences (मैं अंदर आऊँ ? , लड़के घूमने जाएँ ?)

Conditional constructions can be formed with other tenses, too, e.g. अगर वह गया तो उसे बहुत मार पड़ेगी . But if the first part of a conditional has a subjunctive, then the second part also tends to take a subjunctive.

चार

1. A passive construction; the passive construction in Hindi takes the verb जाना as a passive marker and has the following active-passive correlation:

Active: $N_{subject}$ + V-ending + (Aux.)

Passive: $N_{subject}$ - से + V-aa + जा -ending +(Aux)

For example, मैं (मिठाई) खाता हूँ ।
मुझसे (मिठाई) खायी जाती है ।
मैंने (मिठाई) खायी (है)
मुझसे (मिठाई) खायी गयी (है)

Unlike English, sentences with intransitive verbs, too, can have passive forms in Hindi

मैं चलता हूँ ।
मुझसे चला जाता है

Passive constructions in Hindi are often used to express 'capability'.

2. सुना करना , a compound verb with the explicator करना (and the main verb सुनना). This explicator requires the form V-aa on the part of the main verb. The compound verb construction V-aa + करना has a 'frequentative' connotation.

3. चुकना , like सकना , is a modal and occurs with the uninflected form of the main verb. It has a 'completive' sense. चोर जा चुका था 'The thief had (already) left.

चार

4. Hindi constructions which semantically parallel the English 'V to V' in the sense of 'for the purpose of' (or, 'in order to') can take के लिये or को interchangeably. For example,

मैंने उसे जाने {के लिये} कहा
{को}

I asked him to go.

5. A compound verb with the construction 'V + पाना '. It expresses 'ability'. बजा पाना 'to be able to play'

6. सुनाता रहना , a compound verb with the explicator रहना . This explicator requires the form V-taa on the part of non-stative (main) verbs and V-aa on the part of stative (main) verbs, e.g., हंसता रहा but बैठा रहा . This compound verb can be translated as 'to continue to V'.

पाँच

1. In a noun phrase, the noun head can be modified, among other things, by a verb (or verb phrase) in participial form (Cf. English V-ing + N or V-en + N). Thus:

    (Perfective) V-aa (huaa) N दौड़ता (हुआ) घोड़ा
    (Imperfective) V-taa(huaa) N बैठी (हुई) लड़की

    As is apparent from the above examples, there is agreement, for number and gender, between the noun head and the modifying participle. Also, note that हुआ (or हुई , हुए) is optionally deletable.

छ

1. जाते ही is an instance of a participial construction in adverbial function and has the form (N- के) V-tee ही . It does not inflect for number and gender and occurs in a frozen oblique form. The logical subject of the participial construction takes के , the oblique form of the genetive post-position का .

This construction can best be translated as: $\left\{\begin{array}{l}\text{as soon as}\\ \text{no sooner than}\end{array}\right\}$ + (N + V-tense)

सात

1. See note 3 of lesson 4.

2. लगाने लगा, सोने लगा exemplify the compound verb V-nee लगना in which the explicator लगना requires the V-nee form in the preceding verb. The meaning of this compound verb is 'to begin to V'.

आठ

1. न जाने क्या exemplifies the construction ' न जाने + question word' which means 'No one knows (or, who knows!) + question word'. Thus, न जाने क्या / कब / कहाँ / क्यों etc. will mean 'No one knows (or, who knows!) what / when / where / why', etc.

2. हो जाना , a compound verb which means 'to become'.

नौ

1. See note 6 lesson 4.

2. iterative (or, distributive) use of geminates. Hindi is very fond of using such geminates in participial forms to indicate an action that stretches over a period of time. Adjectival and adverbial geminates are also quite frequent; e.g. सबको चार - चार रुपये दो 'give them four rupees

each', बड़े - बड़े आदमी भी धोखा खा जाते हैं 'Even great people (many of them) get cheated', मैं कभी - कभी उनके यहाँ चला जाता हूँ 'I go to his place sometimes (once in a while)'.

3. An example of the compound verb construction V-taa जाना which has the meaning 'to go on V-ing'.

4. A compound verb with the structure V-taa रहना . This particular verb with जाना as the first element has also the idiomatic meaning (generally in the past tense) 'to disappear' मेरा गुस्सा जाता रहा 'my anger disappeared'.

दस

1. See note 2 lesson 1. The durative V + कर construction implies simultaneous action and has the function of indicating manner. Note that durative V + कर constructions can very often be replaced, by a participial construction clearly in adverb of manner function. Thus, मैं बैठ कर आया = मैं बैठा हुआ आया; वह रोकर बोली = वह रोती हुई बोली; वह हँस कर बोला = वह हँसते हुए बोला . . Thus it may very often be possible to translate them by an adverb in English. वह हँस कर टाल जाता है 'He ignores it laughingly i.e., light-heartedly'.

ग्यारह

1. See note 5 lesson 4.

2. जाने दिया , a compound verb of the form V-nee + देना . It denotes 'permission' and can be translated as 'to let someone V'

बारह

1. A compound verb of the form V + पड़ना . It has a sense of vehemence and usually takes intransitive verbs.

2. A compound verb of the form V + रखना . It connotes 'concern'. It generally takes transitive verbs.

3. A compound verb of the form V + उठना . It indicates 'suddenness'.

4. A compound verb of the form V + जाना . It connotes 'completion'.

5. A compound verb of the form V + डालना and, like V + पड़ना , implies vehemence. However, it usually takes a transitive verb and has an overtone of 'deliberateness'.

6. V + लेना / देना have a benefactive sense, but whereas V + लेना implies something done for the subject of the verb. V + देना implies something done for someone else. These verbs may also have a further implication of 'completion'.

इंडिया गेट

1. बड़े - बड़े See note 2 lesson 9. Such geminates in adjectives may also have an intensive sense.

धोबी और गधा

1. A post-positional phrase in which the nominal is not a noun but a verbal noun (in the infinitive form).
   न is a short form of नहीं

2. In habitual past constructions (V-taa था) such as चरता रहता था, ले आता था, , it is optionally possible to delete था

लड़ाई छिड़ी

1. उसके खाने के बाद , a post positional construction in which the nominal is a verb in the infinitive form. The subjects of such nominalized verbs (i.e. verbs used as nouns) occur in genitive construction (i.e. subject noun/pronoun + के , the oblique form of का . Cf. English 'His driving; John's drinking', etc.)

2. Time nouns such as दिन, महीना, घंटा, साल, etc. in post-positional phrases (which function as time adverbials) are generally not pluralized. Thus चालीस दिन तक rather than चालीस दिनों तक

   In case the time noun is modified by कुछ , either the singular or the plural form can be used. Thus कुछ ही दिन में as well as कुछ ही दिनों में

3. See note 2 lesson 9; adverbial use of a geminate participial 'lying there (for some time); as he lay there'.

4. Most adverbs in Hindi are post-positional phrases of the type 'with ease' (easily), 'in a nice way' (nicely), etc. in English. The post-position most frequently used in this kind of construction is से .

गौरैया और बंदर

1. किसी , the oblique singular form of कोई which implies an indefinite or unidentified thing or person; e.g. किसी जंगल में 'in a/some forest', किसी औरत को 'to a/some woman'.

   However, as a pronoun (that is, when used without a noun following it), it always refers to a human being; e.g. मैंने किसी को देखा 'I saw someone'.

2. The intransitive form of देखना

3. देने चलना , a compound verb of the form V-nee चलना which means 'to start out to V'

4. क्रोधित , a participial adjective with the ending -त . Such adjectives very often have related nouns, e.g. क्रोधित 'angry' क्रोध 'anger'. दुखित 'sad', दुख 'sorrow'

क्रोधित होना is a conjunct verb of the form Adj. + होना / करना 'to be angry/ to make (someone) angry'.

आत्मकी और नैकता

1. कहीं . . . . न. . This construction has the general meaning of apprehension or unpleasant possibility. It occurs with only two tense paradigms, the contingent future (see Kellogg, p. 233) or the (future) subjunctive. Thus

contingent future: कहीं वो रोता न हो
कहीं वो बीमार न हो
(Future) Subjunctive: कहीं वो गिर न जाए

In these constructions, न operates as a scope marker for the meaning of apprehension and thereby serves to identify the element about which apprehension is expressed, by immediately following it. For example,

कही वो बीमार न हो
I hope he is not ill.
कहीं वो न बीमार हो
I hope he is not ill.
देखिये, कहीं वो गिर न जाए
Watch out, lest he should fall.
देखिये, कहीं वो न गिर जाए
Watch out, lest he should fall.

In its construction with subjunctive verb forms, कहीं . . . न shows a marked preference for compound verbs. न occurs after the main verb and the apprehension expressed is about the action of the main verb; for example:

कहीं वो खा न ले
कही वो गिर न जाए
कहीं वो मार न डाले

However, it is possible for non-compound verbs to occur for this usage, but then the structure is कहीं V नहीं (and not) as in कहीं वो खाये नहीं, कहीं वो गिरे नहीं .

It is possible for कहीं to occur optionally in conditional constructions involving verbs in the (future) subjunctive; for example,

अगर वो आयें
अगर कहीं वो आयें

Some occurrences of कहीं . . . . न may really be negative counterparts of such subjunctive conditional constructions:

अगर वो नहीं आयें
अगर कही वो नहीं आयें
अगर कहीं वो न आयें

In the above case, कहीं . . . . न is simply an optional form of (कहीं) . . . . नहीं occurring in a negative conditional construction. Note that, unlike the constructions with कहीं . . . . न indicating apprehension, compound verbs are not possible in the above constructions.

2. अपने बिना सोचे-समझे किये हुए काम पर . . 'on her thoughtless deed' (literally, 'on her unthinkingly done deed'). This sequence exemplifies a modifier + noun head + post-position construction in which the modifier is a verb in the participial form with all its sub-modifiers.

ब्राह्मण और तीन ठग

1. हथियाना a verb derived from the noun हाथ 'hand'. हथियाना 'to obtain' with a slightly pejorative connotation.

जातक कथाओं से

1. करायें , imperative use of the subjunctive for polite suggestion

पहला सपना

1. दिखाई , noun derived from the verb देखना .
दिखाई देना 'to be visible; to appear'

तीसरा सपना

1. बहुत समय बाद , a variant form of बहुत समय के बाद
In constructions with the post-position के बाद involving time nouns, के can optionally be dropped. It is, however, possible to read a marginal distinction in

meaning, such as, तीन महीने बाद '(immediately) after the completion of a three month period'. तीन महीने के बाद '(any time) after three months from now'.

राष्ट्रपति भवन

1. न , question tag seeking confirmation, 'Isn't that so?'. Sometimes, it has a solicitous overtone.

जामा मस्जिद

1. दिखाते हैं , here 'I will show...' The V-taa हैं construction can be used to indicate intention of performing an act in the immediate future. It is one of the subsidiary uses of this verbal construction in Hindi and, in this respect, is different from the English V-es construction.

कुतब मीनार

1. with nouns of direction, में can be optionally dropped.
   यह दिल्ली से ११ मील दक्षिण है ।

2. के मतानुसार , a kind of phrasal post-position; literally, 'according to the opinion/thinking of'.

सर विलियम जोन्स

1. This is an adjunct to the noun Sir William Jones, and could optionally precede it.

2. A rather archaic use of the second person pronoun to refer to a person mentioned earlier in the context.

3. न . . . . न , negative correlatives in Hindi paralleling English 'neither .... nor'. As in English, they can accept sentences as well as various parts of speech in their construction; for example

न स्त्री, न संतति	(nouns)
न अच्छा, न बुरा	(adjectives)
न वह हंसा, न वह रोया	(sentences)

कुछ पत्र

एक

1. The verbal agreement for number and gender generally follows the following scheme in case it has two disparate subjects joined by और

Subj		Verb
Msg + Fsg	→	Mpl
Fsg + Msg	→	Mpl
Mpl + Fpl	→	Fpl
Fpl + Mpl	→	Mpl
Msg + Fpl	→	Fpl
Fsg + Mpl	→	Mpl

That is, the general tendency is for the verb to agree with the plural subject closest to it. (In the case of a plural noun and a singular noun joined by और , the preferred order is Sg + Pl.) With singular subjects of different genders (in any order), the verb is always masculine plural.

The scheme followed in the case of coordination with या is:

Msg या Fsg	→	Fsg.
Fsg या Msg	→	Msg
Mpl या Fpl	→	Fpl
Fpl या Mpl	→	Mpl

Hindi does not have a prescribed order for personal pronouns in a coordinate construction.

पत्र दो

1. सोना ही सोना 'gold and gold alone; gold and nothing else'. It exemplifies the construction N ही N and has

an intensive meaning; पानी ही पानी 'water and nothing else'. This construction is possible with other parts of speech, too e.g. बैठे ही बैठे, literally, 'while sitting and doing nothing (else)', that is, 'without any effort or action on one's part'; देखते ही देखते 'while one just looked on and did (or could do) nothing else'.

पत्र तीन

1. पूरे का पूरा, an intensive construction X का X which implies 'without any change or exception'. It can take almost any part of speech; for example, गधा का गधा रहा ('continued to be an ass'), वहीं का वहीं, ऊपर का ऊपर, नीचे का नीचे ।

   While nouns, adjectives etc. are simply repeated after का, relatives take their correlative counterparts, for example, जहाँ का तहाँ ('just where it was'), ज्यों का त्यों ('just as it was')

संध्या कोष

1. कि, a conjunction used to introduce a subordinate (noun) clause (Cf. English 'that' as in 'He said that....', 'He felt that....').

इकतालीस

1. See note 1 lesson 20; subjunctive form is used to indicate polite request. In fact, this verbal construction is triply polite. It is a (i) subjunctive form of the (ii) passive construction of a (iii) compound verb with the explicator देना . The explicator देना , as explained in note 6 of lesson 12, has a benefactive sense and in imperative construction implies request for a favor, and Passive constructions of imperatives are more polite than their active counterparts. All this has been rendered in the subjunctive which makes this construction extremely polite and solicitious.

2. असाई - कसाई 'a butcher and the likes of him'. It is an instance of a jingle word in Hindi which are quite numerous in Hindi. They generally means 'X and other things of the same kind'. Thus, with nouns, चाय - वाय, खाना - वाना, with adjectives, लाल - वाल, हरा - वरा, ; with adverbs, कल - वल , परसों - वरसों ,etc.

हार की जीत

1. के , an invariable form of का used in place of को generally in constructions denoting characteristics or ownership, and sometimes in dative constructions.

2. चाल न देखी तो क्या देखा exemplifies the construction X न V-aa तो क्या V-aa and means 'if one has not seen its gait, then one really has not seen anything (i.e., has not really appreciated its true nature or value)'. This meaning is applicable mostly when the verb is in the (past) perfective form, though other verbal forms are marginally possible, too. अगर हिन्दुस्तान में रह कर आम न खाये तो क्या खाया 'if you did not eat mangoes while in India, then you did not eat the thing really worth eating'.

प्रायश्चित

1. ठहरी , (past) perfective feminine form of the verb ठहरना used here in its idiomatic sense 'was/is after all'. It is only the (past) perfective form of this verb which has this meaning and can denote either the present or the past tense depending on the context.

2. और क्या . . . . पेट में , a clause in which the main verb is deleted but can be inferred from the context. Such stylistic deletions for effect are possible in the second of the coordinated clauses in a sentence.

3. हाँ, और क्या ? , a popular expression for indicating support to a previous statement; literally, 'that's right, what else?'

महात्मा गांधी के भाषण

1. भाइयो और बहनो , the vocative case forms of भाइयों और बहनों. The vocative case forms of singular nouns are their corresponding oblique case forms. Those of plural nouns are their corresponding oblique forms without nasalization. Quite a few speakers of Hindi, however, do not use a vocative plural form separate from the oblique plural form.

2. आ, बचा , imperative forms compatible with the second person singular (non-polite) pronoun तू . This pronoun is used relatively infrequently. It may, however, be used for very close relatives, children and also for God. Its use otherwise is considered rather insulting.

3. बैठो , imperative form compatible with the second person pronoun तुम . Some Indian speakers of Hindi (usually non-native) use this form with आप , too, as done here.

4. गया तो गया लेकिन . . . . exemplifies the construction V-ending तो V-ending $\left\{\begin{array}{l}\text{लेकिन}\\ \text{मगर}\\ \text{पर}\end{array}\right\}$ and has

a general meaning '(Bad as it may be,) it does not really matter that some one V-ending, considering....'. Such a construction almost always implies some higher justification or compensation for being subjected to something essentially unpleasant. Here, '(Sad as it is) it does not really matter that they did die because they died bravely'.

मेरी वसीयत

1. छोटे से छोटा 'even the smallest'. This exemplifies an adjectival phrase Adj से Adj. implying 'to the maximum degree in regard to that Adjective'; for example मूर्ख से मूर्ख 'absolutely the most stupid'.

2. गंगा की गंगा रहना 'to continue to be the Ganges and nothing different'. Constructions like N_1 का N_1 रहना or Adj_1 का $Adj._1$ रहना implies lack of change; for example, वह भोंदू के भोंदू (ही) रहे 'he remained as stupid as he was'.

पूस की रात

1. मानेगा नहीं , transposition of the negative element in a verb phrase for emphasis. The usual construction will be नहीं मानेगा .

2. कहने के साथ ही 'as soon as she said this; while saying this'. It is an adverbial construction V-nee के साथ ही 'along with V-ing"

3. अच्छी खेती है ! 'some farming!'' The construction " अच्छा N है ! " with exclamatory intonation is used to indicate disapproval.

4. निकले जा रहे थे It represents the verbal construction V-aa जा रहा $\left\{\begin{matrix}\text{है}\\ \text{या}\end{matrix}\right\}$ meaning 'in the process of V-ing'; for example, मेरा दिल बैठा जा रहा है 'my heart is (in the process of) sinking'.

5. तब कहीं 'only then', an adverbial construction in which कहीं emphasizes तब